पाठ-1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से—

1. हर प्राणी स्वभाव से स्वतंत्रता-प्रिय है । सारी सुख-सुविधाओं से पूर्ण होने पर भी परतंत्रता स्वतंत्रता का स्थान नहीं ले सकती। पिंजरे में बंद करके मनुष्य पक्षी की स्वतंत्रता छीन लेता है। उसकी मुक्त उड़ान की इच्छा को रोक देता है। यही कारण है कि पक्षी सभी सुख-सुविधाएँ पाकर भी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते ।
2. पक्षी चाहते हैं कि वे नीले आकाश की सीमा तक उड़ते चले जाएँ और तारारूपी अनार के दानों को चुगें । वे चाहते हैं कि धरती और आकाश की मिलन-रेखा तक होड़ लगाकर उड़ें। या तो क्षितिज तक पहुँच जाएँ या फिर उनकी साँसें ही थम जाएँ। पक्षी चाहते हैं कि भले ही उनको घोंसलों और डालियों से वंचित कर दिया जाए लेकिन उनकी मुक्त उड़ान में बाधा न डाली जाए।
3. पक्षी चाहते हैं कि वे सीमाहीन क्षितिज तक उड़ान भरने को स्वतंत्र हों। इसके लिए वे अपने प्राणों की बाजी लगाने को भी तैयार हैं। यद्यपि क्षितिज कोई वास्तविक स्थल या सीमा नहीं है, वह आगे ही आगे बढ़ता चला जाता है लेकिन क्षितिज को छूने की अभिलाषा जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य को पाने की चाह की प्रतीक है। ऐसी चाह केवल स्वतंत्र व्यक्ति ही कर सकता है पराधीन नहीं।

कविता से आगे—

1. **(क)** बड़ी से बड़ी सुख-सुविधाएँ भी आजादी का विकल्प नहीं हो सकतीं। उड़ना पक्षियों के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। पिंजरों में बंद करके हम उन्हें उड़ान से वंचित कर देते हैं। अत: पक्षियों को पालने का यह ढंग उचित नहीं। यह उन पर अत्याचार है।

   (ख) मैंने अपने पड़ोस में एक सज्जन को कबूतर पालते हुए देखा है। उन्होंने घर के आँगन में कबूतरों के रहने के लिए दड़बे (घोंसले) बना रखे हैं। वह सुबह-शाम उनको आकाश में उड़ाते हैं। उन्होंने छत पर एक ऊँचा मचान या छतरी बना रखी है जिस पर कबूतर बैठते हैं। वह दो बार कबूतरों को दाना खिलाते हैं।
2. पक्षियों को पालने वाले लोग उन्हें प्राय: पिंजरों में बंद करके रखते हैं। अपने मनोरंजन की खातिर ये लोग पक्षियों को उनकी स्वाधीनता से वंचित कर देते हैं। वे उनके लिए सुंदर और मूल्यवान पिंजरा बनवाते हैं । उनको स्वादिष्ट पदार्थ खाने को देते हैं। यह भूल जाते हैं कि कोई भी सुख-सुविधा आजादी का स्थान नहीं ले सकती। इस प्रकार पिंजरा पक्षी की स्वतंत्रता का हरण कर लेता है। इसके साथ ही पक्षियों को बंदी बनाकर रखने से पर्यावरण पर भी कुप्रभाव पड़ता है। प्रकृति के संतुलन-चक्र में हर प्राणी का अपना स्थान और महत्व है। उसमें मनुष्य का हस्तक्षेप संतुलन को अस्थिर करता है।

अनुमान और कल्पना—

1. अब इस बात में कोई संदेह नहीं रहा है कि मनुष्य की वर्तमान जीवन-शैली और शहरीकरण की योजनाओं ने पक्षियों को बहुत हानि पहुँचाई है। घरेलू पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ मानवीय गतिविधियों के कारण लुप्त होने के कगार पर पहुँच गई हैं, अनेक तो लुप्त भी हो गई हैं। शहरीकरण की दौड़ तथा सड़क आदि बनाने में वृक्षों का निर्दयता से विनाश किया गया है। पक्षियों को दाना डालने का रिवाज खत्म हो गया है। ये सभी बातें पक्षियों की शत्रु बन गई हैं।

   वाद-विवाद—पक्ष में - आज मनुष्यों की बदलती जीवन-शैली में पक्षियों के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। उनका घरों में प्रवेश बंद कर दिया गया है । गौरैया, पडुखी, कबूतर, गलगल आदि घरों में प्राय: दिखाई पड़ने वाले पक्षी गायब हो गए हैं । खेतों और पेड़-पौधों में रासायनिक खादों के प्रयोग से भी पक्षियों का विनाश हुआ है । पक्षियों के न रहने पर अनेक समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं । इससे प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन

गड़बड़ा जाएगा । पक्षी अनेक हानिकारक कीट-पतंगों को खाते हैं और हमारे स्वास्थ्य तथा फसलों की सुरक्षा में योगदान करते हैं । पक्षी प्रकृति के अभिन्न अंग हैं । उनकी मधुर बोली, क्रीड़ाएँ और उड़ान मनोरंजन के निःशुल्क साधन हैं । अतः हमें पक्षियों के प्रति मित्रभाव रखना चाहिए। उनके निवास और भोजन में सहयोग करना चाहिए ।

विपक्ष में—मनुष्य और पक्षी प्रकृति में आदिकाल से रहते आ रहे हैं । जब मनुष्यों की जीवन-शैली प्रकृति पर आश्रित थी तब भी अनेक पक्षी प्रजातियाँ लुप्त होती रहीं । अतः पक्षियों के जीवन पर मानव की वर्तमान जीवन-शैली का प्रभाव बहुत सीमित रूप में ही पड़ता है । प्राणी जगत का नियम है कि शक्तिशाली या अनुकूलतम ही जीवित रहता है। अतः पक्षी और मनुष्य में जो प्रकृति और पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेगा वही जीवित रहेगा । मनुष्यों और पक्षियों दोनों के लिए प्रकृति में पर्याप्त स्थान है । अतः मनुष्य अपने विकास और प्रगति को क्यों रोके ? शहरीकरण में यह ध्यान रखा जाय कि पर्याप्त मात्रा में हरियाली और पेड़-पौधे भी रहें ताकि पक्षी अपने घोंसले बना सकें ।

2. घरेलू पक्षी प्रायः घरों के अंदर घोंसला बना लेते हैं । धीरे-धीरे उनसे सहमति और स्नेहभाव उत्पन्न हो जाता है । यदि मेरे घर में किसी पक्षी ने आवास बनाया है और मुझे उस घर को छोड़ना पड़ता है तो मैं चाहूँगा कि मेरे जाने के बाद उसे किसी प्रकार का कष्ट न हो । यदि संभव हुआ तो मैं पक्षियों को अपने साथ ही दूसरे घर में ले जाऊँगा। मैं ऐसा प्रबंध करूँगा कि पक्षियों को बंद घर से बाहर जाने और आने में सुविधा रहे । यदि उस घर में कोई अन्य परिवार आकर रहेगा तो मैं उनसे अनुरोध करूँगा कि वे उन पक्षियों के प्रति सहनशीलता और स्नेह का भाव रखें । उनको घर से बाहर न निकालें ।

भाषा की बात—

1. (1) <u>उन्मुक्त</u> गगन (2) <u>कटुक</u> निबौरी (3) <u>नीले</u> नभ।
2. (1) छिन्न-भिन्न = छिन्न और भिन्न (2) दिन-रात = दिन और रात (3) नर-नारी = नर और नारी (4) पशु-पक्षी = पशु और पक्षी (5) अन्न-जल = अन्न और जल (6) सीताराम = सीता और राम (7) बड़े-बूढ़े = बड़े और बूढ़े (8) ऊँचा-नीचा = ऊँचा और नीचा (9) राजा-रानी = राजा और रानी (10) शूर-वीर = शूर और वीर ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1.(ग),2.(घ),3.(घ),4.(घ),5.(ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. सोने के पिंजरे में लगी सोने की शलाकाएँ जो पक्षी को बाहर आने से रोकती हैं, कनक-तीलियाँ कहलाती हैं ।
2. पिंजरे में बंद रहने पर उनको न तो बहता हुआ जल मिलेगा न वृक्षों के ताजा फल मिलेंगे जो उन्हें बहुत पसंद हैं।
3. पिंजरों में बंद पक्षी वृक्षों की टहनियों पर झूलने के सपने ही देखते रहते हैं ।
4. अपनी चोंच लाल किरण के समान बता रहे हैं ।
5. पक्षी क्षितिज तक नहीं पहुँच सकते क्योंकि क्षितिज कोई वास्तविक वस्तु नहीं केवल दृष्टि का भ्रम मात्र है।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. पक्षियों को पिंजरों में बंद करके उनकी आजादी छीन ली गई है । अब वे आकाश में मनचाही उड़ान नहीं भर सकते । बहता जल नहीं पी सकते । पिंजरों बंद रहकर वे अपनी स्वाभाविक जिंदगी नहीं जी सकते । वृक्षों की टहनियों पर झूलना, नीले आकाश में दूर तक उड़ते चले जाना, ये सभी बातें उनके लिए अब सपना हो गई हैं ।
2. पक्षियों को पालने वाले लोग उनके लिए सुन्दर और मूल्यवान पिंजरे बनवाते हैं । उनको सोने-चाँदी के बर्तनों में स्वादिष्ट भोजन खिलाते हैं । शिकारी पशु-पक्षियों से उनकी रक्षा करते हैं। उनको गर्मी-सर्दी से बचाने का प्रबन्ध करते हैं।
3. पक्षियों को स्वतंत्र-जीवन प्रिय है। वे किसी भी बंधन में नहीं रहना चाहते। बहते जल से

प्यास बुझाना । कड़वी निबौरियाँ खाना। मुक्त आकाश में मनचाही उड़ान भरना। यही जीवन उन्हें प्रिय लगता है । इसका कारण यही है कि हर प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है । स्वाधीनता से बढ़कर कोई सुख नहीं हो सकता।

4. इस कविता के द्वारा कवि ने पिंजरे में बंद पक्षियों की मनोभावनाओं को प्रकट किया है । पक्षी कभी नहीं चाहते कि उन्हें पिंजरों में बंद करके रखा जाय । भले ही पिंजरा सोने का बना हो । पिंजरों में बंद रहकर वे प्रसन्नता से गा नहीं सकते । पिंजरे से बाहर निकलने को व्याकुल होकर वे पंख फड़फड़ाएँगे तो उनके पंख टूट जाएँगे ।
पक्षी बहती जलधाराओं का जल पीने वाले हैं। सोने की कटोरी में मैदा के बने पकवानों को खाने की जगह उन्हें नीम की कड़वी निबौरियाँ अच्छी लगती हैं । सोने का पिंजरा उन्हें सोने की जंजीर की तरह लगता है।
पक्षियों की इच्छा है कि वे खुले आकाश में मनचाही उड़ान भरें । उनको परतंत्रता में मिलने वाली सुख-सुविधाएँ नहीं चाहिए । चाहे उनको घोंसलों और वृक्षों की टहनियों से भी वंचित कर दिया जाय लेकिन उनकी उड़ान पर कोई बंधन न लगाया जाय ।

5. इस कविता में कवि ने पक्षियों की भावनाओं और इच्छाओं के द्वारा हमें परतंत्रता से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरणा दी है । अपना स्वाभिमान खोकर दूसरों की अधीनता में जीना मनुष्य को शोभा नहीं देता । परतंत्र जीवन में चाहे कितनी भी सुख-सुविधाएँ क्यों न मिलें सब तुच्छ हैं । स्वतंत्र जीवन में चाहे कितने ही कष्ट क्यों न भोगने पड़ें वे परतंत्रता के सुखों से कहीं श्रेष्ठ हैं ।
परतंत्र व्यक्ति को अपने स्वामी की इच्छा के अनुसार रहना पड़ता है । उसकी सारी इच्छाएँ घुट-घुटकर मर जाती हैं । जब पशु-पक्षी भी बंधन में पड़कर रहना नहीं चाहते तो फिर मनुष्य के पराधीन होकर जीने को धिक्कार है।
कविता देशवासियों को स्वतंत्रता का संदेश देती है । पराधीनता से मुक्त होने की प्रेरणा देती है ।

**

पाठ-2 हिमालय की बेटियाँ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

लेख से–

1. नागार्जुन नदियों को माता मानने के साथ-साथ उन्हें बेटियों, प्रेमिकाओं और बहनों के रूप में भी देखते हैं।
2. सिन्धु और ब्रह्मपुत्र हिमालय से निकलने वाले दो **महानद** हैं । इनका नाम सुनते ही रावी, चिनाब, झेलम, सतलुज, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक आदि नदियों का स्मरण हो आना स्वाभाविक है । लेखक ने इन दोनों को हिमालय के हृदय से निकली करुणा की धाराएँ कहा है । दोनों को हिमालय की बेटियाँ बताते हुए लेखक ने समुद्र को इनका सौभाग्यशाली पति माना है ।
3. काका कालेलकर की नदियों के प्रति श्रद्धा-भावना थी । नदियाँ अपने जल से इस देश की प्रजा का माता के समान ही स्नेह से पालन करती आ रही हैं । प्यास बुझाने के साथ ही ये खेतों की सिंचाई करके जनता को अन्नदान भी करती हैं । अन्य अनेक रूपों में भी नदियाँ हमारे जीवन को सुखी बनाती हैं । अत: कालेलकर का उन्हें माता बताना सर्वथा उचित है ।
4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने नदियों की सबसे अधिक प्रशंसा की है । इनमें भी सिंधु और ब्रह्मपुत्र का विशेष उल्लेख किया है । इसके साथ-साथ उसने हिमालय की एक दयालु पिता और पर्वतराज कहकर तथा समुद्र को हिमालय की बेटियों का सौभाग्यशाली पति बताकर प्रशंसा की है ।

लेख से आगे –

नोट – प्रश्न 1 परीक्षोपयोगी नहीं है ।

2. गोपालसिंह नेपाली की कविता 'हिमालय

और हम', रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' तथा जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमालय के आँगन में' पढ़ी और इनकी आपस में तुलना की। हिमालय से संबंधित उपर्युक्त प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ हिमालय का प्रकृति से जुड़ाव और उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं की ओर संकेत करती हैं। हिमालय का मानवीकरण करके उसकी उपयोगिता को समझाया गया है। मेरी दृष्टि में लेखक ने बिलकुल सही कहा है जिस प्रकार पिता पुत्रियों को जन्म देता है और वे पिता की गोद में खेलती हैं। ठीक उसी तरह नदियों का उद्‌भव भी हिमालय से हुआ है। ऐसी दशा में वे हिमालय की बेटियाँ ही तो हुईं। हम भी उन्हें हिमालय की बेटियाँ ही कहना चाहेंगे।

3. विगत वर्षों में नदियों के स्वरूप में अनेक बदलाव आए हैं । उस समय प्राय: सभी नदियों का जल स्वच्छ और पीने योग्य था । लेकिन इस बीच अधिकांश नदियों का जल प्रदूषित हो गया है । नगरों की गंदगी और कारखानों के हानिकारक तत्वों के मिलते रहने से नदियाँ गंदा नाला बन गई हैं ।
4. भारतीय पुराण ग्रन्थों में हिमालय को देवभूमि तथा देवताओं का निवास स्थल माना गया है। इसीलिए कालिदास ने हिमालय को 'देवात्मा' कहा है ।

अनुमान और कल्पना–

1. वर्तमान समय में नदियों की सुरक्षा एवं उन्हें पर्यावरण प्रदूषण से बचाने के लिए सरकारों द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं जिनमें 'नमामि गंगे' नामक एक परियोजना भी सम्मिलित है। आम जनता भी अब नदियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हेतु जागरूक हो गई है। मेरे विचार में नदियों की सुरक्षा एवं संरक्षा हर हाल में होनी चाहिए।
2. **नदियों से लाभ**–नदियाँ प्रकृति का एक अभिन्न अंग हैं। रेगिस्तानों को छोड़कर विश्व का शायद ही कोई ऐसा भाग होगा जिसमें नदी न हो । नदियाँ प्राय: पर्वतों से या विशालकाय झील आदि जलाशयों से निकलती हैं । अनेक प्रदेशों से बहती हुई ये अंत में किसी अन्य नदी या समुद्र में जा मिलती हैं ।

नदियों से मनुष्यों को अनेक लाभ हैं । पर्वतों में ये तीव्र प्रवाह के कारण जल विद्युत बनाने, चक्कियाँ चलाने में सहायता करती हैं । पर्वतों से नीचे तराई प्रदेश में जंगलों को घना और हरा-भरा बनाती हैं । मैदान में आने पर इनकी गति मंद और गहराई बढ़ जाती है । इनसे पशु, पक्षी, मनुष्य सभी की प्यास बुझाने के लिए जल मिलता है।

नदियों से नहरें निकालकर खेतों की सिंचाई की जाती है । अनेक उद्योगों में नदियों का जल काम में आता है । नदी के समीप होने से नगरों और गाँवों में भूमि के अंदर जल का स्तर ठीक बना रहता है । हमारे देश में नदी किनारे बसे नगरों का महत्व प्राचीन समय से रहा है । हमारे अनेक तीर्थस्थल नदियों के तट पर स्थित हैं ।

हमारे देश में कई नदियाँ ऐसी हैं जिनके द्वारा व्यापार होता है। नावों और छोटे जलयानों द्वारा यात्रियों और माल का आवागमन होता है । इस प्रकार नदियों के अनेक लाभ हैं ।

भाषा की बात–

1. 1. लाल किरण-सी चोंच खोल।
   2. मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं ।
   3. टहनी-टहनी में कंदुक सम झूले कदंब ।
   4. घुटनों पर पड़ी है नदी चादर सी ।
   5. इन्द्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को।
2. (1) इनका उछलना और कूदना, खिलखिला कर लगातार हँसते जाना ।
   (2) कहाँ ये (नदियाँ) भागी जा रही हैं ?
   (3) बुड्‌ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा ?
   (4) हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में।
3.

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
संभ्रांत	महिला	चंचल	नदियाँ
समतल	आँगन	घना	जंगल
मूसलाधार	वर्षा		

4. (1) गंगा-यमुना (2) दुबली-पतली
   (3) माँ-बाप।

5. (1) धारा-राधा (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
(2) रस - सर (जातिवाचक संज्ञा)
(3) कपट-टपक (भाववाचक संज्ञा)
(4) सदा-दास (जातिवाचक संज्ञा)
(5) नाच - चना (जातिवाचक संज्ञा)।

6. सतलुज - शतद्रुम रोपड़ - रूपपुर
झेलम - वितस्ता चिनाब - विपाशा
अजमेर - अजयमेरु बनारस - वाराणसी

7. (1) वह शायद ही मेरी मजबूरी को समझ सके ।
अन्य रूप—वह शायद मेरी मजबूरी को नहीं समझ सके ।
(2) उसका घर लौटकर आना शायद ही सम्भव है ।
अन्य रूप—उसका घर लौटकर आना शायद सम्भव नहीं है।
(3) वह शायद ही अपना अपराध स्वीकार करेगा ।
अन्य रूप—वह शायद अपना अपराध स्वीकार नहीं करेगा।

दूसरे प्रकार के वाक्य—

(1) किसे नहीं पता कि वह एक कुशल गायक है?
अन्य रूप—सभी को पता है कि वह एक कुशल गायक है।

(2) कौन नहीं मानता कि ईश्वर सर्वव्यापक है ?
अन्य रूप—सभी मानते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है ।

(3) भारतीयों की प्रतिभा का लोहा कौन नहीं मानता?
अन्य रूप— भारतीयों की प्रतिभा का लोहा सभी मानते हैं ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. लेखक माँ और दादी तथा मौसी और मामी की गोद की भावना करके नदियों की धारा में डुबकी लगाता था ।
2. लेखक हिमालय में नदियों के दुबले, पतले रूप को देखकर हैरान हो जाता था । यह नदियाँ मैदानों में विशाल रूप हो जाती थीं।
3. मैदानों में जाकर नदियों का उछलना-कूदना, खिलखिलाकर हँसना, उनके चंचल हाव-भाव तथा उत्साह गायब हो जाते हैं ।
4. लेखक ने बरफ, नंगी पहाड़ियों, पौधों से भरी घाटियों, सुन्दर पठारों और हरी-भरी तराइयों को नदियों का लीला निकेतन बताया है ।
5. लेखक ने सिंधु और ब्रह्मपुत्र को हिमालय के दयालु हृदय की एक-एक बूँद का संचय माना है, जो न जाने कब से इकट्ठा होकर समुद्र की ओर बह रही हैं ।

लघूत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

1. मैदानों में बहती नदियाँ लेखक को बड़ी गंभीर, शांत और अपने आप में खोई हुई संभ्रांत महिलाओं के समान प्रतीत होती थीं। उनके प्रति लेखक के मन में आदर और श्रद्धा की भावना थी । उनके जल में डुबकियाँ लगाना उसे माँ और दादी तथा मौसी और मामी की गोद में बैठने जैसा लगता था ।
2. हिमालय में पहुँचने पर लेखक ने नदियों को अन्य ही रूप में देखा । मैदानों में गंभीर और शांत संभ्रांत महिला जैसी लगने वाली नदियाँ हिमालय में दुबली-पतली, उछलती-कूदती, खिलखिलाती बालिकाओं जैसी लगीं । उनके इस रूप को देखकर लेखक चकित हो गया।
3. हिमालय में ये नदियाँ बरफ, नंगी पहाड़ियों, पौधों से भरी घाटियों, पठारों, तराई प्रदेशों में प्रवाहित हो रही हैं । आगे चलने पर ये वृक्षों से भरे जंगलों में होकर बहती हैं ।
4. लेखक कहता है कि सिंधु और ब्रह्मपुत्र के साथ हिमालय से निकलने वाली अनेक नदियों का ध्यान आ जाता है । रावी, सतलुज, व्यास, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक आदि सभी हिमालय की बेटियाँ जैसी हैं । सिंधु और ब्रह्मपुत्र तो हिमालय के द्रवित हुए हृदय की सदियों से इकट्ठा हुई बूँदें हैं । लेखक समुद्र को पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का पति बताता है।
5. इस पाठ में नदियों को कई मानवी रूपों में देखा गया है । काका कालेलकर नदियों को लोकमाता मानते हैं । कवि कालिदास ने

उन्हें प्रेयसी माना है तथा स्वयं लेखक उन्हें बेटी और बहन के रूप में देखता है ।

6. लेखक ने इस पाठ में नदियों के स्वरूप और व्यवहार का भावना प्रधान शैली में परिचय कराया है । मैदानी क्षेत्रों में ये नदियाँ बड़ी गंभीर, शांत और अपने आप में खोई-सी लगती हैं । उनका स्वरूप एक संभ्रांत महिला जैसा होता है । नदियों के इस स्वरूप को देखकर उनमें माता जैसी श्रद्धा उत्पन्न होती है ।

हिमालय प्रदेश में जाने पर ये ही नदियाँ कुछ और स्वरूप में दिखाई पड़ती हैं । ये दुबली-पतली, उछलती-कूदतीं, खिलखिलाकर हँसतीं और उत्साह से प्रवाहित होती चंचल बालिकाओं जैसी प्रतीत होती हैं। ऐसा लगता है कि ये नदियाँ हिमालय की स्नेहमयी गोद से निकलकर भागी जा रही हैं । बरफ, नंगी पहाड़ियों, घाटियों, पठारों और तराई क्षेत्र में होकर बहती हुई ये वृक्षों से भरे जंगलों में जा पहुँचती हैं । ये आपस में मिलती हुई अंत में समुद्र में जा मिलती हैं । लेखक ने उनका माता, बेटी, बहन और प्रेयसी के रूप में वर्णन किया है ।

**

पाठ-3 कठपुतली

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से–

1. कठपुतली के अंग-अंग में पराधीनता के धागे बँधे हुए थे जिनका संचालन पराये हाथों में था । वह अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकती थी । अपनी ऐसी दयनीय दशा देखकर कठपुतली को गुस्सा आ गया ।
2. कठपुतली स्वतंत्र होना चाहती है । वह स्वावलम्बी बनना चाहती है लेकिन स्वतंत्रता के साथ आने वाली जिम्मेदारी और अपनी क्षमता के बारे में सोचकर वह झिझकती है । अपने पैरों पर खड़े होने का तात्पर्य है– आत्मनिर्भर होना । किसी की सहायता की अपेक्षा न करना । कठपुतली बिना दूसरे की सहायता के हिल-डुल भी नहीं सकती ।
3. पहली कठपुतली ने पराधीनता के बंधनों से मुक्त होकर अपने बल पर जीने की इच्छा व्यक्त की थी । दूसरी कठपुतलियाँ भी पराधीनता का कष्ट भोग रही थीं । वे अपने मन की इच्छा के अनुसार जीवन नहीं बिता पा रही थीं। इसलिए पहली कठपुतली की बात उनको अच्छी लगी।
4. दूसरी कठपुतलियों द्वारा भी स्वतंत्र होने की इच्छा प्रकट किए जाने पर पहली कठपुतली सोच में पड़ गई । शायद वह सोचने लगी कि क्या वह दूसरी कठपुतलियों की जिम्मेदारी उठा पाएगी? स्वतन्त्र रहना तो हर व्यक्ति चाहता है, लेकिन जब पहली कठपुतली पर सबकी स्वतन्त्रता की जिम्मेदारी आती है तो वह इतनी बड़ी और बिल्कुल नयी जिम्मेदारी उठाने से डर जाती है । इसलिये वह सोचती है कि यह कैसी इच्छा मेरे मन में जगी ?

कविता से आगे–

1. इस पंक्ति का अर्थ यही है कि हमें मनचाहे ढंग से जीने का अर्थात् स्वतंत्र जीवन बिताने का अवसर नहीं मिला।
2. सन् 1857 के दो स्वतंत्रता-सेनानी–
   (1) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (2) ताँत्या टोपे।
   सन् 1942 के दो स्वतंत्रता सेनानी–
   (1) महात्मा गांधी (2) सुभाषचन्द्र बोस

अनुमान और कल्पना–

काठ की पुतलियों द्वारा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया जाना एक रोचक कल्पना हो सकती है । संभव है कि उन्होंने अपना एक संगठन बनाया हो और सत्याग्रह का सहारा लिया हो । सारी कठपुतलियों ने धागों के संकेत पर संचालित होने से इन्कार कर दिया हो और नचाने वालों को उन्हें स्वतंत्र कर देना पड़ा हो । फिर से पराधीनता के बंधन में न पड़ जाएँ, इस भय से कठपुतलियाँ भाग निकली हों और कहीं दूर अपनी बस्ती बसाई हो ।

भाषा की बात —

1. हथफूल, हथकंडा, हथगोला, सोनजुही, सोन मक्खी, सोन परी, मटमैला, मटका, मटमूरत।
2. पतला-दुबला, उधर-इधर, नीचे-ऊपर, बाएँ-दाएँ, काला-गोरा, पीला-लाल ।
   अन्य जोड़े—उलटा-सीधा = सीधा-उलटा, देर-सबेर = सबेर-देर, सदी-गर्मी = गर्मी-सर्दी ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. उसने कहा कि उसे आगे-पीछे से बाँधने वाले धागों को तोड़ दिया जाय और उसे अपने पैरों पर खड़े होने को छोड़ दिया जाय ।
2. अन्य कठपुतलियों ने पहली कठपुतली की बात का समर्थन किया और कहा कि उन्हें मनचाहा जीवन न जी पाते हुए बहुत समय बीत गया है ।
3. उसमें आत्मविश्वास की कमी थी । अत: वह आगे कदम बढ़ाने में हिचक रही थी ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. संसार का हर जीव स्वतंत्र रहना चाहता है । किसी और के इशारे एवं इच्छा पर जीवन बिताना अपमानजनक लगता है । कठपुतली तो एक काठ की बनी निर्जीव पुतली है । मगर उसे भी बंधन में रहना स्वीकार नहीं । वह भी स्वतंत्र होना चाहती है । अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। लेकिन स्वतंत्र होने के लिए स्वावलंबी होना बहुत आवश्यक है। क्या वह अपने पैरों पर खड़ी हो पाएगी ? क्या वह स्वतंत्र होने पर आने वाली चुनौतियों का सामना कर पाएगी ? ये सारी शंकाएँ उसको चिंतित कर देती हैं ।
2. दूसरी कठपुतलियों ने पहली कठपुतली का समर्थन किया और यह भी कहा कि वे अपना मनभाया जीवन जीना चाहती हैं । यह सुनकर पहली कठपुतली सोचने लगी कि क्या स्वतंत्र होने की इच्छा प्रकट करके उसने ठीक किया है ? क्या वह अन्य कठपुतलियों की स्वतंत्रता और स्वावलम्बन की जिम्मेदारी निभा सकेगी? वह स्वयं स्वावलम्बी और स्वतंत्र कैसे हो पाएगी ? इन सारी बातों के ध्यान में आने पर उसका उत्साह ठंडा पड़ गया ।
3. कठपुतलियाँ लकड़ी की बनी निर्जीव मूर्तियाँ हैं । उनका जीवन दूसरों पर आश्रित है । उनका उठना-बैठना, चलना-फिरना सब कुछ उन धागों पर आधारित है जो कठपुतली को पराधीनता के बंधन लगते हैं । एक निर्जीव पुतली में अपनी बुद्धि और भावना कैसे हो सकती है । वह आजादी और पराधीनता का भेद कैसे समझ सकती है ? लेखक ने कठपुतलियों को केवल एक प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है ।
   कठपुतलियों के द्वारा कवि उन लोगों को स्वतंत्रता और स्वावलंबन का संदेश देना चाहता है जो अपना स्वाभिमान भूलकर दूसरों के इशारों पर नाचते हैं । जब एक कठपुतली भी परतंत्रता के बंधनों से आजाद होने के लिए विद्रोह कर सकती है तो फिर बुद्धि, विवेक और भावनाओं से युक्त मनुष्य का पराधीन होकर जीना बड़ी लज्जा की बात है । इस प्रकार कवि ने हमें स्वाधीनता और स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दिया है ।

**

पाठ-4 मिठाईवाला

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कहानी से—

1. मिठाईवाला कोई पेशेवर फेरीवाला नहीं था । वह तो मन के संतोष के लिए वस्तुएँ बेचता था । बच्चों को प्रसन्न करने के लिए वह अलग-अलग चीजें बेचा करता था। इस काम से उसे बच्चों का साथ मिलता था । उनसे बातें करने और उन्हें खुश देखने में उसे बड़ा सुख मिलता था । वह निरंतर दूर-दूर घूमते हुए चीजें बेचता था । इसलिए वह महीनों बाद दोबारा आता था ।

2. मिठाईवाला फेरी लगाते समय बड़े मधुर स्वर और लय में आवाज लगाता था । वह बच्चों से बड़े प्यार से बातें करता था । वह सामान बड़े सस्ते भाव में बेचता था । यही कारण था कि बच्चे और बड़े सभी उसकी ओर खिंचे चले आते थे ।
3. विक्रेता और ग्राहक के बीच मोल-भाव होना एक स्वाभाविक परंपरा है । विजय बाबू ने मुरलीवाले से भाव पूछा । उसने सीधा उत्तर न देकर कहा कि वैसे तो वह तीन-तीन पैसे में बेच रहा है लेकिन उनको दो पैसे में दे देगा। विजय बाबू ने इसे विक्रेताओं की चतुराई की आदत मानकर उससे कहा कि विक्रेताओं को झूठ बोलने की आदत होती है । ग्राहक पर अहसान जताने को भाव कम करने का नाटक करते हैं । इससे मुरलीवाले को धक्का-सा लगा और उसने कहा कि ग्राहकों को यही लगता है दुकानदार उन्हें लूट रहा है। इस प्रकार तर्क-वितर्क के बाद दो-दो पैसे में दोनों पक्ष राजी हो गए ।
4. खिलौनेवाले की आवाज सुनते ही बच्चों पर जादू-सा हो जाता था । वे गलियों और बगीचों में खेलना छोड़कर खिलौनेवाले की ओर दौड़ पड़ते थे और उसे झुंड में घेरकर खिलौने माँगने लगते थे । अपनी तोतली बोली में खिलौनों का मोल-भाव करते थे । खिलौने पाकर वे प्रसन्नता से उछलने-कूदने लगते थे।
5. खिलौनेवाला महीनों तक गायब रहा । फिर एक दिन एक मुरलीवाले ने आकर आवाज लगाई - 'बच्चों को बहलाने वाला, मुरलियावाला' । मुरलीवाले का स्वर सुनते ही रोहिणी को खिलौनेवाले की याद आ गई। वह भी इसी तरह मधुर आवाज में खिलौने बेचा करता था । दोनों का स्वर और लहजा एक जैसा था ।
6. रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। उसने बताया कि वह पहले खिलौने और मुरली लेकर आ चुका था। उसने रोहिणी के पूछने पर बताया कि उन व्यवसायों में उसे नाममात्र का लाभ होता है । कभी नहीं भी होता । केवल बच्चों के साथ मन बहलाने को वह वस्तुएँ बेचता फिरता है ।
7. रोहिणी ने ही पहली बार उससे सहानुभूति जताई थी और उसकी दुखद कहानी सुनी थी। अत: उसके बच्चों के प्रति खिलौनेवाले के मन में प्यार उमड़ उठा । इसीलिए उसने उनसे मिठाई के पैसे नहीं लिए ।
8. आजकल किसी विरले ही घर की औरतें चिक के पीछे से बातें करती हैं । अब प्राय: स्त्रियाँ खुले में आकर बातें करती हैं । बाजार से सामान खरीद कर लाती हैं । चिक के पीछे से बातें करना परदा-प्रथा का ही एक रूप है। आजकल ग्रामीण या पिछड़े तबके की स्त्रियाँ ही परदा करती हैं । परदा स्त्रियों के लिए बहुत असुविधाजनक और अविश्वास का प्रतीक है ।

कहानी से आगे—

नोट – प्रश्न 1 व 3 परीक्षोपयोगी नहीं हैं ।

2. हाटों, मेलों, शादियों में अनेक प्रकार की वस्तुएँ सामने आती हैं । दैनिक उपयोग की चीजों के अतिरिक्त कपड़ों, खाने-पीने की वस्तुओं तथा शृंगार आदि के सामान की दुकानें सजाई जाती हैं । मुझे खाने-पीने की वस्तुएँ सबसे अधिक आकर्षित करती हैं । शादियों में भी मैं मिठाइयों पर ही ध्यान देता हूँ । इन वस्तुओं को बनाने और सजाने में दुकानदारों और कारीगरों का हाथ होता है ।

अनुमान और कल्पना—

नोट – प्रश्न 1 व 2 परीक्षोपयोगी नहीं हैं।

3. यह सच है कि समय के साथ फेरी के स्वरों में काफी कमी आई है । इसके अनेक कारण हो सकते हैं । पहला कारण तो लोगों की रुचियाँ बदलना है । मध्यम और उच्च वर्ग के लोग फेरीवालों से वस्तुएँ खरीदना अच्छा नहीं समझते । बाजार में ढेरों आकर्षक और उपयोगी वस्तुएँ आ गई हैं । पैसा बढ़ना भी इसका एक कारण है । शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, महँगाई, प्रतियोगिता बढ़ जाना आदि अन्य कारण हैं ।

भाषा की बात—

1. **(क)** 'मिठाईवाला' में 'मिठाई' जातिवाचक संज्ञा है तथा 'बोलनेवाली गुड़िया' में 'बोलनेवाली' विशेषण है ।

(ख) ऊपर लिखे वाक्यांशों में उनका प्रयोग संज्ञा और कुर्त्ता बनाने के रूप में है ।

नोट – प्रश्न 2 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

3. ''लगता है, वे भी पार्क में खेलने चले गए हैं।''

''भैया, यह मुरली कितने की है?''

''दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा मिठाईवाले को कमरे में बुलवाओ।''

कुछ करने को –

नोट – प्रश्न 1, 2 व 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. खिलौनेवाले की आवाज में विचित्रता, मादकता और मधुरता होती थी । उसका स्वर सुनने वालों को बेचैन कर देता था ।
2. रोहिणी सोचने लगी कि खिलौनेवाला इतने सस्ते खिलौने कैसे दे गया ।
3. नागरिक ने बताया कि मुरलीवाले की आयु तीस-बत्तीस वर्ष के लगभग थी । वह दुबला-पतला गोरा युवक था । वह सिर पर बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता था ।
4. मुरलीवाले की आवाज सुनते ही बच्चे खेलना छोड़कर दौड़ पड़े । किसी की टोपी गिर गई। किसी का जूता पार्क में छूट गया, किसी का पाजामा ढीला होकर लटक आया । बच्चे मुरली लेने को शोर मचाने लगे ।
5. मुरलीवाला बड़े प्यार से बच्चों को मुरली बेचता था । सबको संतुष्ट कर देता था । यदि किसी बच्चे के पास पैसे नहीं होते तो उसे भी मुरली दे दिया करता था ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. जब खिलौनेवाला अपने प्यार में भीगे कंठ से आवाज लगाता था तो पास के मकानों में हलचल मच जाती थी । युवतियाँ छोटे बच्चों को गोद में लिए छज्जों से झाँकने लगती थीं। बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को घेर लेता था।
2. विजय बाबू ने मुरलीवाले से मुरली का दाम पूछा तो मुरलीवाले ने कहा कि वैसे तो एक मुरली तीन पैसे की है, पर वह उनको दो पैसे में दे देगा । यह सुनकर विजय बाबू ने कहा कि फेरी वालों की झूठ बोलने की आदत होती है । वह देता तो सभी को दो-दो पैसों में ही होगा लेकिन उन पर अहसान लाद रहा था । यह सुनकर मुरलीवाले ने कहा कि ग्राहकों का यह स्वभाव होता है कि वे सस्ता बेचने पर भी दुकानदार को लूटने वाला ही समझते हैं।
3. मुरलीवाला बच्चों से बड़ी प्यार भरी बातें कर रहा था। सभी बच्चों को उनकी पसंद की मुरली दे रहा था। उसकी बातें सुनकर रोहिणी सोचने लगी कि बच्चों से इतने प्यार से बातें करने वाला कोई फेरीवाला अब तक नहीं आया। यह सौदा भी बड़ा सस्ता बेचता है । भला आदमी लगता है ।
4. मुरलीवाले ने बताया कि वह भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित व धनी आदमी था । उसके पास मकान, व्यवसाय, घोड़ा-गाड़ी, नौकर-चाकर सब कुछ था । उसकी पत्नी बड़ी सुन्दर थी । उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे जो जीते-जागते सोने के खिलौने जैसे लगते थे । लेकिन समय का खेल है कि अब कोई भी नहीं है । अगर वह घर में पड़ा रहता तो घुल-घुलकर मर जाता । इस फेरी के धन्धे के बहाने वह अपने बच्चों को इन बच्चों में खोजता फिरता है । इन बच्चों में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है । पैसों की उसके पास कोई कमी नहीं है लेकिन जो उसके पास नहीं है उसे वह फेरी के धन्धे से पा लेता है ।

**

पाठ-5 पापा खो गए

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

नाटक से —

1. हमको नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ लगता है । उसी की तरकीब से लड़की को उठाकर लाने वाला डर कर भाग जाता है । वही लड़की को घर पहुँचाने के कई उपाय सुझाता है । सब उसी के सुझाव पर काम करते हैं ।
2. खंभा घमंडी स्वभाव का था । वह पेड़ से बात भी नहीं करता था । एक बार आँधी-पानी में खंभा उखड़कर गिरा तो पेड़ ने उसे सँभाला । इस घटना से खंभे का घमंड दूर हो गया और उन दोनों में दोस्ती हो गई ।
3. लैटरबॉक्स का रंग लाल था । वह बड़ों जैसी समझदारी की बातें करता था । इसलिए सब उसे लाल ताऊ कहकर पुकारा करते थे ।
4. लैटरबॉक्स अनेक बातों में अन्य पात्रों से भिन्न दिखाई देता है । उसका व्यक्तित्व घर के बड़े-बूढ़े के समान है । वह पढ़ना और गाना भी जानता है । उसे लड़की की सबसे अधिक चिन्ता रहती है । वह उसे बहलाता और धीरज बँधाता है । उसके बड़प्पन और गंभीर स्वभाव के कारण सब उसे लाल ताऊ कहकर पुकारते हैं ।
5. नाटक के सजीव पात्रों में एक कौआ है । बच्ची को बचाने में उसका महत्वपूर्ण योगदान है । जब बच्ची को उठाकर लाने वाला लौटकर आता है तो सब पात्र घबरा जाते हैं । किसी को बच्ची के बचाने का उपाय नहीं सूझता तब कौआ ही 'भूत-भूत' चिल्लाकर उस दुष्ट को डरा देता है और वह भाग जाता है । कौआ ही बच्ची को उसके घर पहुँचाने की तरकीबें सुझाता है । उसके संवाद, लैटरबॉक्स के साथ मजाक आदि मजेदार लगते हैं ।
6. लड़की बहुत छोटी थी । उसे अपने पिता का नाम भी पता नहीं था । लैटरबॉक्स ने उसके घर का पता जानने के लिए बहुत प्रयत्न किए लेकिन वह घर का सही पता नहीं बता सकी। इसी कारण सभी पात्र मिलकर भी उसे उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे।

नाटक से आगे —

1. **नोट** —प्रश्न 1 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।
2. इस नाटक की सबसे अधिक मार्मिक घटना लड़की को उसके पापा से अलग किया जाना है । लड़की के आने के बाद सभी पात्रों की चिंता लड़की को उसके पापा के पास पहुँचाना ही हो जाती है । नाटक का अंत भी दर्शकों से लड़की के पापा को मिलाने की अपील के साथ होता है । अत: इस नाटक का शीर्षक 'पापा खो गए' सर्वथा उपयुक्त है ।
3. नाटक के आधार पर तो नाटक में दिखाया गया बच्ची के पापा को खोजने का तरीका ही उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि नाटक के पात्र स्वयं कहीं जाकर बच्ची के पिता की खोज नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त हम बच्ची के पापा को खोजने के अन्य तरीके भी अपना सकते हैं। जैसे—लाउडस्पीकर द्वारा सूचना देना, अखबारों, दूरदर्शन पर प्रसारित करके, पुलिस में रिपोर्ट करके बच्ची को उसके पापा तक पहुँचा सकते हैं।

अनुमान और कल्पना —

1. नाटक में चोर ने बताया है कि वह बच्ची को एक घर से उठाकर लाया था । वह उस समय सो रही थी । चोर ने उसे बेहोशी की दवा दे दी थी । अत: अन्य कोई अनुमान लगाने की आवश्यकता ही नहीं है ।
2. उपाय बच्चों की आयु के आधार पर अलग-अलग हो सकते हैं । नाटक की बच्ची बहुत छोटी है वह अपने पापा का नाम तक नहीं जानती । इस आयु के बच्चे स्वयं कुछ अधिक नहीं कर सकते । माता-पिता उन्हें इतना सिखा सकते हैं कि वे अपरिचित व्यक्तियों से अधिक बात न करें, उनसे काई वस्तु न लें । किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा उठाने की कोशिश किए जाने पर घर के किसी व्यक्ति को पुकारें । अन्य उपाय —

— समझदार बच्चे माता-पिता से पूछे बिना किसी

व्यक्ति के साथ अकेले न जायें चाहे वह परिचित ही क्यों न हो।
- परिचित व्यक्ति से खाने-पीने की कोई वस्तु ग्रहण नकरें।
- विद्यालय से सीधे घर लौट कर आएँ ।
- किसी अपरिचित व्यक्ति के वाहन पर ले चलने की बात स्वीकार न करें।

भाषा की बात—

1. मंच पर रात का दृश्य दिखाने के लिए हम मंच पर बहुत कम प्रकाश कर देंगे । परदों की सहायता से नकली तारे और चंद्रमा दिखा सकते हैं । दूर से चौकीदार की आवाज सुनवा सकते हैं, जैसे- जागते रहो । मंच पर स्थित पात्रों से रात होने की बात कहलवा सकते हैं ।
2. मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी । अरे, बाप रे ! वो बिजली थी या आफ़त ! याद आते ही अब भी दिल धक-धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था, खंभे महाराज ! अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है। अंग थर-थर काँपने लगते हैं।
3. एक नमूने का संवाद दिया जा रहा है । शेष छात्र स्वयं लिखें ।

चॉक का ब्लैक बोर्ड से संवाद

ब्लैक बोर्ड—(चॉक से) कहो भई गोरे-चिट्टे! क्या हाल है?

चॉक—कहो भाई श्याम सलोने ! क्या हो रहा है ?

ब्लैक बोर्ड—होना क्या है । आज स्कूल की छुट्टी है । आज तुम्हारी घिस-घिस से पीछा छूटा है ।

चॉक—मेरी घिस-घिस से ही तुम्हारी पूछ हो रही है । वरना तुम्हारी कब की छुट्टी हो गई होती ।

ब्लैक बोर्ड—अरे! चुप भी रह! बित्ते भर की काया और हाथ भर की जबान! मैं नहीं होता तो तुझे कौन पूछता? डिब्बे में बंद पड़ा रहता।

चॉक—बस-बस ज्यादा न बोल । अपने लम्बे चौड़े, काले- कलूटे शरीर से सारी दीवार का रूप बिगाड़ रहा है । मेरे बिना पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती ।

ब्लैक बोर्ड—तेरे बिना ! अरे मेरे बिना विज्ञान और गणित समझ में ही नहीं आते ।

चॉक—(कुछ सोचकर) ठीक कहते हो भाई! हम दोनों को ही एक-दूसरे की जरूरत है ।

4. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (घ), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. बरसात की रातों में वह रातभर भीगता रहता था, तेज बौछारों की चोटें सहता था और तेज हवाओं में भी बल्ब को कसकर थामे हुए एक टाँग पर खड़ा रहता था ।
2. खंभे का तन-मन लोहे का था । इसीलिए उस पर किसी मौसम का असर नहीं होता था।
3. आरम्भ में खंभा पेड़ से बात तक नहीं करता था। एक दिन जोर की आँधी में खंभा पेड़ पर जा गिरा । पेड़ ने उसे सँभाल लिया और अपनी चोट की परवाह नहीं की । तभी से खंभे और पेड़ की दोस्ती हो गई ।
4. परीक्षित के पिता को लिखे हैडमास्टर के पत्र को पढ़कर लैटरबॉक्स को परीक्षित जैसे छात्रों पर बड़ा गुस्सा आया । यदि वह हैडमास्टर होता तो परीक्षित के होश ठिकाने लगा देता ।
5. लैटरबॉक्स ने कहा कि वह किसी की चिट्ठी अपने पास नहीं रख लेता है । किसी की गुप्त बातें भी वह अपने तक ही रखता है प्रकट नहीं होने देता । अब अगर वह दूसरों की दो-चार चिट्ठियाँ पढ़ भी लेता है तो क्या हो गया ?

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. एक वर्षा की रात में आकाश से गर्जन करती बिजली पेड़ पर आ गिरी थी। बिजली गिरने से वहाँ एक बड़ा गड्ढा हो गया था । अब जब कभी बारिश होती थी तो पेड़ को उस रात की वह भयंकर घटना याद आ जाती थी और उसका शरीर डर के मारे थर-थर काँपने लगता था । उसका दिल भी घबराहट से धक-धक करने लगता था ।

2. पेड़ जहाँ खड़ा था वहीं पर उसका जन्म हुआ था । उस समय वहाँ से कुछ दूरी पर ऊँचे-ऊँचे घर नहीं थे, न सड़क थी न सिनेमा का वह बड़ा पोस्टर था जिसमें नाचने वाली औरत बनी हुई थी । उस समय सामने केवल समुद्र था । उस समय पेड़ को बहुत अकेलापन महसूस होता था ।
3. लैटरबॉक्स ने जो पत्र पढ़ा वह हैडमास्टर द्वारा छात्र परीक्षित के पिता गोविंद राव को लिखा गया था । उसमें हैडमास्टर ने लिखा था कि उनका पुत्र परीक्षित पढ़ाई में बहुत कमजोर था । वह क्लास से गायब रहकर बंटे खेला करता था । हैडमास्टर ने परीक्षित के पिता से कहा था कि वह आकर उससे मिल लें ।
4. नाटक में लैटरबॉक्स लड़की के बारे में सबसे अधिक चिंतित दिखाई देता है । पहले वह उस दुष्ट व्यक्ति से लड़की को बचाने के बारे में चिंतित रहता है । वह अपनी बातों से लड़की की घबराहट दूर करता है । लड़की को उठाकर लाने वाले आदमी को डराकर भगाने में वह भी साथ देता है । जब लड़की छिप जाती है तो वह बड़ा निराश और दुखी हो जाता है । अत में वही दर्शकों से लड़की के पापा को खोज लाने का आग्रह करता है ।
5. कौए ने पेड़ से कहा कि सवेरा होने पर वह अपनी घनी छाया लड़की के ऊपर करता रहे। इससे लड़की आराम से देर तक सोती रहेगी । उसने खंभे से कहा कि वह जरा टेढ़ा होकर खड़ा रहे । इससे पुलिस को लगेगा कि वहाँ कोई दुर्घटना हुई है और पुलिस वहाँ आएगी । आने पर वह लड़की को देखेगी तो उसके घर का पता लगाएगी । पुलिस खोए हुए बच्चों को उनके घर तक पहुँचाती है । कौए ने कहा कि वह जोर-जोर से काँव-काँव करके लोगों का ध्यान इधर खींचेगा । उसने लैटरबॉक्स से 'पापा खो गए हैं' यह लिखा हुआ पोस्टर बनवाया और उसके द्वारा दर्शकों से आग्रह कराया कि वे लड़की के पापा को खोजने में मदद करें ।

**

पाठ-6 शाम-एक किसान

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से –

1. दूसरी एकरूपता सूरज और चिलम (सूरज की चिलम) में दिखाई गई है। चौथी एकरूपता पलाश के जंगल और अँगीठी (पलाश के जंगल की अंगीठी) में दिखाई गई है तथा पाँचवीं एकरूपता अंधकार और भेड़ों के गल्ले (भेड़ों के गल्ले सा) में दिखाई गई है ।
2. **(क)** शाम सूरज के पश्चिम क्षितिज पर पहुँचने पर शुरू हुई ।

   (ख) तब से लेकर सूरज डूबने में लगभग आधे घण्टे का समय लगा ।

   (ग) इस बीच आसमान में कई दृश्य बदले । सूरज के पश्चिम क्षितिज पर पहुँचते ही आकाश पीले-लाल प्रकाश से युक्त हो गया। पूर्व से पश्चिम की ओर जाते पक्षियों के समूह कलरव करते हुए दिखाई देने लगे । सूरज के डूबते ही पूर्व दिशा में हलका अँधेरा दिखाई देने लगा । धीरे-धीरे सारे आकाश में अंधकार छा गया ।
3. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।

कविता से आगे–

1. इस कविता को चित्रित करने के लिए नीले, काले, पीले, नारंगी, लाल और हरे आदि रंगों की आवश्यकता होगी ।
2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।
3. पंत जी की कविता और सर्वेश्वर दयाल जी की कविता में मुख्य अंतर यह है कि पंत जी ने शाम के दृश्य का स्वाभाविक या यथार्थ वर्णन किया है, जबकि सर्वेश्वर दयाल ने रूपक और उपमाओं के द्वारा वर्णन किया है।

अनुमान और कल्पना–

नोट–अध्यापक महोदय की सहायता से छात्र स्वयं करें।

भाषा की बात–

1. इन पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण शब्दों के साथ हो रहा है ।

चादर, गल्ले, परदा – संज्ञा शब्द ।
मरियल, छोटा, नन्हीं– विशेषण शब्द ।

2. **औंधी–** (1) कढ़ाई औंधी पड़ी हुई है ।
(2) कमल औंधी खोपड़ी का आदमी है ।
दहक–(1) हवा चलते ही आग दहक उठी।
(2) जादूगर दहक रहे कोयलों पर नंगे पैर चला ।
सिमटा–(1) वह कोने में सिमटा-सा खड़ा था ।
(2) कालीन उधर सिमटा हुआ है जरा सही कर दो ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (घ), 3. (क), 4. (ग), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने शाम को एक किसान का रूप दिया है।
2. कवि ने पहाड़ को एक साफा बाँधे बैठे किसान के रूप में चित्रित किया है।
3. कवि ने पूर्व में स्थित अंधकार को भेड़ों के समूह के समान बताया है।
4. सूरज को कवि ने एक दहकते अंगारों से युक्त चिलम के समान बताया है जिसे पहाड़रूपी किसान पी रहा है ।

लघूत्तरात्मक निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

1. उस शांत-एकांत वातावरण में मोर की बोली ऐसी लगी जैसे किसी ने कहा हो - 'सुनते हो' । लगा जैसे किसी ने किसान को पुकारा हो । किसान ने अपनी चिलम औंधी कर दी अर्थात् सूरज डूब गया । चारों ओर अंधकार छा गया ।
2. कवि ने एक सामान्य भारतीय किसान की वेश-भूषा और विश्राम के क्षणों में उसके क्रिया-कलाप को शाम के दृश्य में साकार किया है । पहाड़ एक किसान है । उसने सिर पर आकाश रूपी साफा बाँध रखा है । वह डूबते सूरज की लाल-लाल छवि रूपी चिलम से कश खींच रहा है । पास ही पलाश के जंगल में खिले लाल फूल एक दहकती अँगीठी के समान हैं जिससे वह ताप रहा है । उसके घुटनों पर नदीरूपी चादर पड़ी है ।
मोर बोलने के साथ ही किसान चौंक उठता है। वह चिलम को उलट देता है यानी सूरज डूब जाता है । उलटी गई चिलम में से धुआँ उठता है अर्थात् सूरज डूबने के साथ कुछ धुँधलका होता है और फिर अंधकार छा जाता है मानो चिलम बुझ जाती है ।

**

पाठ–7 अपूर्व अनुभव

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ से–

1. यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था । इसी कारण वह और बच्चों की तरह किसी पेड़ को अपनी संपत्ति नहीं मानता था । तोत्तो-चान को यासुकी-चान से इसी कारण सहानुभूति थी। इसीलिए उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने में पूरी मदद की।
2. दोनों बच्चों ने खतरा उठाते हुए कठिन प्रयत्न करके, अपने काम में सफलता पाई थी । अत: दोनों बहुत खुश थे । इस सफलता से दोनों को नए अनुभव प्राप्त हुए थे । तोत्तो-चान को अपनी योजना में सफल होने पर अपूर्व आनंद का अनुभव हो रहा था और यासुकी-चान ने पेड़ पर चढ़कर दुनिया की एक नई झलक देखी थी । पेड़ पर चढ़ना क्या होता है यह पहली बार उसकी समझ में आया था । तोत्तो-चान को अपने असमर्थ साथी की सहायता करने पर गर्व और संतोष का अनुभव हो रहा था ।
3. जब तोत्तो-चान ने यासुकी-चान से तिपाई सीढ़ी पर चढ़ने को कहा तो उस समय दोनों ही कड़कती धूप के पड़ने से पसीने में तरबतर हो रहे थे । जब तोत्तो-चान खतरा उठाकर उसे सीढ़ी से पेड़ पर खींच रही थी तब भी धूप पड़ रही थी लेकिन बादल का एक टुकड़ा उन पर छाया कर रहा था ।

इस बदलाव का कारण यही लगता है कि पहले तो प्रकृति उनके साहस और निश्चय की परीक्षा ले रही थी और उनको सफल होते देखकर स्वयं उनकी सहायता कर रही थी ।

4. 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था ।'
लेखिका ने ऐसा इसलिए लिखा होगा कि यासुकी-चान पहली बार पेड़ पर चढ़ा था और इसके बाद उसके लिए दोबारा पेड़ पर चढ़ने का कोई मौका नहीं मिलने वाला था क्योंकि वह स्वयं तो चढ़ नहीं सकता था और तोत्तो-चान दोबारा ऐसे मुश्किल और खतरनाक काम को करने को तैयार नहीं होती ।

पाठ से आगे—

1. मैं एक वैज्ञानिक बनकर नए-नए आविष्कार करना चाहता हूँ । यद्यपि यह काम आसान नहीं है लेकिन मैं तीव्र इच्छा और कठोर परिश्रम करके अपना लक्ष्य पाना चाहता हूँ।
2. पर्वतों की चोटियों पर चढ़ना एक कठिन और रोमांचकारी काम है । मैंने टी.वी. पर लोगों को पर्वतों पर चढ़ते देखा है । मैं भी एक बार किसी चोटी पर चढ़ने का अवसर पाना चाहता हूँ । इसके लिए मुझे किसी पर्वतारोहण की शिक्षा देने वाली संस्था में प्रवेश लेना होगा । कठिन परिश्रम करके मैं किसी पर्वतारोही दल के साथ जाकर इस अनुभव को प्राप्त कर सकता हूँ । यह कार्य बहुत रोमांचकारी होता है ।

अनुमान और कल्पना—

1. किसी प्रिय या सम्माननीय व्यक्ति के सामने झूठ बोलते समय आँखें मिलाकर बात करने की हिम्मत नहीं होती है । इसीलिए तोत्तो-चान की नजरें नीचे थीं ।
2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

भाषा की बात—

1. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
2. चिचियाना, लठियाना, बतियाना, थपथपाना।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ग), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. उनको यह बात पता न थी कि तोत्तो-चान यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाएगी ।
2. उसे पूरी शिष्टता से पूछना पड़ता था । "माफ कीजिए, क्या मैं ऊपर आ जाऊँ ?"
3. यासुकी-चान के उदास हो जाने का कारण यह था कि तोत्तो-चान के सहारा देने पर भी वह सीढ़ी पर नहीं चढ़ पाया ।
4. तोत्तो-चान दोबारा चौकीदार के छप्पर में गई और वहाँ से एक तिपाई-सीढ़ी घसीटकर ले आई ।
5. कठिन परिश्रम से यासुकी-चान सीढ़ी के ऊपर तक तो पहुँच गया लेकिन सीढ़ी से द्विशाखा पर जाने में सफल नहीं हुआ । यह कठिन समस्या सामने आ गई ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. स्कूल के बच्चों ने बाग के पेड़ों में से एक-एक पेड़ अपने चढ़ने के लिए सुरक्षित कर लिया था । उस पेड़ को वह अपनी निजी संपत्ति मानता था । दूसरे के पेड़ पर चढ़ने के लिए उससे अनुमति लेनी पड़ती थी।
2. यासुकी-चान को पोलियो की बीमारी हो गई थी । इस कारण उसके हाथ-पैर बहुत दुबले-पतले और कमजोर थे । उस पर दूर तक चला भी नहीं जाता था, क्योंकि वह पेड़ पर स्वयं नहीं चढ़ सकता था, इसलिए उसने किसी पेड़ को अपना निजी पेड़ नहीं बनाया था ।
3. तोत्तो-चान ने बड़े उपायों और परिश्रम से यासुकी-चान को सीढ़ी पर ऊपर तक तो चढ़ा दिया लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह सीढ़ी से पेड़ पर नहीं पहुँच पाया । तब तोत्तो-चान ने एक बहुत जोखिमपूर्ण उपाय अपनाया । वह द्विशाखा पर खड़ी हो गई और लेटे हुए यासुकी-चान को पेड़ पर खींचने लगी । इस उपाय में दोनों में से कोई भी नीचे गिर सकता था ।
4. यासुकी-चान ने बताया कि अमेरिका में उसकी बहिन रहती है । उसने बताया था कि वहाँ टेलीविजन नाम की एक चीज होती है । जब

टेलीविजन जापान में आ जाएगा तो वे घर बैठे सूमो पहलवानों की कुश्ती देख सकेंगे । उसकी बहिन ने बताया था कि टेलीविजन एक डिब्बे की तरह होता है ।

5. यासुकी-चान को पोलियो था अत: वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था । इसलिए तोत्तो-चान ने उसे अपने पेड़ पर चढ़ने का न्योता दिया । उसने यासुकी-चान को बाग में पहुँचने को कहा और स्वयं भी वहाँ पहुँच गई । वहाँ जाकर वह चौकीदार के छप्पर में से एक सीढ़ी निकालकर लाई और यासुकी-चान से उस पर चढ़ने को कहा लेकिन वह नहीं चढ़ पाया । तब वह फिर चौकीदार के छप्पर में गई और एक तिपाई-सीढ़ी घसीट लाई । उसने सहारा देकर यासुकी-चान को सीढ़ी के ऊपर तक चढ़ा दिया । जब वह सीढ़ी से पेड़ पर न जा सका तो उसने उसे लिटाकर पेड़ पर खींचा । इस प्रकार बड़ी कठिनाई से उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाया।

**

पाठ-8 रहीम के दोहे

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

दोहे से—

1. (1) कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। – कथन
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत । –उदाहरण
(3) कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान। – कथन
तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान । –उदाहरण
(4) थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात – कथन
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात। – उदाहरण
(5) जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह । – कथन
धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह । – उदाहरण

2. कवि द्वारा क्वार मास के बादलों को उन निर्धन लोगों के समान बताना सही है जो पहले धनवान थे । क्वार मास के बादल भी निर्धन होते हैं क्योंकि उनका जलरूपी धन समाप्त हो जाता है। जैसे धनी से निर्धन हो गया व्यक्ति अपने पिछले समय के बारे में बता-बताकर लोगों पर प्रभाव डालना चाहता है, उसी प्रकार क्वार मास के बादल भी गरज-गरजकर वर्षा-ऋतु में अपने जल बरसाने की याद कराते हैं, बरस नहीं सकते। सावन के गरजने और बरसने वाले बादल सच्चे दानी हैं। वे देने की बातें ही नहीं करते वरन् जलदान भी करते हैं ।

दोहों से आगे—

(क) इस दोहे में कवि ने जीवन में परोपकार के महत्व की ओर संकेत किया है । यदि लोग 'तरुवर' और 'सरवर' के समान परोपकार के लिए धन एकत्र करने लगें तो समाज के निर्बल और निर्धन लोगों का बहुत भला होगा।

(ख) धरती जैसा धैर्यवान और कोई नहीं है । वह ठंड, गर्मी और वर्षा को बिना कोई शिकायत किए सहन करती रहती है । यदि लोग इस गुण को धारण कर लें तो उनका जीवन दुख-रहित हो जाएगा ।

भाषा की बात—

1. **बिपति**-विपत्ति, **बादर** - बादल
मछरी - मछली, **सीत** - शीत।
2. (क) संपति सगे 'स' की आवृत्ति
(ख) मीनन को मोह 'म' की आवृत्ति
(ग) छाँड़ति छोह 'छ' की आवृत्ति
(घ) संपति सचहिं सुजान 'स' की आवृत्ति
(ङ) सो सहि रहै 'स' की आवृत्ति।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है कि सच्चा-मित्र विपत्ति के समय में साथ नहीं छोड़ता है, संकट में साथ देता है।

2. जब मछली जाल में फँस जाती है तो जल उसे छोड़ जाता है लेकिन मछली इतने पर भी उसके वियोग में प्राण त्याग देती है ।
3. वृक्ष और तालाब से हमें परोपकार की शिक्षा मिलती है । वृक्ष के फल और तालाब का जल दूसरों के ही काम आते हैं ।
4. क्वार मास के बादल बिना जल के आसमान में गरजते हुए उमड़ते-घुमड़ते हैं।
5. धरती ठंड, गर्मी और वर्षा सभी को धैर्यपूर्वक सहन करती रहती है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. क्वार मास आने पर बादलों का बरसना बंद हो जाता है वे जल-रहित प्रतीत होते हैं । वे केवल घुमड़ते और गरजते हैं, बरस नहीं सकते । इसी प्रकार धनवान जब निर्धन हो जाता है तो वह अपने पिछले किए गए दान और वैभव की बातें ही करता है । वह किसी की सहायता नहीं कर सकता ।
2. 'रहीम के दोहे' पाठ में कवि द्वारा प्रस्तुत विचार संक्षेप में इस प्रकार हैं– कवि कहता है कि जब किसी व्यक्ति के पास संपत्ति होती है तो बहुत से लोग उसके मित्र बन जाते हैं, लेकिन जो विपत्ति के समय साथ देते हैं वे ही सच्चे मित्र होते हैं । कवि कहता है कि मछली का जल से प्रेम आदर्श प्रेम का उदाहरण होता है । जाल में फँसने पर जल तो मछली का साथ छोड़ जाता है लेकिन मछली उसके वियोग को सहन नहीं कर पाती और प्राण त्याग देती है ।

   आगे कवि ने परोपकारी व्यक्तियों के स्वभाव की तुलना वृक्षों और तालाबों से की है जिनके फल और जल दूसरों के ही काम आते हैं । कवि धनी से निर्धन हो जाने वाले लोगों की तुलना गरजने वाले बादलों से करता है । अंतिम दोहे द्वारा कवि मनुष्यों को धरती के समान सहनशील बनने की प्रेरणा देता है ।

**

पाठ-9 एक तिनका

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से–

1. (क) एक दिन जब मुंडेर पर खड़ा था ।
   (ख) आँख भी लाल होकर दुखने लगी ।
   (ग) बेचारी ऐंठ दबे पाँवों भगी ।
   (घ) जब किसी ढब से तिनका निकल गया।
2. 'एक तिनका' कविता में कवि ने एक दिन की घटना का वर्णन किया है । वह मुंडेर के समीप खड़ा था । उसका मन घमंड और अकड़ से भरा था । अचानक एक तिनका उड़ता हुआ उसकी आँख में आ गिरा । इससे उसे बड़ी बेचैनी हुई । आँख लाल होकर दुखने लगी । जब तक तिनका निकल न गया उसे शांति नहीं मिली । तब उसे समझ आई कि वह बेकार अपने ऊपर घमंड कर रहा था । एक जरा-से तिनके ने उसे व्याकुल कर दिया ।
3. आँख में तिनका पड़ते ही वह बेचैन हो उठा। उसकी आँख लाल हो गई और दुखने लगी । लोगों ने कपड़े की मूँठ की सहायता से तिनका निकाला । उसकी सारी ऐंठ जरा-सी देर में गायब हो गई ।
4. घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए लोगों ने कपड़े की मूँठ से आँख की सिकाई की और अनेक यत्न करके तिनके को निकाला ।
5. इन दोनों पद्यांशों में मनुष्य को घमंड न करने की चेतावनी दी गई है । दोनों में तिनके का उदाहरण दिया गया है । अंतर यह है कि पहले अंश में तिनके की शक्ति बताई गई है और दूसरे में तिनके जैसी तुच्छ वस्तु की भी उपेक्षा न करने की चेतावनी दी गई है ।

अनुमान और कल्पना–

नोट–परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं ।

भाषा की बात–

(क) मेंढक पानी में छप से कूद गया ।
(ख) नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद

टप से चू गई।

(ग) शोर होते ही चिड़िया फुर्र से उड़ी ।

(घ) ठंडी हवा सन्न से गुजरी, मैं ठंड में थर्र से काँप गया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (घ), 2. (ग), 3. (ग), 4. (ग), 5. (ग)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि स्वभाव से घमंडी और अकड़ू था । अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझता था।
2. एक दिन जब वह मुँडेर पर ऐंठा हुआ खड़ा था, तभी उसकी आँख में एक तिनका गिर गया।
3. आँख में तिनका गिरने पर कवि को झटका-सा लगा। वह बड़ा बेचैन हो गया । उसकी आँख लाल होकर दुखने लगी । लोग कपड़े की मूँठ आदि देकर दर्द कम करने लगे और कवि की अकड़ गायब हो गई ।
4. कवि की समझ ने उसे ताना दिया कि वह बेकार इतना अकड़ता था । उसकी अकड़ निकालने के लिए तो एक छोटा-सा तिनका ही बहुत है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. कवि ने स्वयं को ही घमंडी कहा है । जब कवि अपने घर की मुंडेर के पास खड़ा था । कहीं से एक तिनका उड़ता हुआ आकर उसकी आँख में गिर गया । इससे वह बहुत बेचैन हो गया। उसकी आँख लाल हो गई और दुखने लगी । तब लोगों की सहायता से जैसे-तैसे तिनका निकला । इस प्रकार घमंडी का सारा घमंड एक जरा-से तिनके ने दूर कर दिया ।
2. घमंड करने से व्यक्ति को अनेक हानियाँ होती हैं– उसे सच्चा मित्र नहीं मिलता, लोग उसकी सहायता नहीं करते, उसे कोई भी पसंद नहीं करता। जबकि विनम्र व्यक्ति के अनेक मित्र होते हैं। सभी लोग उसे बहुत पसंद करते हैं। हर समय उसकी सहायता के लिए लोग तैयार रहते हैं।

**

पाठ-10 खानपान की बदलती तसवीर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबंध से–

1. खान-पान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का मतलब है एक प्रदेश के व्यंजनों का दूसरे प्रदेशों में प्रचलित होना, जैसे– गुजरात का ढोकला और गाठिया अन्य प्रदेशों में भी आ गया है ।

   हमारे घर में भी खान-पान की मिश्रित संस्कृति चल रही है। मेरी बहन को इडली-सांभर और ढोकला बहुत पसंद हैं और जब-तब घर में बनते रहते हैं । इसी प्रकार ब्रेड भी नाश्ते में चलती है । उत्तर-भारत के स्थानीय व्यंजनों के साथ हम अन्य प्रदेशों के व्यंजनों का स्वाद लेते रहते हैं ।
2. खान-पान में बदलाव के कई फायदे हैं ? इससे भोजन में विविधता आई है । गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं का शीघ्र तैयार हो जाने वाले व्यंजनों से परिचय हुआ है। मिश्रित खान-पान अपनाने से राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़ती है । लेखक की चिंता के कई कारण हैं । नई पीढ़ी विदेशी व्यंजनों की तरफ अधिक आकर्षित हो रही है। इनमें 'फास्ट फूड' जैसे व्यंजन भी हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताए जाते हैं । स्थानीय व्यंजन धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं । लोग दावतों में व्यंजनों की भीड़ होने से उनके असली स्वाद से वंचित हो रहे हैं ।
3. खान-पान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है– किसी स्थान या प्रदेश में पहले से प्रचलित व्यंजन, जैसे– इडली, डोसा, सांभर आदि दक्षिणी प्रदेशों के स्थानीय व्यंजन हैं । ढोकला, गाठिया आदि गुजरात के स्थानीय व्यंजन हैं। रोटी, दाल, पूड़ी, कचौड़ी, जलेबी आदि उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार आदि के स्थानीय व्यंजन हैं ।

निबंध से आगे—

1. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
2. (i) दाल-भात, रोटी, पापड़ (भोजन)।
   (ii) आलू, बैंगन (सब्जियाँ)।
   (iii) उबालना, तलना, भूनना, सेंकना (पकाने की विधि)।
   (iv) मीठा, तीखा, नमकीन, कसैला (स्वाद)।
3. **छौंक**—साग-सब्जी आदि में जायका लाने के लिए गर्म तेल या घी में हींग एवं जीरा डालकर उसे सब्जी या दाल में डालते हैं। इसे छौंक कहते हैं ।
   चावल—इन्हें पानी में उबालकर पकाया जाता है और दाल या कढ़ी के साथ खाया जाता है।
   कढ़ी—यह बेसन को छाछ या दही में घोलकर, पकाकर और मेंथी का छौंक लगाकर बनाई जाती है। इसमें बेसन की पकौड़ी भी मिलाई जाती हैं।
4. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।
5. सूची इस प्रकार हो सकती है—
   दोपहर भोजन — रोटी, दाल, चावल, दही, पापड़, अचार ।
   रात्रि भोजन — पूड़ी, कचौड़ी, पुए, खीर। सब्जी—आलू पनीर, सूखी सब्जी आलू-गोभी-मटर, रायता ।

अनुमान और कल्पना—

नोट— प्रश्न 1 व 2 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

3. खाने-पीने की चीजों में मिलावट के समाचार अखबारों में आते रहते हैं । आटा, दाल, चावल, मसाले, घी, तेल, मिठाई, दूध, मावा, नमकीन आदि शायद ही कोई खाद्य-पदार्थ होगा, जिसमें मिलावट नहीं होती हो। मैंने दूधिए को तालाब से दूध में पानी मिलाते देखा है । मिलावट से आर्थिक और शारीरिक दोनों प्रकार का नुकसान होता है । खाद्य-पदार्थों में ऐसी वस्तुओं की मिलावट की जाती है जिससे गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं।
   छात्र समाचार-पत्रों में मिलावट संबंधी खबरें खोजकर इन पर कक्षा में चर्चा करें ।

भाषा की बात—

1. **सीना-पिरोना**— आजकल लड़कियाँ सीना-पिरोना नहीं सीखती हैं ।
   भला-बुरा— अपना भला-बुरा सोचकर ही किसी काम में हाथ डालना चाहिए ।
   चलना-फिरना— पिछले सप्ताह से चारपाई छोड़कर उसने चलना-फिरना शुरू किया है।
   लंबा-चौड़ा— मुकेश का मुंबई में लम्बा-चौड़ा कारोबार है।
   कहा-सुनी — थोड़ी-बहुत कहा-सुनी तो हर घर में होती रहती है।
   घास-फूस— बगीचे में चारों ओर घास-फूस उग आया है ।
2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

कुछ करने को—

नोट — परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ग), 3. (ख), 4. (ग), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. बड़ा बदलाव यह है, कि एक प्रदेश के व्यंजनों का दूसरे प्रदेशों में लोकप्रिय होना ।
2. फास्ट फूड में बर्गर, नूडल, पिज्जा आदि व्यंजन आते हैं ।
3. उत्तर भारत में दक्षिण के इडली, डोसा, साँभर तथा बंगाल के रसगुल्ले एवं गुजरात के ढोकला, गाठिया आदि प्रचलित हो गए हैं ।
4. पहले ब्रेड साहब लोगों के नाश्ते में काम आती थी लेकिन अब पूरे देश में सेंककर और तलकर खाई जा रही हैं।
5. स्थानीय व्यंजनों का प्रयोग घट गया है और उनकी गुणवत्ता में भी कमी आ गई है ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. पिछले कुछ वर्षों में हमारी खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव आया है । दक्षिण भारत के अनेक व्यंजन जैसे— इडली, डोसा, बड़ा, साँभर आदि उत्तर भारत में प्रचलित हो गए हैं । फास्ट-फूड का प्रचलन भी बहुत बढ़ा है । बर्गर, नूडल्स और पिज्जा आदि युवा पीढ़ी के प्रिय व्यंजन बन गए हैं ।

2. नए-नए व्यंजनों के आ जाने से उत्तर भारत के स्थानीय व्यंजन घटते जा रहे हैं । दिल्ली के छोले-कुल्चे, मथुरा के पेड़े तथा आगरे के पेठा-दालमोंठ की गुणवत्ता भी पहले जैसी नहीं रही है । अब घरों में स्त्रियाँ पहले की तरह मौसमी फलों और खाद्यान्नों से व्यंजन बनाने में रुचि नहीं लेती हैं क्योंकि इनको बनाने में काफी समय और श्रम लगता है।
3. घरेलू स्त्रियों को जल्दी तैयार हो जाने वाले अनेक व्यंजन बनाने की विधियाँ आ गई हैं । देश की नई पीढ़ी को देश-विदेश के नए-नए व्यंजनों को जानने और चुनने का अवसर प्राप्त हुआ है । खान-पान के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेशों में प्रचलित होने से राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार हुआ है ।
4. लेखक ने बताया है कि कुछ वर्षों से देश में खानपान के तरीकों में एक बड़ा बदलाव देखने में आया है । अब देश के विभिन्न प्रदेशों के स्थानीय व्यंजन अन्य प्रदेशों में भी अपनाए गए हैं । दक्षिण भारत के इडली, डोसा, बड़ा तथा साँभर आदि अब उत्तर भारत में भी प्रचलित हो गए हैं । गुजरात का ढोकला और गाठिया तथा बंगाली मिठाइयाँ भी उत्तर भारत में लोकप्रिय हो गई हैं । इसी प्रकार उत्तर भारत की ढाबा संस्कृति भी पूरे देश में फैल चुकी है और लगभग हर जगह दाल, रोटी, साग और दूसरे उत्तर भारतीय व्यंजन प्राप्त हो जाते हैं।

लेखक के अनुसार अब खानपान की मिश्रित संस्कृति है।

इस मिश्रित संस्कृति में देशी के साथ-साथ विदेशी व्यंजन भी आ गए हैं । खास-कर फास्ट फूड का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। लेखक के अनुसार इस बदलाव से जहाँ कुछ लाभ हुए हैं, वहीं कुछ हानियाँ भी हुई हैं । इससे शीघ्र तैयार होने वाले व्यंजनों का प्रचार हुआ है, राष्ट्रीयता की भावना पुष्ट हुई है। इसके साथ ही स्थानीय व्यंजनों का प्रयोग कम हो गया है और फास्ट फूड जैसे हानिकारक व्यंजन लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

**

पाठ-11 नीलकंठ

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबन्ध से–

1. मोर का नाम नीलकंठ उसकी नीली गरदन के आधार पर रखा गया और मोरनी का नाम राधा रखा गया क्योंकि वह नीलकंठ की छाया के समान उसके साथ रहती थी जैसे राधा कृष्ण के साथ।
2. मोर के बच्चों का स्वागत वैसा ही हुआ जैसा नई आई बहू का परिवार में हुआ करता है । कबूतर नाचना भूलकर दौड़ पड़े और गुटर गूँ की ध्वनि करते हुए उनकी परिक्रमा-सी करने लगे । खरगोश बड़ी सभ्यता से बैठकर उनका निरीक्षण करने लगे । छोटे खरगोश उछल-कूद मचाने लगे । तोते एक आँख बंद करके बड़े ध्यान से उन्हें देखने लगे ।
3. लेखिका को नीलकंठ का रंग-बिरंगे पंखों को गोलाकार खड़े करके लयताल के साथ नृत्य करना बहुत भाता था । दाना चुगते समय, पानी पीते समय और किसी शब्द को सुनते समय उसका गर्दन को तरह-तरह से चलाना भी लेखिका को अच्छा लगता था ।
4. यह वाक्य लँगड़ी मोरनी 'कुब्जा' के आगमन, उसके उत्पातों और उसी के कारण नीलकंठ की मृत्यु हो जाने की घटना की ओर संकेत कर रहा है ।
5. नीलकंठ मंजरियों से लदे आम के वृक्षों और नए लाल पत्तों से लदे अशोक के वृक्षों को देखता उन पर विचरण करने को बेचैन हो जाता था । इसलिए उसे जालीघर में बंद रहना सहन नहीं होता था ।
6. कुब्जा स्वभाव से झगड़ालू और ईर्ष्या करने वाली थी । वह राधा को नीलकंठ के साथ नहीं देखना चाहती थी। उसने राधा के अंडे द्वेषवश फोड़ डाले । उसके इन्हीं दुर्गुणों के कारण उसकी किसी से मित्रता नहीं हो सकी।
7. नीलकंठ ने साँप के फन को अपने पंजों से दबा लिया और अपनी तीखी चोंच से उस पर

लगातार चोटें कीं । इससे खरगोश के बच्चे पर साँप की पकड़ ढीली हो गई और वह उसके मुँह से बाहर निकल आया ।

यह घटना नीलकंठ के स्वभाव की कई विशेषताओं पर प्रकाश डालती है । इससे पता चलता है कि नीलकंठ एक वीर स्वभाव का पक्षी था । वह पीड़ित जीव की रक्षा के लिए तैयार रहता था । उसके हृदय में ममता की भावना भी थी । उसने खरगोश के बच्चे को रात-भर अपने पंखों के नीचे छिपाकर गर्मी दी और उसकी जान बचाई । दुष्टों के प्रति वह क्रूर और कठोर भी था । उसने साँप के टुकड़े-टुकड़े कर डाले ।

निबंध से आगे —

1. रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। इसमें शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारा जाता है। यह मर्मस्पर्शी एवं भावरूप विधा है। रेखाचित्र का वर्णन विषय वास्तविक होता है। आंतरिक और बाहरी विशेषताएँ कलात्मक ढंग से अभिव्यक्ति पाती हैं इसमें व्यक्ति की सारी विशेषताएँ उभर कर सामने आ जाती हैं।

   नोट—प्रश्न 2 और 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

अनुमान और कल्पना—

1. लेखिका ने नीलकंठ को गंगा के बीच में प्रवाहित किया तब उसके सतरंगे पंखों और उनमें सुशोभित चंद्रिकाएँ गंगा की लहरों पर प्रतिबिम्बित हुई होंगी । बिम्ब-प्रतिबिम्ब का यह सिलसिला उठती हुई तरंगों के साथ दूर तक छा गया होगा । सारा जल चंद्रिका मय हो गया होगा । उस समय लेखिका को गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मोर पंख जैसा प्रतीत हुआ होगा ।
2. वर्षा ऋतु थी । आकाश में साँवले मेघ घिरे हुए थे । अचानक बूँदें गिरने लगीं । नीलकंठ का मन नृत्य करने को मचल उठा । उसने अपने सतरंगे पंख मंडलाकार तान लिए, कभी आगे, कभी पीछे, कभी दाएँ, कभी बाएँ क्रम से घूमने लगा । उसकी गति लय-ताल में बँधी थी । नाचते हुए वह किसी अज्ञात सम पर रुकता भी था । उसके नृत्य में जातीय विशेषताओं और मानवीकरण का मन-मोहक मिश्रण था ।

भाषा की बात—

1. गंध — सुगंध, दुर्गंध, निर्गंध
   रंग — सुरंग, सतरंग, विरंग
   फल — कुफल, सुफल, विफल
   ज्ञान — अज्ञान, विज्ञान, संज्ञान ।
2. संधि— नील + आभ = नीलाभ
   नव + आगंतुक = नवागंतुक
   विग्रह— सिंहासन = सिंह + आसन
   मेघाच्छन्न = मेघ + आच्छन्न।

कुछ करने को—

नोट—परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ग), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. कुब्जा ईर्ष्यालु और झगड़ालू स्वभाव की मोरनी थी । वह नीलकंठ के साथ राधा को देखकर भड़क जाती थी । उसने राधा की कलगी नोंच डाली और उसके अंडे फोड़ डाले ।
2. नीलकंठ कुब्जा के डर से भागा-भागा फिरता था । वह राधा के साथ नहीं रह पाता था । शायद इसी दु:ख के कारण उसकी मृत्यु हो गई ।
3. नीलकंठ लेखिका से बहुत प्यार करता था । लेखिका ने उसके मृत शरीर को अपने शाल में लपेटकर संगम पर ले जाकर गंगा में प्रवाहित कर दिया ।
4. कुब्जा की किसी प्राणी से मित्रता नहीं थी । वह हर किसी से उलझ पड़ती थी । एक बार वह आम के पेड़ से नीचे उतरी तो लेखिका की कुतिया कजली से सामना हो गया । कुब्जा ने उस पर चोंच से प्रहार किया तो उसने भी उसकी गर्दन दबा ली । घायल होकर कुब्जा मर गई ।
5. इन तीनों पक्षियों के व्यवहार को देखकर लेखिका को पक्षियों के ईर्ष्या, प्रेम, सहयोग आदि व्यवहारगत विशेषताओं तथा मित्रतायुक्त स्वभावादि का परिचय प्राप्त हुआ ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. नीलकंठ का जीव-जन्तुओं के प्रति व्यवहार एक सेनापति और संरक्षक जैसा ही था । सवेरा होने पर वह सभी को घेरकर दाना डाले जाने के स्थान पर ले जाता था और घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता था । यदि कोई जीव कुछ गड़बड़ी करता तो वह उसे चोंच के प्रहार से दंड देने को दौड़ पड़ता था । उसने बड़ी वीरता से खरगोश के बच्चे की साँप से रक्षा की थी ।
2. नीलंकठ और राधा साथ-साथ ही लेखिका के घर आए थे । दोनों साथ-साथ ही बड़े हुए थे । अत: उनमें परस्पर बड़ा स्नेहभाव था । दोनों साथ-साथ ही रहते थे । जब वर्षा ऋतु में नीलकंठ नाचता था तो राधा उसके आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ घूमती थी । नीलकंठ की मृत्यु हो जाने पर वह कई दिन तक चुपचाप कोने में बैठी रही । उसे नीलकंठ के लौट आने की आशा बनी रही। वर्षा ऋतु आने पर वह कभी झूले और कभी अशोक की डाल पर बैठकर ऊँचे स्वर में मानो नीलकंठ को बुलाती रहती थी ।
3. नीलकंठ को लगता था कि लेखिका को उसका नृत्य बहुत भाता है । इसलिए वह लेखिका के जालीघर पर पहुँचते ही नृत्य की मुद्रा में खड़ा हो जाता था । लेखिका के साथ आने वाले विदेशी अतिथियों का भी वह इसी प्रकार स्वागत करता था। यही देखकर विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफेक्ट जेंटिलमैन, अर्थात् पूर्ण सज्जन की उपाधि दे दी थी।
4. वैसे तो अपने पालतू जीवों से सभी को लगाव होता है लेकिन महादेवी जी की पालतू जीवों के प्रति गहरी आत्मीयता थी । हर प्राणी उनके लिए एक परिवार के सदस्य के समान होता था । उन्होंने सभी जीव-जन्तुओं के लिए जालीघर बनवा रखा था। नए आने वाले जीव को पहले उनके निजी कमरे में स्थान मिलता था । मोर के बच्चों को वह मुँहमाँगे पैसे देकर लाई थीं । यहाँ तक कि टूटे पंजों वाली मोरनी की दशा देखकर उनका हृदय द्रवित हो गया । उसे भी खरीदकर ले आईं और उसका उपचार किया । राधा और नीलकंठ दोनों उनको बहुत प्रिय थे । कुब्जा ने राधा को बहुत कष्ट दिए और वही नीलकंठ की मृत्यु का कारण बनी लेकिन कुतिया द्वारा घायल किए जाने पर लेखिका ने उसका भी इलाज कराया । नीलकंठ के शव को अपने शाल में लपेटकर संगम ले जाना और गंगा में प्रवाहित करना, पशु-पक्षियों के प्रति उनके प्रेम का प्रत्यक्ष प्रमाण था ।

**

पाठ-12 भोर और बरखा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

कविता से—

1. यशोदा अपने पुत्र श्रीकृष्ण को जगाने के लिए उन्हें इन संबोधनों से पुकार रही हैं । श्रीकृष्ण को जगाने के लिए वह कहती हैं कि रात बीत गई है, सवेरा हो गया है, घरों के द्वार खुल गए हैं और गोपियाँ दही मथ रही हैं। ग्वाल-बाल शोर करते हुए जय-जयकार कर रहे हैं । देव और मनुष्य भी द्वार पर खड़े कृष्ण के जागने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।
2. माँ के द्वारा जगाए जाने पर श्रीकृष्ण ने मक्खन और रोटी का कलेवा हाथ में ले लिया और गायों के रखवाले बनकर ग्वाल- बालों के साथ गाय चराने को तैयार हो गए ।
3. ब्रज की संस्कृति 'भोर' अर्थात् प्रात:काल का दृश्य अलग ही होता है । माताएँ बच्चों को प्यार से जगाती हैं । पशु-पालकों के गाँवों में बच्चे सवेरे ही गायें आदि चराने के लिए अपना-अपना कलेवा लेकर चल देते हैं । घरों में स्त्रियाँ दही मथने लगती हैं । घर-घर के द्वार बड़े सवेरे ही खुल जाते हैं ।
4. एक तो वर्षा की सुहावनी ऋतु थी बादल उमड़-घुमड़ रहे थे । नन्हीं-नन्हीं बूँदें बरस रही थीं । दूसरे उनको ज्ञात हुआ कृष्ण भी उधर आने वाले हैं । इन्हीं कारणों से उन्हें सावन मनभावन लग रहा था ।
5. सावन वर्षा ऋतु का मास होता है । बदलियाँ बरसती हैं । बादल उमड़-घुमड़कर आकाश

में छा जाते हैं। बिजली चमककर संकेत करती है कि वर्षा की झड़ी लगने वाली है और फिर नन्हीं-नन्हीं बूँदें पड़ने के साथ मन प्रसन्न करने वाली शीतल पवन चलने लगती है । स्त्रियाँ आनंद-मग्न होकर गीत गाने लगती हैं।

कविता से आगे—

1. भक्तिकाल के अन्य प्रमुख कवि हैं- कबीर, सूर, तुलसी, रसखान आदि । इन कवियों की रचनाएँ क्रमश: इस प्रकार हैं—
   कबीर-बीजक, सूर- सूरसागर, तुलसी-रामचरितमानस, रसखान - सुजान रसखान ।
2. वर्षा ऋतु के दो अन्य महीने हैं— आषाढ़ तथा भाद्रपद (भादों) ।

अनुमान और कल्पना—

1. मैं एक नगर-निवासी हूँ । सुबह जागने पर पूरब में छाई लालिमा और फिर लाल-लाल गोले जैसा उगता सूरज मुझे बहुत अच्छा लगता है । आकाश में पंक्तियों में उड़ते-चहचहाते पक्षी भी अच्छे लगते हैं । मंदिरों से आती घंटों की ध्वनि और भजनों के स्वर भी मुझे अच्छे लगते हैं ।
2. मैं अपने छोटे भाई-बहिन को जगाने के लिए उनके बिस्तर के पास जाकर प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरकर मधुर आवाज मैं जगाऊँगा, उठो, सबेरा हो गया है, विद्यालय के लिए देर हो जायेगी। माँ ने आपका मानचाहा नाश्ता भी तैयार किया है ?
3. वर्षा में भीगना और खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है। माँ और पिताजी मुझे मना करते हैं पर मेरा मन नहीं मानता। मैं चुपचाप छत पर पहुँच जाता हूँ और वर्षा का आनन्द लेता हूँ ।
4. **(क)** गाँव की सुबह उषा की लालिमा लिए आती है । पक्षी कलरव करने लगते हैं । घरों में स्त्रियाँ सबसे पहले जागती हैं और झाड़ू लगाने, दूध काढ़ने, रसोई सम्हालने आदि कामों में लग जाती हैं । खेतों या काम पर जाने वालों के लिए नाश्ते की तैयारी होने लगती है । स्कूल जाने वाले बच्चों को जगाया जाता है । पीने का पानी लाने के लिए स्त्रियाँ कुओं और हैण्डपम्पों पर पहुँच जाती हैं ।
   (ख) रेलवे प्लेटफार्म पर सुबह यात्रियों, चायवालों और कुलियों की तरह-तरह की आवाजें आती हैं। कुछ लोग बेंचों और जमीन पर सोए रहते हैं । सुबह की गाड़ी से जाने वाले तेज कदमों से आते हैं । टिकट खिड़की पर अधिक भीड़ नहीं रहती ।
   (ग) नदी किनारे सुबह का दृश्य बड़ा शांत और आनंददायक होता है । घाट पर स्नान करने वालों की भीड़ रहती है । सूर्योदय का दृश्य बड़ा मनोहारी होता है । अनेक लोग स्नान करके मंदिर जाते हैं । कुछ सूर्य को जल चढ़ाते हैं ।
   (घ) पहाड़ों पर सुबह का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है । पूरब में सुबह की लालिमा छा जाती है । ऊँची बर्फ से ढँकी चोटियाँ अनोखे रंग बदलती हैं । ठंडे मौसम में सब कुछ कुहरे में ढका रहता है । धूप निकलने पर ही चहल-पहल दिखाई देती है ।

भाषा की बात—

1. एक शब्द है 'गोपाल' या 'ग्वाला' ।
2. **(i) प्यारी-प्यारी आवाज** - चिड़िया की प्यारी-प्यारी आवाज सुनकर सेठ बड़ा प्रसन्न हुआ ।
   (ii) रोम-रोम - मेरा रोम-रोम देश-प्रेम के गीत गा रहा है ।

कुछ करने को—

कृष्ण को 'गिरधर' इसलिए कहा जाता है कि इन्होंने गिरिराज पर्वत को उँगली पर उठा लिया था ।

छात्र कृष्ण द्वारा गिरिराज पर्वत उठाने की कथा अपने माता-पिता से सुनें और कक्षा में सुनाएँ ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ख), 2. (ख), 3. (घ), 4. (क), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. गोपियाँ प्रात:काल उठकर दही मथ रही थीं । इस कारण उनके कंगन हिलते हुए ध्वनि कर रहे थे ।
2. यशोदा द्वारा जगाए जाने पर श्रीकृष्ण जाग गए। उन्होंने मक्खन और रोटी हाथ में लेकर

कलेवा किया और ग्वाल-बालों के साथ गाएँ चराने की तैयारी की ।

3. मीरा ने सावन के महीने के लिए मनभावन शब्द का प्रयोग किया है ।
4. सावन का महीना मीरा को बहुत भा रहा है। उसका मन उमंग से भर गया है।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. मीरा भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त हैं । उनको श्रीकृष्ण का गुणगान करना बहुत प्रिय है । उनके द्वारा दोनों पदों की रचना का मुख्य उद्देश्य श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव का प्रदर्शन करना ही है । पहले पद में कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन है और दूसरे पद में सावन का वर्णन और उसका प्रिय लगना। इसका कारण है कि उसमें श्रीकृष्ण से मिलन की संभावना छिपी है।
2. यशोदा श्रीकृष्ण से कहती हैं हे बंशीवाले लाल, जागो! रात बीत गई, सवेरा हो गया, घरों के द्वार खुल गए। गोपियाँ दही मथ रही हैं और उनके हाथों के कंगन झनकार कर रहे हैं। हे लाल, उठो! देखो देव और मनुष्य द्वार पर तेरी बाट देख रहे हैं। सभी ग्वाल-बाल कोलाहल कर रहे हैं और तेरी जय-जयकार कर रहे हैं।

**

पाठ-13 वीर कुँवर सिंह

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

निबन्ध से–

1. वीर कुँवर सिंह की अनेक विशेषताओं ने मुझे प्रभावित किया । उनका देशप्रेम, उनकी वीरता, उनकी कुशल रणनीति, उनका सभी धर्मों के प्रति सम्मान का भाव, उनका जनता के प्रति प्रेमभाव, ये सभी गुण मुझे बहुत प्रभावित करते हैं ।
2. वुँवर सिंह को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में मजा आता था । इन कामों से उन्हें स्वतंत्रता सेनानी बनने में बहुत मदद मिली । इन्हीं कामों के कारण वह एक कुशल सेनानी बन सके और उन्होंने वृद्धावस्था में भी अँग्रेजों से डटकर लोहा लिया ।
3. कुँवर सिंह के स्वभाव में धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वह सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने अपनी सेना में उच्च पदों पर मुसलमानों को भी नियुक्त किया था । उन्होंने पाठशालाओं के साथ ही मुसलमान बच्चों के लिए मदरसे भी बनवाए थे ।
4. प्रसंग इस प्रकार हैं–

   साहसी– कुँवर सिंह का साहस वृद्धावस्था में भी युवकों को लज्जित करता था । वह एक छोटे जमींदार थे लेकिन उन्होंने अत्याचारी अंग्रेजों का डटकर सामना किया । उन्होंने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया और अपनी साहसिक छापामार रणनीति से अँग्रेज सेनापतियों को चकित और भयभीत कर दिया।

   उदार- कुँवर सिंह एक उदार हृदय शासक थे। उन्होंने आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुए भी निर्धनों की सहायता की। जनता के हित के लिए सड़कें, विद्यालय, कुएँ, तालाब आदि बनवाए । कुँवर सिंह विचारों में भी उदार थे। वह हिन्दू और मुसलमानों में भेदभाव नहीं करते थे । उन्होंने योग्य मुसलमानों को अपनी सेना में ऊँचे पद प्रदान किए ।

   स्वाभिमानी– कुँवर सिंह एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे । वे चाहते तो अन्य जमींदारों की तरह ब्रिटिश शासकों की चापलूसी करके सुख से जीवन बिता सकते थे लेकिन उन्होंने अपने स्वाभिमान से कभी समझौता नहीं किया। वृद्धावस्था में भी उनका जीवन अत्याचारियों से संघर्ष करते हुए ही बीता ।
5. 'बसुरिया बाबा' एक महान संत थे । उन्हीं की प्रेरणा से कुँवर सिंह के हृदय में देशभक्ति और स्वाधीनता की भावना जागी थी । बाबा के सहयोग से कुँवर सिंह बिहार के सोनपुर के प्रसिद्ध मेले में जाकर क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठकें करते थे और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह की योजनाओं में भाग लेते थे। इस प्रकार कुँवर सिंह ने मेले का उपयोग

स्वतंत्रता संग्राम के लिए किया।

निबंध से आगे—

सन् 1857 के चार सेनानी इस प्रकार हैं—

(i) **महारानी लक्ष्मीबाई** — यह झाँसी की रानी थीं । अँग्रेजों से युद्ध करते हुए यह वीरगति को प्राप्त हुईं ।

(ii) **ताँत्या टोपे** — इन्होंने सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । कहा जाता है कि अँग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार करके फाँसी दे दी थी ।

(iii) **नाना साहब** — ये महाराष्ट्र के निवासी थे । इन्होंने सन् 1857 में क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया था ।

(iv) **कुँवर सिंह** — ये बिहार के जगदीशपुर के जमींदार थे। वृद्धावस्था में भी इन्होंने अपनी वीरता और छापामार युद्ध से अँग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे ।

2. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

अनुमान और कल्पना—

1. पढ़ने के साथ-साथ मुझे खेलने, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने और यात्रा करने में बहुत मजा आता है। इसके अतिरिक्त ज्ञान बढ़ाने के लिए मैं इण्टरनेट का प्रयोग भी करता हूँ।
2. मैं पढ़ने में मन लगाता और देश में हो रही भारी उथल-पुथल के बारे में जानता । यदि मेरा संपर्क क्रान्तिकारियों से हो पाता तो मैं उनके समाचार और सूचनाएँ पहुँचाने का कार्य कर सकता था।
3. सोनपुर का मेला बहुत प्रसिद्ध मेला था । इसमें दूर-दूर से हजारों-लाखों लोग आते थे। भीड़ में शामिल होकर क्रान्तिकारियों का वहाँ एकत्र होना आसान होता । उन पर अँग्रेजी गुप्तचरों की निगाह भी नहीं पड़ती । इसके अतिरिक्त हजारों लोगों तक अपनी बात पहुँचाना सरल था । इन्हीं कारणों से स्वाधीनता की योजनाएँ बनाने के लिये इस मेले को चुना गया होगा ।

भाषा की बात—

नीति	– नीतियों
जिम्मेदारियों	– जिम्मेदारी
स्थिति	– स्थितियों
स्वाभिमानियों	– स्वाभिमानी
सलामी	– सलामियों
गोली	– गोलियों

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (क), 3. (ख), 4. (घ), 5. (ख)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. सैनिकों ने दिल्ली पर कब्जा करके अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर को भारत का शासक घोषित कर दिया ।
2. दोनों के बीच भीषण युद्ध कानपुर, लखनऊ, बरेली, बुंदेलखंड और आरा में हुए ।
3. स्वतंत्रता-संग्राम के प्रमुख सेनानियों में नाना साहब, धुंधू पंत, ताँत्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, कुँवर सिंह, अजीमुल्ला खान, मौलवी अहमदुल्लाह, बहादुर खान और राव तुलाराम आदि थे ।
4. कुँवर सिंह के पिता को जगदीशपुर की जमींदारी प्राप्त करने में बड़ा संघर्ष करना पड़ा । पारिवारिक झंझटों में फँसे रहने से पिता कुँवर सिंह की ठीक से देखभाल नहीं कर सके ।
5. कुँवर सिंह का मन पढ़ाई से अधिक घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में लगता था।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. वीर कुँवर सिंह का हृदय उदार था। वह महान योद्धा तथा कुशल शासक थे। दूसरों की समस्याओं के प्रति वे संवेदनशील रहते थे। इनके यहाँ हिन्दू और मुसलमानों के सभी त्योहार साथ-साथ मिलकर मनाए जाते थे। साम्प्रदायिक सौहार्द का भाव था। उन्होंने पाठशालाओं के साथ-साथ मुसलमानों के लिए मकतब भी बनवाए थे। कुँवर सिंह जनमानस में बहुत प्रसिद्ध थे। बिहार की कई लोक भाषाओं में उनकी प्रशंसा के गीत आज भी गाए जाते हैं।
2. वीर कुँवर सिंह अपने साहसिक कार्यों से दुश्मनों की सेना पर विजय पाकर अमर हो गए। उनके चित्र देखकर दुश्मन अब भी भय ग्रस्त हो जाते हैं। वह वीर प्रसूता धरती महान है जहाँ वह पैदा हुए उनके कार्य महान थे। उनके कृतित्व और व्यक्तित्व तथा उनकी

विजय के गीत हम हर समय गायेंगे। कुँवर सिंह स्वतंत्रता के महान सैनिक थे। वह आजादी के लिए दीवाने थे। लोगों का एक सर्वमान्य मत था कि वीर, पौरुषशाली महान व्यक्ति थे।

3. भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अनेक कारणों से सफल नहीं हो सका । इनमें एक मान्य नेता का अभाव, सुसंगठन की कमी, अनुशासन की शिथिलता आदि प्रमुख कारण थे । लेकिन इस संघर्ष ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की नींव रख दी । राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव और स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा को इसने जन्म दिया । सन् 1857 के वीर सेनानी स्वतंत्रता प्रेमियों के आदर्श बन गए । इस प्रकार भारत को स्वतंत्र कराने में इस क्रान्ति का महान योगदान था।

4. जगदीशपुर के युद्ध में कुँवर सिंह की सेना अँग्रेजों से हार गई लेकिन इससे कुँवर सिंह निराश नहीं हुए। उन्होंने अपने संघर्ष को धीरे-धीरे सारे उत्तर भारत में फैला दिया । सासाराम, मिर्जापुर, रीवा, कालपी, कानपुर, लखनऊ होते हुए वे आजमगढ़ जा पहुँचे उन्होंने वहाँ अंग्रेजों को दो बार पराजित किया और जगदीशपुर पर फिर अधिकार कर लिया। उनकी छापामार युद्ध नीति के आगे अँग्रेजी सेना के पास भागने या कट मरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता था ।

5. अंग्रेजी शासन से लोहा लेने के साथ-साथ कुँवर सिंह ने प्रजा के हित के भी अनेक काम किए । उन्होंने आरा में स्कूल के निर्माण में पूरा सहयोग दिया । आर्थिक स्थिति अच्छी न होते हुए भी निर्धनों की सहायता की । उन्होंने आरा और जगदीशपुर तथा आरा और बलिया के बीच सड़कें बनवाईं । जल की व्यवस्था के लिए कुएँ और तालाब बनवाए । उन्होंने सेना में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को उच्च पदों पर नियुक्त किया । धार्मिक मेलजोल को बढ़ावा दिया।

6. सन् 1857 के स्वतंत्रता सेनानियों में वीर कुँवर सिंह का नाम प्रसिद्ध है । कुँवर सिंह का जन्म बिहार के शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में सन् 1782 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम साहबजादा सिंह और माता का नाम पंचरतन कुँवर था ।

बचपन में वुँवर सिंह को घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती बहुत अच्छी लगती थीं । जब वुँवर सिंह ने जगदीशपुर की गद्दी संभाली, उस समय भारत पर अँग्रेजों का राज था। खेती, उद्योग-धंधे और व्यापार सबका हाल बुरा था । इससे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष बढ़ता जा रहा था । जगदीशपुर के जंगल में रहने वाले बसुरिया बाबा ने कुँवर सिंह के हृदय में देशप्रेम और स्वतंत्रता की भावना जगाई । जब दानापुर के सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तो कुँवर सिंह ने उनका नेतृत्व करते हुए आरा पर अधिकार कर लिया । जगदीशपुर में कुँवर सिंह की हार हुई लेकिन उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी । उन्होंने अन्य सेनानियों से मिलकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए और आजमगढ़ में अंग्रेजी सेना को दो बार पराजित किया । उन्होंने फिर से जगदीशपुर पर अधिकार कर लिया ।

कुँवर सिंह महान योद्धा ही नहीं थे वह कुशल शासक भी थे। उन्होंने प्रजा के हित में अनेक काम किए । पाठशाला, मदरसे, कुएँ तालाब, सड़कें बनवाईं । वह हिन्दू और मुसलमानों के प्रति समानता का व्यवहार करते थे । सन् 1858 में उनका स्वर्गवास हो गया ।

**

पाठ-14 संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो गया: धनराज

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

साक्षात्कार से–

1. साक्षात्कार पढ़ने से धनराज की छवि एक ऐसे युवक के रूप में उभरती है जो कठिनाइयों से न घबराने वाला, धैर्यशील और संघर्षशील व्यक्ति है । वह अधिक पढ़ा-लिखा नहीं है लेकिन उसे हॉकी-खेल में अपनी कुशलता पर गर्व है । वह तुनुकमिजाज, स्पष्टवादी और क्रोध पर नियंत्रण न कर पाने वाला

युवक है । इसके साथ ही वह भावुक भी है। वह किसी को कष्ट में नहीं देख सकता। वह मित्रता का सम्मान करने वाला एवं मातृभक्त पुत्र है।

2. धनराज पिल्लै की जीवनयात्रा बड़ी प्रेरणादायक है । उनका परिवार निर्धन था । यद्यपि उनको हॉकी-खेल से बहुत लगाव था लेकिन उनके पास एक हॉकी-स्टिक खरीदने को पैसे न थे । जब उनके भाई का भारतीय कैंप के लिए चुनाव हो गया तो उसने अपनी पुरानी हॉकी धनराज को दे दी। धनराज ने इसी हाकी से निरंतर अभ्यास किया और आगे बढ़ते चले गए । ऑलविन एशिया कप में जगह मिलने के बाद धनराज का तरक्की की ओर सफर प्रारम्भ हो गया। उन्होंने देश और विदेश में खूब नाम कमाया । आज धनराज के पास कार भी है, फ्लैट भी है और यश भी है । लेकिन इस ऊँचाई तक वह जमीन से उठकर पहुँचे हैं । इस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए उन्होंने निरंतर संघर्ष किया है।

3. धन और यश दोनों ऐसी चीजें हैं जिन्हें अधिक पाने के बाद व्यक्ति का अहंकारी हो जाना प्राय: देखा जाता है । धनराज की माँ ने उसे यही सीख दी कि उसे जितनी प्रसिद्धि मिले वह उतना ही विनम्र बने । ऐसा व्यक्ति सदा लोकप्रिय बना रहता है । अहंकारी का पतन होना निश्चित है।

साक्षात्कार से आगे—

1. ध्यानचंद हॉकी के बहुत कुशल खिलाड़ी थे। उन्होंने भारतीय हॉकी टीम को देश और विदेशों में अत्यन्त सम्मान और पुरस्कार दिलाए। एक बार मैदान पर गेंद उनकी स्टिक पर आ जाती तो फिर उनसे गेंद को अलग कर पाना विपक्षी टीम के खिलाड़ियों को असम्भव-सा हो जाता था । लगता था गेंद उनकी स्टिक से चिपक गई हो । इसी कारण उनको लोग हॉकी का जादूगर कहकर पुकारते थे ।

2. जो वस्तु राष्ट्र के सम्मान और प्रसिद्धि से जुड़ी होती है उसे राष्ट्रीय होने का गौरव प्रदान किया जाता है । जैसे मोर को भारत का राष्ट्रीय पक्षी कहा जाता है । जिस समय ध्यानचंद भारतीय हॉकी टीम के कप्तान थे सारे विश्व में भारतीय हॉकी टीम का बोलबाला था । विश्व की सभी प्रमुख हॉकी टीमों को ध्यानचंद की टीम से पराजित होना पड़ा था । इसी कारण हॉकी खेल को राष्ट्रीय खेल का दर्जा दिया गया था । आज भारतीय हॉकी टीम को वह गौरव प्राप्त नहीं है । इसके अनेक कारण हैं ।

3. परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं है ।

अनुमान और कल्पना—

1. धनराज पिल्लै की यह बात बहुत कुछ सही है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि लोगों को सम्मान, प्रसिद्धि और प्रशंसा तो बहुत मिली लेकिन उनका सारा जीवन धन के अभाव में बीत गया । प्रेमचंद बहुत बड़े और प्रसिद्ध कहानीकार थे लेकिन सदा अभावों से जूझते रहे ।

   नोट — छात्र अपने शिक्षक तथा बड़ों से इस बारे में और पता करें और लिखें ।

2. **(क)** अपनी गलतियों के लिए माफी माँगना आसान भी है और बड़ा मुश्किल भी । जिनका मन साफ और विचारशील होता है, उनके लिए अपनी गलती पर माफी माँगना आसान होता है । लेकिन जो हठी और अहंकारी होते हैं और जो अपने को सदा सही मानकर चलते हैं, उनके लिए गलती पर माफी माँगना बहुत कठिन होता है ।

(ख) मैं गलती का पता चलने पर माफी माँग लेने में कोई बुराई नहीं मानता । मेरे आस-पास दोनों तरह के लोग हैं—माफी माँग लेने वाले और न माँगने वाले ।

(ग) माफी माँगने के लिए जिस प्रकार एक संकोच रहित हृदय चाहिए, उसी प्रकार माफी देने के लिए एक उदार हृदय होना आवश्यक है । दोनों बातों का सरल या कठिन होना व्यक्ति के स्वभाव पर निर्भर है ।

भाषा की बात—

1. **प्रेरणा**—शहीदों के जीवन से हमें देशप्रेम की प्रेरणा मिलती है ।

   प्रेरक—इस पाठ में धनराज पिल्लै के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं ।

प्रेरित—युवक ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के उपदेशों ने उसे स्वाभिमानी और देशप्रेमी बनने को प्रेरित किया ।

संभव—अब उसका परीक्षा में उत्तीर्ण होना संभव नहीं लगता।

संभावित—वह यात्रा के संभावित खतरों से परिचित नहीं था।

संभवतः—संभवतः वह कविता शर्मा का भाई है ।

उत्साह—सभी साथी उत्साहपूर्ण मन से लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास कर रहे थे ।

उत्साहित—आपकी सफलता ने मुझे भी यह जिम्मेदारी लेने को उत्साहित किया है ।

उत्साहवर्धक—यह समाचार हम सभी के लिए बड़ा उत्साहवर्धक है ।

2. कोश का अवलोकन छात्र स्वयं करें । यहाँ चार शब्दों के विभिन्न रूप दिए जा रहे हैं—

प्रकाश—प्रकास, परकास, परगास

पत्र—पत्ता, पत्तर, पात

चंद्र—चंदर, चंदा, चाँद

पर्यंक—पलंग, पलका, पलकिया।

3. खेल है क्रिकेट, संबंधित शब्द हैं—बॉल, बैट, विकेट, रन, कैच, गेंदबाज, बल्लेबाज, आउट, ईनिंग्स आदि।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (घ), 3. (क), 4. (क), 5. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. धनराज के पास नई स्टिक खरीदने के लिए पैसे नहीं थे । जब उनके भाई का भारतीय कैंप के लिए चुनाव हो गया तो भाई ने अपनी पुरानी स्टिक उन्हें दे दी ।
2. धनराज का कहना था कि वह पढ़ाई में बहुत फिसड्डी थे । किसी तरह दसवीं तक तो पहुँच गए, लेकिन आगे उनके लिए संभव नहीं था ।
3. धनराज को जिंदगी में हर छोटी-बड़ी चीज के लिए संघर्ष करना पड़ा । इसी कारण वह तुनुकमिजाज हो गए ।
4. धनराज सीधी-सपाट बात करने वाले और मुँहफट आदमी हैं । उन्हें गुस्सा भी बहुत आता है । इसके साथ ही वह बहुत भावुक भी हैं ।
5. धनराज की माँ ने उन्हें सीख दी है कि वह अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता के साथ सँभालते रहें । कभी घमंड न करें ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. धनराज बचपन में बहुत गरीबी में रहे । उनके भाई हॉकी खेलते थे इसलिए उनको भी हॉकी खेलने का शौक हो गया । लेकिन उनके पास एक हॉकी स्टिक खरीदने को भी पैसे नहीं थे । वे अपने साथियों से स्टिक उधार माँगकर काम चलाते थे । जब उनके बड़े भाई का भारतीय कैंप में चुनाव हो गया तो उसने अपनी पुरानी स्टिक धनराज को दे दी। अपनी स्टिक आ जाने के बाद धनराज का खेल निरंतर निखरता चला गया ।
2. धनराज ने बताया कि वह अपने आपको सदा असुरक्षित-सा महसूस करते थे । उनको जीवन में हर छोटी-बड़ी चीज के लिए जूझना पड़ा इससे उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया । धनराज स्पष्टवादी हैं । वह बिना लाग-लपेट के सीधी बात कहते हैं । वह मुँहफट भी हैं। इसकी वजह से उन्हें कभी-कभी पछताना भी पड़ता है। उन्हें गुस्सा जल्दी आता है। वह एक भावुक व्यक्ति भी हैं। किसी को कष्ट में नहीं देख सकते । वह अपने दोस्तों और परिवार की बहुत कद्र करते हैं । गलतियों के लिए माफी माँगते हुए संकोच नहीं करते।
3. धनराज ने अपने उच्चकोटि के खेल से हॉकी को लोकप्रिय बनाया, लेकिन इसके बदले उन्हें जो मिलना चाहिए था नहीं मिला । उस समय आज की तरह खिलाड़ियों पर धन की वर्षा नहीं होती थी । एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हो जाने पर भी उन्हें मुंबई की लोकल ट्रेनों से ही यात्रा करनी पड़ती थी । उन्होंने अपने कठोर परिश्रम के बल पर ही परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारा ।
4. उस समय तक धनराज एक नामी खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे लेकिन लोकल ट्रेन से सफर करना उनकी मजबूरी थी । उन्होंने लेखिका को बताया कि टैक्सी से सफर करने लायक उनकी हैसियत नहीं

थी । इस घटना से धनराज को अनुभव हुआ कि वह एक मशहूर चेहरा बन चुके थे । उनको लोकल ट्रेनों में यात्रा करने से बचना चाहिए लेकिन वह क्या कर सकते थे ? वह जो कुछ खेल से कमाते थे, उससे परिवार का गुजारा होता था। उन्होंने धीरे-धीरे पैसे जमा करके बहिन की शादी की और माँ को हर महीने पैसे भेजने शुरू किए । आज उनके पास एक फोर्ड कंपनी की आईकॉन कार है जो उन्होंने अपनी मेहनत की कमाई से खरीदी थी ।

**

पाठ-15 आश्रम का अनुमानित व्यय

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

लेखा-जोखा—

1. गाँधी जी द्वारा आश्रम की स्थापना का उद्देश्य लोगों को श्रम का महत्व समझाने और अपना काम अपने हाथ से करने की शिक्षा देना भी था । साथ ही इसके पीछे बेरोजगारी दूर करने का उपाय भी सुझाना भी था । आश्रम के लोगों को विभिन्न पेशों में कुशल बनाने के लिए ही उन्होंने औजार खरीदने का निर्णय किया होगा ।

   नोट — प्रश्न 2 व 3 परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं ।

4. ऐसे अनेक काम हैं जिन्हें हम चाहकर भी नहीं सीख पाते हैं, जैसे—दूध दुहना, खाट बुनना, सिलाई करना, किताबों पर जिल्द चढ़ाना, घर में बिजली की छोटी-मोटी मरम्मत करना आदि। इसका कारण यह है कि घर में गाय-भैंस नहीं होना, खाट का प्रयोग न होना, सिलाई करने वाला या सिखाने वाला न होना। पढ़ाई के कारण सिखाने वाली संस्थाओं में प्रवेश नहीं ले सकते । फिर भी बिजली की मरम्मत तथा सिलाई का काम मैं अवश्य सीखूँगा । आज की महँगाई में ये बहुत बचत करा सकते हैं ।

5. इस बजट को गहराई से देखने के बाद अनुमान होता है कि आश्रम का उद्देश्य लोगों को अपने हाथ से काम करने की प्रेरणा देना तथा परिश्रम का महत्व समझाना रहा होगा । अपना काम अपने हाथों से करने में कोई शर्म की बात नहीं, यह अनुभव कराना तथा श्रमिकों के प्रति सहानुभूति और सम्मान जगाना भी इसका उद्देश्य हो सकता था । बेरोजगारी की समस्या के समाधान में भी यह सहायक हो सकता था ।

भाषा की बात—

1. **मूल शब्द इस प्रकार हैं—**

   प्रमाणित – प्रमाण, व्यथित – व्यथा,
   द्रवित – द्रव, मुखरित – मुखर,
   झंकृत – झंकार, शिक्षित – शिक्षा,
   मोहित – मोह, चर्चित – चर्चा

   मूल शब्द इस प्रकार हैं—

   मौखिक – मुख, संवैधानिक – संविधान,
   प्राथमिक – प्रथम, नैतिक – नीति,
   पौराणिक – पुराण, दैनिक – दिन ।

   परिवर्तन–'इक' जुड़ने से मु को मौ, वि को वै, प्र को प्रा, नी को नै, पौ को पु और दि को दै हो गया ।

2. 1. रेलगाड़ी, 2. ऊँटगाड़ी, 3. खच्चरगाड़ी 4. पुस्तकालय, 5. शिवालय, 6. स्नानघर । उपर्युक्त शब्दों में दूसरा यानि अन्तिम शब्द प्रधान है, उसी के ऊपर पहले शब्द का अर्थ टिका है ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. (ग), 2. (ख), 3. (ख), 4. (घ), 5. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

1. गाँधी जी के अनुसार आने वाले लोगों में सपरिवार और अकेले दोनों प्रकार के लोग हो सकते थे । अत: दोनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था होनी चाहिए थी।
2. मकान में तीन रसोईघर और मकान कुल 50 हजार वर्ग फुट क्षेत्रफल में होना चाहिए था ।
3. खेती के लिए गाँधी जी के अनुमान के अनुसार पाँच एकड़ जमीन और तीस आदमियों की आवश्यकता थी।

4. गाँधी जी ने बजट में खेती के, बढ़ईगीरी के, मोची के, लुहारगीरी के और राजमिस्त्री के औजार शामिल किए थे ।
5. गाँधी जी के अनुसार एक व्यक्ति का खाने का मासिक खर्च दस रुपए तथा पचास व्यक्तियों का वार्षिक खर्च छह हजार रुपए लगाया था ।

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

1. गाँधी जी अहमदाबाद में एक ऐसा आश्रम स्थापित करना चाहते थे जो प्राय: सभी दृष्टियों से आत्मनिर्भर हो । उनका अनुमान था कि स्थापना के प्रथम वर्ष के बाद आश्रम अपना खर्चा चलाने में स्वयं समर्थ हो जाएगा । आश्रम की स्थापना और संचालन के खर्चों के बारे में उनके कई विकल्प थे । या तो अहमदाबाद के लोग सारा खर्च उठाएँ, या वे जमीन और मकान की व्यवस्था कर दें । बाकी का व्यय गाँधी जी अन्य उपायों से पूरा करने को तैयार थे ।
2. आश्रम को स्वावलम्बी बनाने के लिए गाँधी जी ने अनेक व्यवस्थाएँ सोची थीं । वह चाहते थे कि आश्रमवासी अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ स्वयं बनाएँ । अपने हाथ से हर काम करने में गर्व अनुभव करें । इसके लिए उन्होंने अपने बजट में खेती के, बढ़ईगीरी के, लुहारी के, मोची के और राजमिस्त्री के औजारों की, कपड़े बुनने के करघों की तथा रसोई के सारे बर्तनों की व्यवस्था की थी । यदि आश्रम की ये सारी व्यवस्थाएँ सुचारु ढंग से चलतीं तो आश्रमवासी लगभग स्वावलम्बी हो जाते ।
3. गाँधी जी की योजनानुसार चलने पर आश्रमवासियों का जीवन पूर्ण स्वावलम्बी रहा होगा । वे अपने द्वारा उगाए गए अन्न का प्रयोग करते होंगे। अपने द्वारा बनाए गये भोजन का स्वाद लेते होंगे । अपने द्वारा काते गए सूत से अपने द्वारा बुने गए वस्त्रों का प्रयोग करते होंगे । वे अपने द्वारा बनाए गए जूते-चप्पल पहनते होंगे । बढ़ईगीरी, लोहारी, राजमिस्त्री आदि के कार्यों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते होंगे। आजकल के आश्रमों का जीवन बिल्कुल भिन्न है । ये आश्रम स्वावलम्बी नहीं होते । इनमें आधुनिक सुविधाओं का प्रबन्ध रहता है । आश्रमवासी बिजली, पंखे, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, एसी का प्रयोग करते हैं । इनको आश्रम न कहकर गेस्ट हाउस कहना उचित लगता है।

**

व्याकरण

पाठ-1 शब्द विचार

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (घ), (ii) (घ), (iii) (ग), (iv) (ग), (v) (क)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) वर्णों, (ii) तुर्की, (iii) देशज, (iv) गाँठ, (v) विकारी।

3. प्रमुखत: शब्दों के 4 भेद हैं–(1) व्युत्पत्ति के आधार (2) उत्पत्ति के आधार पर (3) प्रयोग के आधार पर (4) अर्थ के आधार पर

4. उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं– (1) तत्सम (2) तद्भव (3) देशज (4) विदेशी।

5. (अ) अंग्रेजी– स्कूल, इंस्पेक्टर, अफसर, ट्यूशन
(ब) तुर्की– चाकू, काबू, कुली, चेचक
(स) देशी (देशज) – लुटिया, चुटिया, खटिया, खुरपी
(द) अरबी– ईमान, मशाल, अल्लाह, शेख
(य) फारसी– आईना, आमदनी, आसमान, कारीगर

पाठ-2 संज्ञा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (ग), (iii) (ग), (iv) (क), (v) (ग)।

सही/गलत छाँटिए

2. (i) (✓), (ii) (✓), (iii) (×), (iv) (✓), (v) (✓).

रिक्त स्थानों की पूर्ति

3. (i) योग्यता, (ii) लड़ाई, (iii) बुढ़ापे, (iv) चतुराई, (v) बुराई।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, भाव अथवा गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे- राम, मेज, मोहन, दिल्ली, सज्जनता आदि ।

2. संज्ञा के पाँच भेद होते हैं- (1) व्यक्तिवाचक संज्ञा (2) जातिवाचक संज्ञा (3) भाववाचक संज्ञा (4) समूहवाचक संज्ञा (5) द्रव्यवाचक संज्ञा।

3. जिन संज्ञा पदों से एक ही प्रकार की सामान्य वस्तुओं या जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- पंखा, पुस्तक, कुर्सी, मेज आदि ।

4. जिन संज्ञा पदों से किसी विशिष्ट व्यक्ति या स्थान का बोध हो, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- राम, यमुना, रहीम, जयपुर आदि।

5. जिन संज्ञा पदों से किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण, कर्म और स्वभाव का बोध हो, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- चाल, विनम्रता, बचपन, मिठास, मुस्कान, सुंदरता, बुढ़ापा, लालिमा आदि।

6. जिन संज्ञा शब्दों से ऐसे द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, जिनसे अनेक वस्तुएँ बनती हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- सोना, दूध, फल आदि।

7. नमी - मीन – जातिवाचक संज्ञा
चना - नाच – भाववाचक संज्ञा
नत - तन – जातिवाचक संज्ञा
मत - तम – भाववाचक संज्ञा
तल - लत – भाववाचक संज्ञा
नव - वन – जातिवाचक संज्ञा

8. हिमालय – व्यक्तिवाचक संज्ञा
महिला – जातिवाचक संज्ञा
समुद्र – जातिवाचक संज्ञा
सतलुज – व्यक्तिवाचक संज्ञा
दया – भाववाचक संज्ञा
भावना – भाववाचक संज्ञा

पाठ-3 लिंग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (घ), (ii) (ख), (iii) (ख), (iv) (क), (v) (क), (vi) (ग)।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

2. (i) ठकुराइन, (ii) पुल्लिंग, (iii) स्त्रीलिंग, (iv) नर मकड़ी, (v) नित्य, (vi) दो, (vii) नाम, (viii) वर, (ix) इन्द्राणी, (x) कवयित्री।

सही/गलत छाँटिए

3. (i) (✓), (ii) (×), (iii) (×), (iv) (✓), (v) (✓)।

4. (अ) स्त्रीलिंग (ब) स्त्रीलिंग
(स) पुल्लिग (द) पुल्लिग

5. 1. अध्यापिका महोदया पढ़ा रही हैं।
2. लेखिका की पुस्तक राम के हाथ में है।
3. राम ने प्राचीन कवयित्रियों की कविताओं पर भाषण दिया।
4. बंदरिया खटिया पर नाच रही है।

पाठ-4 वचन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ग), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (क), (v) (क)।

सही/गलत छाँटिए

2. (i) (✓), (ii) (×), (iii) (×), (iv) (✓), (v) (✓), (vi) (×).

रिक्त स्थानों की पूर्ति

3. (क) दो (ख) अधिक, (ग) बहुवचन, (घ) लोग, (ङ) नहीं।

4. (i) मुर्गियाँ दाना चुग रही हैं। (ii) लड़के पुस्तक पढ़ते हैं। (iii) बच्चा खेल रहा है। (iv) लता फैल रही है। (v) चिड़िया बोल रही है।

5. पंक्तियाँ – पंक्ति, जड़ों –जड़, नीति – नीतियाँ, सैनिकों – सैनिक, आंदोलन – आंदोलनों, व्यक्ति – व्यक्तियों, जानकारी – जानकारियों, नौकरियों – नौकरी, योजनाएँ – योजना, टुकड़ी – टुकड़ियाँ, सलाखें – सलाख, ज्वाला – ज्वालाएँ, उत्सव – उत्सवों, यात्रा–यात्राएँ, कहानी – कहानियाँ, सेना – सेनाएँ, सेनानायक – सेनानायकों, किस्से – किस्सा, गोलियाँ – गोली, कलाई – कलाइयाँ।

पाठ-5 कारक

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ख), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (ग), (v) (ख), (vi) (ख)।

2. (क) के लिए, (ख) पर, (ग) ने, (घ) को।

3. (क) करण कारक, (ख) कर्म कारक, (ग) अपादान कारक, (घ) अपादान कारक, (ङ) करण कारक।

पाठ-6 सर्वनाम

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (ख), (v) (ख)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) हम (ii) तेरा (iii) खुद (iv) के।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं ।

2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं :
(1) पुरुषवाचक (2) निजवाचक
(3) निश्चयवाचक (4) अनिश्चयवाचक

(5) संबंधवाचक (6) प्रश्नवाचक ।

3. केवल व्यक्तियों के नाम के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं ।

4. वक्ता, श्रोता और अन्य पुरुष के आधार पर पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं –

(क) वक्ता प्रथम पुरुष में होता है; जैसे – मैं, हम।

(ख) पाठक या श्रोता मध्यम पुरुष में होता है; जैसे- तू, तुम, आप ।

(ग) अन्य पुरुष; जैसे- वह, वे, यह आदि।

पाठ-7 विशेषण

बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) (क), (ii) (क), (iii) (ख), (iv) (ग)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(क) दयालु (ख) धार्मिक (ग) जापानी (घ) लम्बाई

सुमेलन

(क) 3, (ख) 2, (ग) 1, (घ) 5, (ङ) 4.

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं ।

2. विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—(i) मूल अवस्था, (ii) उत्तर अवस्था, (iii) उत्तम अवस्था।

3. जिस शब्द से किसी वस्तु की नाप-तौल तथा मात्रा का ज्ञान होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे- एक किलो बर्फी, आधा लीटर आदि।

4. जिस शब्द से संख्या या गिनती का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, जैसे- एक, दो, तीन, चार, पाँच आदि ।

5. जो शब्द विशेषण शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं ।

6. 'सा, सी, से' का प्रयोग व्याकरण में समानता का बोध कराने अथवा तुलनात्मक विशेषण के लिए किया जाता है, जैसे–

(क) उसका सागर-सा विस्तृत हृदय है ।

(ख) बच्चों का मन फूल-सा कोमल होता है ।

(ग) उनकी वाणी में चंद्रज्योत्स्ना-सी स्निग्धता (शीतलता) है।

(घ) तुझ-सी बातूनी लड़की मैंने कहीं नहीं देखी।

(ङ) वह गंगाजल-सा निर्मल मन वाला व्यक्ति है।

(च) उसके दाँत मोतियों-से चमकते हैं ।

(छ) दूध-से सफेद आपके वस्त्र हैं।

7. **प्यारे-प्यारे** — बच्चों के प्यारे-प्यारे बोल मनमोहक होते हैं।

पके-पके — पेड़ों पर पके-पके आम लटके हुए हैं ।

लंबे-लंबे — बच्ची के लंबे-लंबे बाल कितने अच्छे हैं।

कोमल-कोमल— अब पौधों में कोमल-कोमल पत्तियाँ निकल आईं ।

गोल-गोल — रधिया ने अपनी गोल-गोल आँखें नचाकर कुछ संकेत किया ।

पाठ-8 क्रिया

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (ग), (iii) (ख), (iv) (ख), (v) (ग)

रिक्तस्थानों की पूर्ति

2. (क) खेल रहा है। (ख) पका रही है। (ग) नाचेगी। (घ) गाती है।

सुमेलन

3. (i) (ग), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (क)।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

2. क्रिया का वाक्य में उतना ही महत्त्व है जितना

कि शरीर में आत्मा का। क्रिया के अभाव में वाक्य निरर्थक होता है।

3. 'कर्म' के अनुसार क्रिया के दो भेद होते हैं– (1) सकर्मक क्रिया (2) अकर्मक क्रिया । व्युत्पत्ति के आधार पर भी क्रिया के दो भेद होते हैं-(1) मूल क्रिया (2) यौगिक क्रिया।
4. यौगिक क्रिया के चार भेद होते हैं- (1) संयुक्त क्रिया (2) नामधातु क्रिया (3) प्रेरणार्थक क्रिया (4) पूर्वकालिक क्रिया।
5. जब क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, तो क्रिया सकर्मक होती है और जब क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है तो क्रिया अकर्मक होती है।
6. दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनने वाली क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है, जबकि सामान्य क्रिया में एक ही धातु होती है।
7. ऐसी क्रियाएँ जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बनती हैं, नामधातु क्रियाएँ कहलाती हैं ।
8. जब वाक्य में एक क्रिया समाप्त होने के बाद दूसरी क्रिया होती है, तब समाप्त होने वाली पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।
9. (क) बोल-बोलकर – मैं बोल-बोलकर थक गया, पर वह सुनता ही नहीं ।
   (ख) देख-देखकर – उसका खेल देख-देखकर मैं तो दंग रह गया ।
   (ग) सुन-सुनकर – तुम्हारी बातें सुन-सुनकर मेरे कान पक गए ।
   (घ) निकल-निकलकर – वर्षा होने पर साँप निकल- निकलकर बिलों से बाहर आने लगे ।
   (ङ) मल-मलकर – शरीर को मल-मलकर साफ करो।

पाठ-9 अविकारी शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ग), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (घ)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) में, (ii) के सामने, (iii) पास, (iv) कल से (i) इसलिए, (ii) धीरे-धीरे, (iii) अब, (iv) के बाद।

पाठ-10 वाक्य-विचार

बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) (ग), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (ख), (v) (घ)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(क) आठ (ख) आज्ञावाचक (ग) संदेहवाचक (घ) तीन

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. वाक्य शब्दों के ऐसे समूह को कहते हैं जिसका कुछ अर्थ हो।
2. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं- (1) साधारण वाक्य, (2) मिश्रित वाक्य, (3) संयुक्त वाक्य ।
3. जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं । उदाहरण - छात्र विद्यालय में पढ़ रहे हैं ।
4. 'मनोज विद्यालय जाएगा ।' इस वाक्य में 'मनोज' उद्देश्य है तथा 'विद्यालय जाएगा' विधेय है।
5. जिस वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं । उदाहरण - पुलिस आ गई और सभी लोग अपने-अपने घरों में घुस गए ।
6. यह संयुक्त वाक्य है । इसमें एक से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य प्रयुक्त हुए हैं ।
7. जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है, जैसे - उसने कहा कि वह कल पुष्कर जाएगा।

8. मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है । संयुक्त वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं ।

9. (क) कर्ता - विद्यार्थी,
(ख) क्रिया - पढ़ता है,
(ग) कर्म - पुस्तक ।

10. अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं-
(1) विधानवाचक (2) निषेधवाचक
(3) प्रश्नवाचक (4) विस्मयादिबोधक
(5) आज्ञावाचक (6) इच्छावाचक
(7) संदेहवाचक (8) संकेतवाचक।

पाठ-11 समास

बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) (घ), (ii) (क), (iii) (क), (iv) (ख), (v) (ख)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(अ) पीतांबर (ब) अर्द्धवार्षिक (स) तिरंगा (द) लंबोदर।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. जिस समास में पहला पद अव्यय और दूसरा पद संज्ञा होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे-यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार, प्रतिदिन = दिन - दिन, निडर = बिना डर के, आमरण = मरणपर्यंत।

2. जिस समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे - नीलकमल = नील + कमल, पीतवसन = पीत (पीला) + वसन, चंद्रमुख = चंद्र के समान मुख, रक्तकमल = रक्त (लाल) है जो कमल, सुपुत्र = अच्छा है जो पुत्र।

3. जिस समास में पहला पद संख्यावाची और दूसरा पद संज्ञा होता है तथा समूह का बोध होता है, वहाँ द्विगु समास होता है; जैसे - त्रिभुवन = तीनों भुवनों का समूह, त्रिफला = तीन फलों का समूह, अष्टकोण = आठ कोणों का समूह ।

4. जिस समास में दोनों पदों की प्रधानता होती है तथा दोनों पदों के बीच 'और' शब्द का लोप होता है, वहाँ द्वंद्व समास होता है; जैसे-माता-पिता = माता और पिता, राजा-प्रजा = राजा और प्रजा । सुख-दुख = सुख और दुख। सीता-राम = सीता और राम।

5. जिस समास में प्रस्तुत पद की प्रधानता न होकर अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे - चतुरानन = चार हैं आनन जिसके अर्थात् ब्रह्मा। चक्रपाणि = चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु ।

6. दुबली - पतली = दुबली और पतली
छोटी - बड़ी = छोटी और बड़ी
माँ - बाप = माँ और बाप

7. **दाल-रोटी** = दाल और रोटी।
वाक्य—आज केवल दाल-रोटी से ही संतोष करना पड़ेगा ।
बच्चे-बूढ़े = बच्चे और बूढ़े।
वाक्य—बच्चे-बूढ़े उधर बैठ जाएँ ।
व्यंजन-पकवान = व्यंजन और पकवान।
वाक्य—घर में व्यंजन-पकवान देखकर मुँह में पानी भर आया।
लाखों-करोड़ों = लाखों और करोड़ों।
वाक्य—देश में लाखों-करोड़ों लोग आज भी भूखे-नंगे हैं ।
सेंकी-तली = सेंकी और तली।
वाक्य—अधिक सेंकी-तली चीजें खाने से सेहत बिगड़ जाती है।
फलों-खाद्यान्नों = फलों और खाद्यान्नों।
वाक्य—फलों- खाद्यान्नों से अनेक व्यंजन और पकवान बनते हैं ।
देशी-विदेशी = देशी और विदेशी।
वाक्य—आज देशभर में देशी-विदेशी व्यंजन अपनाए जाते हैं।
घरों-बाजारों = घरों और बाजारों।
वाक्य—आज हमारे देश के घरों-बाजारों में विदेशी सामानों की भरमार है ।
वेश-भूषा = वेश और भूषा।
वाक्य—हमारी वेश-भूषा में भले ही भिन्नता है, पर सांस्कृतिक दृष्टि से हम एक हैं।

पाठ-12 सन्धि

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ख), (ii) (ग), (iii) (ख), (iv) (घ), (v) (ख)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (अ) न्यून (ब) भावुक (स) निश्छल (द) जगन्नाथ।

सुमेलन

3. (i) (घ), (ii) (ग), (iii) (ख) (iv) (क)।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. जहाँ दो स्वरों के मेल से विकार उत्पन्न होता है, वहाँ स्वर संधि होती है । यथा – महा + आशय = महाशय, अंबु + उर्मि = अंबूर्मि । इसके पाँच भेद हैं—(1) दीर्घ संधि, (2) गुण संधि, (3) वृद्धि संधि, (4) यण् संधि, (5) अयादि संधि।

2. व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे- सत् + चरित्र = सच्चरित्र, शरत् + चंद्र =शरच्चंद्र ।

3. विसर्ग का स्वर अथवा व्यंजन से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे – निः + जन = निर्जन, दुरः + लभ = दुर्लभ, पयः + धर = पयोधर।

4. सूर्योदय, विद्यार्थी, प्रत्युपकार, पावक, महेंद्र, जगदीश, रत्नाकर ।

5. प्रधान + अध्यापक, सर्व + उदय, तथा + एव, भानु + उदय, कवि + इंद्र, सु + आगतम्, जगत् + नाथ ।

6. निश्चित = निः + चित, निरीक्षण = निः + ईक्षण, दुर्बलता = दुः + बलता, व्यवहार = वि + अवहार, संस्कार = सम् + कार, निश्चेष्ट = निः + चेष्ट, आनंदोत्सव = आनंद + उत्सव, संकल्प = सम् + कल्प, प्रतीक्षा = प्रति + इच्छा।

पाठ-13 पर्यायवाची शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ख), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (ख), (v) (ग)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) पुष्प, (ii) पंकज, (iii) गज, (iv) सरस्वती।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. वृक्ष – पेड़, तरु, विटप, पादप ।
सर्प – साँप, नाग, विषधर, भुजंग ।
बिजली – चपला, चंचला, तड़ित, विद्युत्।
मयूर – मोर, शिखी, केकी, सारंग ।

2. पृथ्वी – धरा, धरती, भू, भूमि ।
आकाश – अंतरिक्ष, गगन, आसमान, व्योम।
भ्रमर – अलि, मधुप, मधुकर, भौंरा ।
पानी – वारि, नीर, जल, तोय ।

3. कमल – नीरज, पंकज, अंबुज, शतदल ।
चंद्र – रजनीश, मयंक, विधु, दधिजात।
घर – गृह, आवास, निकेतन, गेह ।
पवन – वायु, वात, अनिल, गंधवह ।

4. पक्षी – विहग, खग, नभचर।
घोड़ा – घोटक, अश्व, हय ।

पाठ-14 विलोम शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (घ), (ii) (ग), (iii) (ख), (iv) (ख), (v) (ख)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) पराधीनता, (ii) सूर्यास्त, (iii) अनुचित, (iv) जहर।

सुमेलन

3. निम्नांकित स्तम्भों में से एक में शब्द एवं दूसरे में उनके विलोम दिए गए हैं, इन्हें सुमेलित करें–

(क)	(ख)
सुधा	सूक्ष्म
लोभ	विपदा
स्थूल	बंधन
सम्पदा	गरल
मुक्ति	त्याग

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. 1. पराया, 2. अच्छा, 3. अस्त, 4. अपकार, 5. मरण, 6. विष, 7. साक्षर, 8. अपमान, 9. पुरस्कार।

2. 1 प्रथम, 2. संध्या, 3. उद्यम, 4. मधुर, 5. शांत, 6. उथला, 7. प्रतिघात, 8. पराजय, 9. महान्, 10. अदृश्य।

3. 1. व्यतिक्रम, 2. अपुष्ट, 3. आगमन, 4. मुक्ति, 5. अच्छाई, 6. अमंगल, 7. अधीर।

पाठ-15 अनेकार्थी शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (ग), (iv) (क), (v) (घ)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) सरस्वती, (ii) इज्जत, (iii) पराजित, (iv) बिजली।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. जीवन – जल, प्राण, जीवित ।

(क) सभी जीवों के लिए जीवन (जल) महत्त्वपूर्ण है।

(ख) देखते ही देखते उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गई।,

(ग) जाओ, तुम्हें जीवन दान दिया।

मुद्रा - सिक्का, छायाचित्र, मुख का भाव ।

(क) प्राचीनकाल में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन था।

(ख) इस दीवार पर एक पशु की मुद्रा अंकित है।

(ग) उसकी मुख-मुद्रा पर चिंता की स्पष्ट रेखाएँ थीं।

कुल– वंश, सारा, सभी।

(क) उसका जन्म उच्च कुल में हुआ है।

(ख) उसने अपना कुल धन गरीबों में बाँट दिया।

(ग) यहाँ से कुल लोग चले गए।

वर्ण– जाति, रंग, अक्षर।

(क) आप किस वर्ण के हैं ?

(ख) इस वस्त्र का वर्ण फीका है ।

(ग) वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं ।

पाठ-16 वाक्यांश के लिए एक शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (घ), (ii) (ख), (iii) (ग), (iv) (घ), (v) (क)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

2. (i) आशुतोष (ii) शाकाहारी (iii) मुमुक्षु (iv) अजर।

सुमेलन

3. (i) क, (ii) घ, (iii) ख, (iv) ग।

4. (i) आस्तिक, (ii) पूजनीय, (iii) अपराह्न, (iv) जन्मांध।

5. (i) अखण्ड, (ii) पूर्वाह्न, (iii) ऋणमुक्त, (iv) वध्य।

पाठ-17 युग्म शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (घ), (ii) (क), (iii) (घ), (iv) (ख), (v) (ग)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) बदन, (ii) अरी, (iii) पानी, (iv) बहू।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. (1) कूल = किनारा, कुल = कुटुंब (2) खर = गधा, खुर = नाखून, (3) आदि = आरंभ, आदी = अभ्यासी (4) अवलंब = सहारा, अविलंब = तुरंत (5) उपकार = भलाई, अपकार = बुराई (6) अंश = भाग, अंस = कंधा (7) अंत = समाप्त, अंत्य = नीचे (8) आयु = उम्र, आय = आमदनी (9) ईति = नीति, इति = समाप्त।

2. (1) उद्धार = छुटकारा, उधार = ऋण (2) इंदु = चंद्रमा, इंदुर = चूहा (3) अंबुज = कमल, अंबुद = बादल (4) अरी = री (संबोधन), अरि = शत्रु (5) और = अधिक, ओर = तरफ (6) कौर = ग्रास, कोर = किनारा (7) कर्म = काम, क्रम = तरीका (8) ग्रह = नक्षत्र, गृह = घर (9) दिशा = पूरब आदि दिशाएँ, दशा = हालत (10) निधन = मृत्यु, निर्धन = गरीब ।

3. (क) आराधना - ईश्वर की पूजा करना । उपासना- उपवास-व्रत आदि करना । (ख) ईर्ष्या - दूसरों की उन्नति से दुखी होने का भाव। स्पर्धा - दूसरों से अधिक उन्नति करने की इच्छा, प्रतियोगिता। (ग) रीति - परिवार में प्रचलित प्रथा। नीति - समाज द्वारा बनाए गए नियम। (घ) उपहार- इष्ट-मित्रों या संबंधियों को दी जाने वाली या उनसे ली जाने वाली वस्तु। भेंट—बड़ों को दी जाने वाली वस्तु।

पाठ-18 शुद्ध-अशुद्ध शब्द

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ग), (ii) (ग), (iii) (ग), (iv) (ख)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) कक्षा, (ii) जुकाम, (iii) स्थान, (iv) पुरुष।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. घनिष्ठ, वनस्पति, उपलक्ष्य, स्वास्थ्य, संन्यासी, उज्ज्वल, अनधिकार, चिह्न

2. (क) औरत (ख) कवि
(ग) कारण (घ) कृत्रिम
(ङ) घबराना ।

3. (क) कक्षा (ख) क्षण
(ग) जन्म (घ) त्योहार
(ङ) चूहा ।

पाठ-19 वाक्यों के शुद्ध एवं अशुद्ध रूप

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (ग), (ii) (क), (iii) (ख), (iv) (घ), (v) (ग)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(क) विधान, (ख) अनेक, (ग) रुपये, (घ) मेरे।

सत्य/असत्य

2. (i) (×), (ii) (✓), (iii) (✓), (iv) (×)।

3. शुद्ध वाक्य –

1. आप जैसा कृपालु मित्र ढूँढ़ने पर भी कहाँ मिलेगा ?
2. महात्माजी के दर्शन करके हर्ष हुआ ।
3. लज्जा स्त्री का आभूषण है ।
4. मैं आपके दर्शन करने चला आया ।
5. आप निरे मूर्ख हैं ।
6. राम मन-ही-मन सोचने लगा।
7. आप दो घंटे देर से क्यों आये हैं ?
8. उसने अपनी महान् प्रतिभा का परिचय दिया ।
9. मैं केवल आप पर ही विश्वास करता हूँ।
10. मुझे यह रुचिकर नहीं है।

पाठ-20 शब्द संपदा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 1. (i) (क), (ii) (क), (iii) (क)। (iv) (ख)।

2. (i) (क), (ii) (ख)।

3. (i) (क), (ii) (क)।

4. 1. थोड़ा-थोड़ा प्रसाद सबको मिले।
2. निरंतर चल-चल कर ही मंजिल मिलती है।
3. छोटे-छोटे प्रयासों से ही सफलता मिलती है।
4. बैठ जाओ। खड़े-खड़े थक जाओगे।
5. दो-दो मिलकर चार होते हैं।
6. अरे-अरे मैं गिर गया।
7. बात बनते-बनते बिगड़ गई।

5. 1. गौरी ने बहुत ही सुंदर चित्र-चित्रित किया।
2. मंदिर का निर्माण-कार्य चल रहा है।
3. बीमारी के कारण सीमा दुबली-पतली हो गई है।
4. संत दिन-रात भजन करते हैं।

पाठ-21 उपसर्ग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (क), (iii) (क), (iv) (ग)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) लावारिस, (ii) उपहार, (iii) नापसन्द, (iv) बदनाम।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. शब्द के पूर्व में जो शब्दांश लगाया जाता है, उसे उपसर्ग कहते हैं ।

2. 'उपसर्ग' वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द के पूर्व (पहले) जुड़कर उसके अर्थ में कुछ परिवर्तन कर देते हैं अथवा उसके अर्थ को पूरी तरह बदल देते हैं।

3. सम्, परा, बे ।

4. उपवन, उपस्थिति ।

5. अति - उपसर्ग, व्याप्ति - मूल शब्द ।

पाठ-22 प्रत्यय

बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) (ख), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (ख), (v) (ख)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(क) आबादी, (ख) गरीबी,
(ग) धोखेबाज, (घ) केलों।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रत्यय उस शब्दांश को कहते हैं, जो शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता लाता है अथवा उसके अर्थ को परिवर्तित कर देता है।

2. जो प्रत्यय क्रिया या धातु शब्दों के अंत में प्रयुक्त होते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं तथा जो प्रत्यय धातु या क्रिया शब्दों के अंत में न लगाकर अन्य शब्दों के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

3. भूगोल + इक = भौगोलिक, दिन + इक = दैनिक, नीति + इक = नैतिक, वेद + इक = वैदिक, सप्ताह + इक = साप्ताहिक ।

4. अनुकरण + ईय = अनुकरणीय, शेर + नी = शेरनी, फल + वाला = फलवाला, आनंद + इत = आनंदित, दुकान + दार = दुकानदार, दया + वान = दयावान, भूख + आ = भूखा, खट + इया = खटिया ।

5. संगठन + इत = संगठित, निश्चय + इत = निश्चित, प्रकाश + इत = प्रकाशित, समर्पण + इत = समर्पित जन + इत = जनित, प्रारम्भ + इक = प्रारंभिक, धर्म + इक = धार्मिक, रस + इक = रसिक, सप्ताह + इक = साप्ताहिक, विज्ञान + इक = वैज्ञानिक।

6.

शब्द	**प्रत्यय**	**बने शब्द**
मन	वी	मनस्वी

वाक्य—मनस्वी व्यक्ति परोपकारी होते हैं।

	इक	मानसिक

वाक्य—वह मानसिक रूप से स्वस्थ है ।

	माना	मनमाना

वाक्य—उसका मनमाना आचरण उचित नहीं।

तेज	वी	तेजस्वी

वाक्य— यह तेजस्वी बालक कौन है ?

	वान	तेजवान

वाक्य— आज तेजवान सूर्य चमक रहा है ।

	ई	तेजी

वाक्य— उसकी तेजी तो देखो ।

गुरु	अव	गौरव

वाक्य— हमारे देश का प्राचीन गौरव आज भी है।

	ता	गुरुता

वाक्य— उसे अपनी गुरुता का बोध है ।

	त्व	गुरुत्व

वाक्य— उसने गुरुत्व का कठिन भार सँभाल लिया।

धन	ई	धनी

वाक्य— वह एक धनी व्यक्ति है ।

	इक	धनिक

वाक्य— वह धनिक होते हुए भी कंजूस है।

	वान	धनवान

वाक्य— धनवान को दयालु होना चाहिए ।

पाठ-23 विराम चिह्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ग), (v) (ख)।

रिक्तस्थानों की पूर्ति

(अ) दो, (ब) पूर्ण विराम, (स) उद्धरण, (द) हंसपद।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

2. (क) सोचता था कि कैसे ऊँचे विचार है, कैसा पवित्र भाव है, उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे कि इसके बिना मैं रह न सकूँगा।

(ख) इब्राहिम बोला— तोबा और शर्म; आप क्या कहते हैं अफगान शाह?

3. (i) वह वीर, परिश्रमी और ईमानदार है।

(ii) तुमने क्या कहा?

(iii) हाय! अनर्थ हो गया।

4. (क) मेरी तबीयत ही लोहे की है, जो मैं बीमार नहीं पड़ता; वरना कोई भी इस तरह बारिश, ठंडी धूप में खड़ा रहे तो जरूर बीमार पड़ जाएगा या नहीं, कितने दिन बीत गए, कितनी रातें, लेकिन मैं बराबर इसी तरह खड़ा हूँ, लंबी-ठंडी साँस छोड़कर— छे चुंगी की यह नौकरी भी कोई नौकरी है।

(ख) तुम खड़े थे इसलिए मैं कुछ सँभल गया। हाँ, तुमने मुझे ऊपर का ऊपर झेल लिया वह अच्छा हुआ, चाहे तुम खुद काफी जख्मी हो गए, बाद में मेरा गरूर भी झड़ गया और अपनी दोस्ती हो गई ।

पाठ-24 मुहावरे

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (ख), (iii) (घ), (iv) (ग), (v) (ख)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) दिल टूट, (ii) ईद का चाँद, (iii) जड़ें हिला, (iv) होश उड़।

सुमेलन

3. (1) ङ, (2) ग, (3) क, (4) ख, (5) घ

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. (क) भाग जाना (नौ दो ग्यारह होना)- पुलिस को देखकर अपराधी नौ दो ग्यारह हो गया ।

(ख) हार जाना (मात खाना)- तुम एक बच्चे से वाद-विवाद में मात खा गए।

(ग) हड़कंप मचना (भूचाल आना)- श्यामबाबू के घर डाकुओं के आने की बात सुनकर गाँव भर में भूचाल आ गया ।

(घ) अत्यंत क्रोध होना (आँखों में चिनगारियाँ सुलगना)- अपने पुत्र की करतूत देखकर हरिबाबू की आँखों में चिनगारियाँ सुलगने लगीं।

(ङ) क्रोध गायब होना (गुस्सा हवा होना)- बच्चे की भोली सूरत देखकर उसका गुस्सा हवा हो गया ।

2. (क) दंग रह जाना- अचंभित होना ।

वाक्य प्रयोग- बेटे की बातें सुनकर राम दंग रह गया।

(ख) दाँत पीसना- क्रोध प्रकट करना ।

वाक्य प्रयोग- दाँत क्यों पीस रहे हो, मैंने तो तुम्हारी बात मान ली ।

(ग) दिल छोटा करना- धैर्य खोना ।

वाक्य प्रयोग - दिल छोटा मत करो, आपत्तियाँ तो आती रहती हैं।

पाठ-25 लोकोक्तियाँ

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (i) (क), (ii) (ख), (iii) (क), (iv) (घ), (v) (ग)।

रिक्त स्थान पूर्ति

2. (i) न चाहने पर भी गले पड़ना।

(ii) दूर से बुरी वस्तुएँ भी अच्छी लगती हैं।

(iii) अत्यधिक कंजूसी।

(iv) पक्ष वाले द्वारा विपक्ष के साथ मिलकर नुकसान कर देना।

(v) ओछा व्यक्ति अधिक उछलकूद करता है।

लघु उत्तरात्मक एवं निबंधात्मक प्रश्न

1. (i) न चाहने पर भी गले पड़ना।

(ii) दूर से बुरी वस्तुएँ भी अच्छी लगती हैं।

(iii) अत्यधिक कंजूसी।

(iv) पक्ष वाले द्वारा विपक्ष के साथ मिलकर नुकसान कर देना।

(v) ओछा व्यक्ति अधिक उछलकूद करता है।

2. (i) गुरुजी को पूछताछ करते देख रमेश के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। सभी समझ गए कि चोर की दाढ़ी में तिनका है।

(ii) भूकंप पीड़ितों के यहाँ दो सौ शिविर लगे हैं और राहत सामग्री पचास शिविरों के लिए ही भेजी गई है । यह सहायता तो ऊँट के मुँह में जीरा साबित होगी।

(iii) जब वे तुम्हें अपना रिश्तेदार नहीं मानते तो तुम क्यों मानते हो? यह तो वही बात हुई मान न मान मैं तेरा मेहमान।

(iv) रामजीत को बिना परिश्रम के अच्छा लड़का मिल गया। उसके साथ तो ऐसा ही हुआ जैसे हरद लगे न फिटकरी रंग चोखा आ जाए।

●●

पाठ-1 पत्र लेखन

1.

ए-47, वैशाली नगर,
जयपुर
दि. 2. 8. 20....

परम आदरणीय पिताजी,
सादर चरण-स्पर्श ।
आपका पत्र मिला । पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई । मेरी पढ़ाई यहाँ ठीक प्रकार से चल रही है । घर से आते समय जो रुपये आपने दिए थे, विद्यालय की फीस एवं कुछ नई पुस्तकें लेने में खर्च हो गए हैं । कमरे का मासिक किराया देने की तिथि भी नजदीक आ गई है । अभी एक माह और घर न आ सकूँगा । इसलिए यह पत्र प्राप्त होते ही पाँच सौ रुपये भेज दें तो अति उत्तम रहेगा। मैं यहाँ आपकी इच्छा के अनुसार ही स्वास्थ्य के प्रति भी ध्यान दे रहा हूँ । पूजनीया माताजी को मेरा चरण-स्पर्श,
छोटू को प्यार ।

आपका आज्ञापालक पुत्र
अंशुल

2.

ए-1, स्टेशन रोड,
बजाज नगर,
जयपुर ।
दि. 20-12-20...

परम प्रिय विनीत,
स्नेहयुक्त आशीर्वाद ।
तुम्हारा पत्र मिला । मैं पढ़ाई में व्यस्त था, इसलिए समय पर उत्तर नहीं लिख पाया था। इसका मुझे दु:ख है । मैं यहाँ तुम्हारे और तुम्हारी पढ़ाई के बारे में ही सोचता रहता हूँ ।
तुम जिस विद्यालय में पढ़ रहे हो उसमें पुस्तकालय अत्यन्त सुन्दर है । यह तुम्हें पता ही होगा । तुम वहाँ खाली पीरियड में अवश्य ही कुछ-न-कुछ पढ़ा करो । विद्यालय के बुरे छात्रों से कोई मतलब मत रखना । मेरी पुरानी किताबों का पिताजी को पता है, उनसे निकलवा लेना । मैं जब आऊँगा तो तुम्हारे लिए कुछ अच्छी पुस्तकें लेता आऊँगा ।

तुम्हारा बड़ा भाई,
मयंक चौहान

3.

अजमेर
दिनांक 4-8-20...

प्रिय सहेली ललिता,
सप्रेम नमस्ते ।
तुम्हारा पत्र मिला था, लेकिन परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण शीघ्र उत्तर न दे पाई। सोचा था कि परीक्षाओं के बाद पत्र लिखूँगी। तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ भी समाप्त हो चुकी होंगी और परीक्षाफल भी मिल चुका होगा । तुमने पत्र में लिखा था कि तुम्हारी यहाँ की विश्व प्रसिद्ध दरगाह देखने की बड़ी इच्छा है । हम सब चाहते हैं कि आगामी ग्रीष्मावकाश तुम हमारे साथ बिताओ। तुम्हें देखे हुए बहुत दिन हो गए हैं । इस बहाने हमें कुछ दिन एक साथ रहने का अवसर भी मिल जाएगा ।
मुझे विश्वास है कि तुम मेरा अनुरोध स्वीकार करते हुए पत्रोत्तर शीघ्र दोगी ।

तुम्हारी प्रिय सखी
शशि

4.

47, अरिहंत नगर,
बीकानेर
11 सितम्बर, 20...

प्रिय मित्र सोहन,
नमस्कार ।
तुम्हारा पत्र मिला । पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम लम्बी बीमारी के बाद अभी स्वस्थ हुए हो । अपने स्वास्थ्य का बराबर ध्यान रखना।
आस्था और संस्कार चैनल पर योग एवं प्राणायाम सम्बन्धी अनेक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं । अत: उनके आधार पर तुम भी नियमित अभ्यास करते रहो, इससे तुम्हारे स्वास्थ्य में अधिक सुधार होगा एवं भविष्य में शरीर भी चुस्त रहेगा ।

घर पर सभी को प्रणाम, बच्चों को प्यार ।

तुम्हारा स्नेही,
धर्मनारायण

5. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
रा. उ. प्रा. वि., किशनगढ़ ।
मान्यवर,
सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 8 अ के सभी छात्र शैक्षिक भ्रमण पर अजमेर जाना चाहते हैं । वहाँ का भ्रमण करने पर हमें एच. एम. टी. घड़ी के कारखाने की जानकारी के साथ-साथ वहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भौगोलिक व ऐतिहासिक ज्ञान भी प्राप्त होगा।
अत: निवेदन है कि हमें इस शैक्षिक भ्रमण की अनुमति प्रदान करते हुए इतिहास के शिक्षक महोदय को मार्ग-दर्शक के रूप में भेजने की कृपा करें ।
दिनांक-12 अगस्त, 20...

आपके आज्ञाकारी शिष्य
कक्षा 8 अ के समस्त छात्र

6. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
आदर्श विद्या मंदिर, डीग ।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि मेरे बड़े भाई साँवरमल का शुभ विवाह दिनांक 24 मार्च, 20... को है । बारात डीग से भरतपुर जायेगी । मेरा बारात में सम्मिलित होना आवश्यक है। अत: श्रीमानजी से प्रार्थना है कि मुझे दिनांक 23 मार्च, 20... से 25 मार्च, 20... तक तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें ।
धन्यवाद ।
दिनांक-23 मार्च, 20...

आपका आज्ञाकारी शिष्य
भरत कुमार
कक्षा 8 स

7. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय
रा. उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पाली ।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 8 (अ) के छात्र कक्षा 8 (ब) के छात्रों के साथ एक क्रिकेट मैच खेलना चाहते हैं । इस मैत्रीपूर्ण मैच के लिए विद्यालय के खेल-मैदान का हम सब मध्यान्तर के बाद उपयोग करना चाहते हैं । अतएव आपसे प्रार्थना है कि हमें आगामी सप्ताह में दिनांक 12.11.20... को मध्यान्तर के बाद खेल-मैदान पर क्रिकेट मैच खेलने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें ।
आपकी अति कृपा होगी ।
दि. 4 नवम्बर, 20...

आपके शिष्यगण
कक्षा-8 (अ) के सभी छात्र

8. सेवा में,
श्रीमान् अध्यक्ष महोदय,
नगरपालिका, ब्यावर ।
महोदय,
निवेदन है कि हमारे मोहल्ले में सफाई व्यवस्था ठीक प्रकार से न हो पाने के कारण गन्दगी का प्रकोप दिन- प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । नालियों में कूड़े-करकट के कारण पानी सड़ने लगा है । दुर्गन्ध के कारण घरों में रहना कष्टप्रद हो गया है । जगह-जगह कूड़े-कचरे के ढेर इकट्ठे हो जाने से अनेक बीमारियाँ फैलने की आशंका बढ़ गई है, आपके सफाई कर्मचारी बार-बार शिकायत करने पर भी ध्यान देने को तैयार नहीं हैं । वे प्रतिदिन आते हैं, परन्तु सफाई किए बिना ही लौट जाते हैं ।
स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए हमें विवश होकर आपसे निवेदन करना पड़ रहा है । कृपया यथाशीघ्र यथोचित कार्यवाही कर मोहल्ले की सफाई व्यवस्था को सुधारने की कृपा करें ।
विश्वास के साथ,
दि. 11-8-20...

आपका
राजेश

9. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
गुमानपुरा, कोटा ।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी का स्थानान्तरण कोटा से जैसलमेर हो गया है । इसलिए अब आपके विद्यालय में अध्ययन कर पाना संभव नहीं हो सकेगा । जैसलमेर के विद्यालय में प्रवेश हेतु मुझे चरित्र प्रमाणपत्र की आवश्यकता है । कृपया उपलब्ध कराने की कृपा करें ।
अत: आपकी अति कृपा होगी ।

प्रार्थी
धर्मवीर शर्मा
दि. 24.11.20... कक्षा –8 अ

10. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
सिनसिनी (भरतपुर)।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा आठ (ब) का छात्र हूँ । मेरे पिताजी के पास मात्र दो बीघा खेत है और हम चार भाई-बहिन हैं । सभी अध्ययन कर रहे हैं । पिताजी की अल्प आय होने के कारण घर का खर्चा मुश्किल से चल पाता है, जिस पर चार बच्चों के शुल्क का खर्चा उठाना असम्भव है । यदि स्थिति ऐसी ही रही तो पिताजी मुझे पढ़ने से रोक सकते हैं । ऐसी हालत में श्रीमान् जी से प्रार्थना है कि यदि मेरा शुल्क माफ कर दें तो न केवल मेरी पढ़ाई अच्छी तरह चल पाएगी वरन् पिताजी को भी सहायता पहुँचेगी।
मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए अवश्य ही शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करेंगे ।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
वीरपाल
दि. 25 अगस्त, 20... कक्षा-8 (ब)

11. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदय
डी. ए. वी. माध्यमिक विद्यालय,
पुष्कर ।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं अपने मामाजी के शुभ विवाह में सम्मिलित होने के लिए जयपुर जाना चाहता हूँ । इसलिए मैं 3.8.20... से 5.8.20... तक विद्यालय आने में असमर्थ रहूँगा।
अतएव श्रीमान्जी से प्रार्थना है कि मुझे तीन दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें ।
आपकी अति कृपा होगी ।

प्रार्थी
शिव मोहन
दि. 2 अगस्त, 20... कक्षा- 8 (अ)

12. 27 ख, आवास विकास कॉलोनी,
अलवर
26 फरवरी, 20_ _
प्रिय अवधेश,
नमस्कार !
आज समाचार-पत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार पाने वाले स्काउटों में तुम्हारा नाम देखकर कितना हर्ष हुआ, शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। स्काउट कार्यक्रम में तुम्हारी रुचि प्रारम्भ से ही थी । मुझे विश्वास था कि तुम्हारी लगन और परिश्रम का सुफल तुमको अवश्य प्राप्त होगा। हमारे मित्र समुदाय को तुम पर गर्व है । मुझे विश्वास है कि स्काउटिंग जैसे पवित्र और सेवाभावी मिशन के माध्यम से तुम समाज और देश की महान सेवा करोगे। इस अवसर और उपलब्धि पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो ।
तुम्हारा मित्र,
अरुण कुमार

13. 676, आदर्श नगर, जयपुर
20 सितम्बर, 20_ _
प्रिय मित्र रवि,
सप्रेम नमस्कार ।
तुम्हारा कुशल-पत्र प्राप्त हुआ । यह जानकर

बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम छात्र-संसद के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हो । इस सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो । मेरा विचार है कि विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलाप बड़े उपयोगी हैं । प्रजातंत्रीय व्यवस्था में भावी नागरिकों को इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त होना परम आवश्यक है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपने पद की गरिमा और उसके उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक वहन करोगे और छात्र-कल्याण में अपना योगदान दोगे ।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा
मायाप्रसाद

14. हनुमान नगर, दौसा
17 फरवरी, 20...

आदरणीय बहिन प्रतिभा,

सादर नमस्कार ।

आपका प्रसन्नता प्रदान कर देने वाला पत्र प्राप्त हुआ । पी. एम. टी. परीक्षा में आपकी सफलता से सारे परिवार को अपार प्रसन्नता हुई । आपने प्रतिभा नाम सार्थक किया है । पिताजी की चिरकालीन आशा आज पूरी हो गई । वे आपको 'डॉक्टर' देखना चाहते थे। आपने दिखा दिया कि पुत्रियों का पिता होना कम सौभाग्य की बात नहीं । जब आप अपना शिक्षण पूरा करके एम. बी. बी. एस. की उपाधि से विभूषित होंगी और आपके नाम के पूर्व 'डॉक्टर' अंकित होगा तो हमारा परिवार अत्यन्त गौरवान्वित होगा । पिताजी और माँ के शुभ आशीषों के साथ आपको मेरी हार्दिक बधाई ।

समस्त मंगलकामनाओं सहित,

आपकी बहिन
नीरजा

15. 2, मोहन नगर, धौलपुर,
22 अगस्त, 20...

प्रिय मधु,

हार्दिक बधाई ।

तुम्हारा पत्र मिला, जिसके माध्यम से तुम्हारे जन्म-दिवस के आयोजन का निमंत्रण प्राप्त हुआ । ऐसे शुभ अवसर पर मुझे उपस्थित होना ही चाहिए, किन्तु मलेरिया से पीड़ित होने के कारण मैं नहीं आ सकूँगी। क्या करूँ, विवश हूँ । मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो । मेरी परम प्रिय सहेली को प्रभु दीर्घायु प्रदान करें, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है । मेरी तुच्छ भेंट को स्वीकार करके मन से मेरी उपस्थिति अंकित कर लेना ।

तुम्हारी
कौशल्या जैन

16. 6, पंचवटी, चित्तौड़गढ़
12 जुलाई, 20...

प्रिय मित्र विनोद,

हार्दिक बधाई ।

कल समाचार-पत्र में प्रादेशिक तैराकी प्रतियोगिता में तुम्हारी सफलता का समाचार पढ़कर और चित्र में तुम्हें पुरस्कार ग्रहण करते देखकर मन गद्‌गद् हो उठा । आखिर तुम्हारा श्रम और तुम्हारी लगन रंग ले ही आई । तुम प्रदेश के गौरव हो । हम सभी मित्रों के गर्व का आधार हो । इस सुअवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो ।

मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही तुम राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सफलता अंकित कराओगे। तुमको और तुम्हारे परिवार को पुनः हार्दिक बधाई । मिलने की आशा के साथ,

तुम्हारा मित्र
संजय कुमार

17. बाँदीकुई
दिनांक 10 अगस्त, 20_ _

प्रिय बन्धु महेश,

मुझे अभी समाचार प्राप्त हुआ कि तुम्हारे पूज्य पिताजी का इसी सोमवार को स्वर्गवास हो गया । वास्तव में भैया, वे मुझे इतना प्यार करते थे कि शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता । उनका मेरे प्रति कितना स्नेहपूर्ण व्यवहार था, कुछ कहा नहीं जा सकता । अन्तिम समय पर मैं उनके दर्शन नहीं कर पाया, यह मेरा दुर्भाग्य रहा । आज वे हम लोगों के बीच नहीं रहे किन्तु उनके आदर्श हमारे सम्मुख हैं । उनका ही हम लोगों को अनुसरण करना है । मैं जानता हूँ

कि तुम पर पारिवारिक उत्तरदायित्व कितना बढ़ गया है, फिर भी शान्ति के साथ कार्य करते रहना । उनकी आत्मा को पूर्ण शान्ति मिले, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

तुम्हारा मित्र
रामप्रकाश शमा

पाठ-2 निबन्ध लेखन

1. विद्यार्थी-जीवन और अनुशासन

प्रस्तावना – जिस जीवन में कोई नियम या व्यवस्था नहीं, वह मानव-जीवन नहीं पशु-जीवन ही हो सकता है । बिना किसी भय या लोभ के नियमों का पालन करना ही अनुशासन है ।

अनुशासन का महत्त्व – चाहे कोई संस्था हो या व्यावसायिक प्रतिष्ठान, चाहे परिवार हो या प्रशासन, अनुशासन के बिना किसी का भी कार्य नहीं चल सकता । सेना और पुलिस विभाग में तो अनुशासन सर्वोपरि माना जाता है । विद्यालय देश की भावी पीढ़ियों को तैयार करते हैं । विद्यार्थी-जीवन ही व्यक्ति की भावी तस्वीर प्रस्तुत करता है । आज हर क्षेत्र में देश को अनुशासित युवकों की आवश्यकता है ।

विद्यार्थी-जीवन और अनुशासन – वैसे तो जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन आवश्यक है किन्तु जीवन का जो भाग सारे जीवन का आधार है उस विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी अनुशासनहीन होते जा रहे हैं ।

अनुशासनहीनता के कारण – विद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता के पीछे मात्र छात्रों की उद्दण्डता ही कारण नहीं है । सामाजिक परिस्थितियाँ और बदलती जीवन-शैली भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं । दूरदर्शनी-संस्कृति ने छात्रों को समय से पूर्व ही युवा बनाना प्रारम्भ कर दिया है । भविष्य के लिए उपयोगी ज्ञान वर्तमान में ही परोसना शुरू कर दिया है । सारी सांस्कृतिक शालीनता उनसे छीनी जा रही है ।

आरक्षण ने भी छात्र को निराश और लक्ष्यविहीन बना डाला है । अभिभावकों की उदासीनता ने भी इस विष-बेल को बढ़ाया है । अधिकांश अभिभावक विद्यालयों में बच्चे का प्रवेश कराने के बाद उसकी सुध नहीं लेते।

निवारण के उपाय – इस स्थिति से केवल अध्यापक या प्रधानाचार्य नहीं निपट सकते । शिक्षा एक सामूहिक दायित्व है, जिसकी जिम्मेदारी पूरे समाज को उठानी चाहिए । यह भी सच है कि अनुशासन किसी पर बलपूर्वक नहीं थोपा जा सकता, इसलिए दूसरों को अनुशासित रखने के लिए स्वयं भी अनुशासित रहकर आदर्श प्रस्तुत करना होगा ।

उपसंहार – अनुशासन का दैनिक जीवन में बहुत महत्त्व है । अनुशासन का क्षेत्र भी अत्यंत व्यापक है । अनुशासन के बिना मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । अनुशासन के अभाव में शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं है ।

2. आतंकवाद की समस्या

प्रस्तावना – बमों के धमाके, गोलियों की तड़तड़ाहट, असुरक्षित जन-जीवन, असुरक्षित ध र्मस्थान, निर्दोषों का बहता लहू, निराश्रितों के बढ़ते शरणस्थल, यह तस्वीर है हमारे आधुनिक जगत् की । कोई भी, कहीं भी सुरक्षित नहीं है । समाचार-पत्र आतंकवादी कृत्यों के समाचारों से भरे रहते हैं ।

आतंकवाद क्या है ? आतंकवाद बल-प्रयोग द्वारा तथा आतंक फैलाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का बर्बर तरीका है ।

आतंकवाद का विश्वव्यापी रूप – आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है । 'अलकायदा', तालिबान, पड़ोस में फल-फूल रहे जेहादी तथा भारत एवं नेपाल में सक्रिय माओवादी और नक्सलवादी आतंकवाद के सहारे ही अपना अधिकार जमाना चाहते हैं ।

भारत में आतंकवादी गतिविधियाँ तथा दुष्परिणाम– स्वतंत्र भारत में आतंकवाद का प्रारम्भ पूर्वी सीमान्त से हुआ। नागालैण्ड, त्रिपुरा, असम आदि प्रदेशों में विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्र से आतंकवादी गतिविधियाँ काफी समय से चलती रही हैं । भारत में स्वर्गीय प्रधानमंत्री

श्रीमती इन्दिरा गाँधी व राजीव गाँधी की हत्या से लेकर, विमान अपहरण, निर्दोष लोगों की हत्याएँ, जगह-जगह धमाके, यहाँ तक कि सेना पर भी घात लगाकर हमला करना, अक्षरधाम और संसद-भवन पर हमला, आदि आतंकवाद के ही उदाहरण हैं ।

मुक्ति के उपाय – आतंकवाद के विरुद्ध संसार का हर सभ्य और समझदार देश आवाज उठा रहा है, किन्तु यह रोग बढ़ता ही जा रहा है । आतंकवादी गतिविधियों का कठोरता से सामना करके ही सफलता मिल सकती है।

उपसंहार – आज आतंकवाद को रोकने के लिए हमें अपनी सेना को नवीनतम सैन्य उपकरणों से सुसज्जित करना होगा और सारी गुप्तचर एजेन्सियों को अधिक चुस्त और सावधान बनाना होगा । तभी हम इस आतंकवाद की समस्या से छुटकारा पा सकेंगे ।

3. होली

प्रस्तावना – एक ही तरह का जीवन जीते-जीते व्यक्ति ऊब जाता है । इसके लिए समाज ने अनेक पर्वों व त्योहारों, मेलों आदि की व्यवस्था की है । हमारे देश में सभी धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं । सभी के अपने-अपने त्योहार हैं । हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों में 'होली' का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

मनाने का कारण – होली का त्योहार फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है । वसन्त ऋतु के आगमन से चारों ओर सुगन्धित वातावरण हो जाता है । खेतों में फसलें पकने के लिए तैयार हो जाती हैं । किसान फसलों को देखकर खुश हो उठता है । उसकी यही खुशी होली के त्योहार के रूप में फूट पड़ती है । यह भी कहा जाता है कि प्राचीनकाल में दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी बहिन होलिका को बुलाया था। होलिका को वरदान मिला था कि वह आग में नहीं जलेगी । वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। भगवान की कृपा से प्रह्लाद तो बच गए, परन्तु वह जल गई । इसी खुशी में प्रतिवर्ष होली वाले दिन होलिका दहन किया जाता है ।

मनाने का ढंग – होली के त्योहार की तैयारी एक माह पहले से होने लगती है । घरों व मुहल्लों में उपले-लकड़ियाँ एकत्र करके होली रखी जाती है । होली में शुभमुहूर्त में आग लगाई जाती है । क्षेत्रीय परम्पराओं के अनुसार होली का त्योहार मनाया जाता है । मथुरा में जलती होली के बीच से पण्डा निकलता है । सभी एक-दूसरे पर रंग, अबीर, गुलाल डालते हैं तथा आपस में गले मिलते हैं । बरसाने की लट्ठमार होली पूरे विश्व में प्रसिद्ध है । होली में जौ एवं गेहूँ की बालियाँ भूनकर सब एक-दूसरे को प्रेम सहित भेंट करते हैं । पुराने गिले-शिकवे भूलकर सब एक-दूसरे से गले मिलते हैं । होली को प्रीति-पर्व भी कहा जाता है। सब एक-दूसरे को रंगों से सराबोर कर देते हैं ।

अच्छाइयाँ – होली का त्योहार परस्पर प्रेम और सौहार्द्र की भावना को बढ़ाता है । होली पर अमीर-गरीब का भेद मिट जाता है । सभी में नया उत्साह, नई उमंग, नया जोश दिखाई देता है।

बुराइयाँ – होली के त्योहार के साथ कुछ बुराइयाँ भी जुड़ी हुई हैं । इस दिन कई लोग शराब, भाँग आदि का सेवन करते हैं और नशे में एक-दूसरे से झगड़ा भी कर बैठते हैं । रंग लगाने के बहाने लोग दूसरों पर कीचड़, कोलतार, तेजाब आदि भी डाल देते हैं, जिससे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है ।

उपसंहार – होली के त्योहार के साथ जुड़ी ये थोड़ी-सी बुराइयाँ यदि दूर हो जाएँ तो इससे अच्छा और कोई त्योहार नहीं है । यह मेल-मिलाप एवं आपसी भाई-चारे की भावना को विकसित करता है । आपस के भेद-भाव भुलाकर हम सबको होली का त्योहार मनाना चाहिए ।

4. यदि मैं प्रधानाचार्य होता

प्रस्तावना – विद्यालय वस्तुतः शिक्षा के केन्द्र हैं । यदि विद्यालयों में पठन-पाठन का वातावरण ठीक नहीं है तो निश्चय ही वहाँ शिक्षक पढ़ाई के कार्य को प्रभावशाली ढंग से नहीं कर पाएँगे । विद्यालयों में शिक्षण का स्तर गिर रहा है, राजनेताओं का हस्तक्षेप होने लगा है तथा अध्यापक उदासीन रहने लगे हैं ।

यदि मैं प्रधानाचार्य होता – प्रधानाचार्य का पद विद्यालय में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। प्रधानाचार्य ही शिक्षण

की योजना बनाता है । विद्यालय को सफलता के साथ संचालित करना प्रधानाचार्य का दायित्व है । यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करता । मैं अपने विद्यालय में इस प्रकार सुधार करने का प्रयास करता :

सबसे पहले मैं अनुशासन पर ध्यान देता । छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों एवं कर्मचारियों को ठीक समय पर विद्यालय आने के लिए कहता। मैं स्वयं अनुशासित रहता तथा सभी के लिए आदर्श प्रस्तुत करता । ठीक समय पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का आना-जाना मैं सुनिश्चित करता। मैं शिक्षा के स्तर में सुधार करता, विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देता तथा शिक्षकों के पढ़ने के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ मँगाता तथा उन्हें पढ़ने के लिए देता । शिक्षकों से कहता कि वे पूरी तैयारी करके ही कक्षा में पढ़ाने जाएँ । मैं स्वयं भी पढ़ाता। समय-समय पर छात्रों के अभिभावकों से भी मिलता ।

मैं विद्यालय में खेलकूद, स्काउटिंग, एन.सी. सी., रेडक्रास आदि को संचालित कराता । विद्यार्थियों को बोलने का पूरा अवसर देता । समय-समय पर महापुरुषों के जीवन पर गोष्ठियाँ करवाता । बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए मैं यथासम्भव सभी प्रयास करता ।

मैं विद्यालय की पत्रिका प्रतिवर्ष प्रकाशित करवाता, जिसमें छात्रों की स्वरचित रचनाएँ ही प्रकाशित की जातीं । मैं विद्यार्थियों में एकता, राष्ट्रप्रेम एवं सर्वधर्म समभाव की भावना का विकास करता ।

उपसंहार – विद्यालय का प्रधानाचार्य यदि शिक्षाविद् है तथा वह बालमनोविज्ञान को समझता है तो विद्यालय में शिक्षा का स्तर ऊँचा रहेगा। अच्छा प्रधानाचार्य विद्यालय को आदर्श विद्यालय बना देता है । यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो शैक्षणिक स्तर में सुधार करता तथा अपने अध्ययन, त्याग एवं कठोर परिश्रम से विद्यालय को शिक्षा का वास्तविक केन्द्र बनाने का प्रयास करता ।

5. विज्ञान के चमत्कार

प्रस्तावना – आज हमारा जीवन कितना सुखी है । हमारे कमरे जाड़े में गरम और गर्मी में ठण्डे रहते हैं। पलक झपकते ही हमें हजारों मील दूर के समाचार घर बैठे मिल जाते हैं । हमारी रातें अब दिन जैसी जगमगाती हैं । हमारे घर के भीतर ही रेडियो और टेलीविजन हमारा मन बहलाते हैं । यह सब किसकी देन है ? एकमात्र उत्तर है– विज्ञान की ।

विज्ञान और उसके चमत्कार– मनुष्य ने जब धरती पर जन्म लिया तो उसे अपने चारों ओर की प्रकृति का कोई ज्ञान न था । वह अपनी आवश्यकता के अनुसार सभी वस्तुओं का उपभोग करने लगा । धीरे-धीरे उसका ज्ञान भी बढ़ता गया । आज वह विज्ञान के बल पर सम्पूर्ण प्रकृति का स्वामी बन गया है। उसने और उसके विज्ञान ने जीवन के हर क्षेत्र में चमत्कार कर दिखाया है ।

ज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में– हमारी पुस्तकें, कापियाँ और लेखन-सामग्री मशीनों से तैयार होती हैं । आज आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा भी शिक्षा दी जा रही है ।

कृषि और उद्योग के क्षेत्र में- आजकल विज्ञान ने हमारी कृषि की उपज कई गुनी बढ़ा दी है । अच्छे बीजों, रासायनिक खादों और कृषि-यन्त्रों की सहायता से अब खेती सरल भी हो गई है और लाभदायक भी । आजकल हमारे सभी उद्योग मशीनों पर आधारित हैं । कहीं-कहीं तो सारा काम मशीनें ही करने लगी हैं, मनुष्य केवल उनके काम देखते हैं ।

समाचार एवं यातायात के क्षेत्र में– विज्ञान ने यात्रा जैसे कठिन काम को भी आसान कर दिया है । रेलगाड़ी अथवा वायुयान द्वारा लम्बी-लम्बी दूरियाँ भी थोड़ी-सी देर में तय की जा सकती हैं । दिल्ली शहर में भीड़ के बढ़ते हुए दबाव के कारण जमीन के नीचे तथा ऊपर मैट्रो ट्रेन चलाकर यातायात को सुगम बनाया गया है । टेलीफोन तथा ई-मेल द्वारा समाचार भेजना अब कितना सरल हो गया है । रेडियो अथवा दूरदर्शन के माध्यम से हम देश-विदेश के समाचार क्षण-मात्र में जान लेते हैं ।

मनोरंजन के क्षेत्र में– विज्ञान हमारा मन बहलाने में भी पीछे नहीं है । रेडियो, टेप-रिकार्डर, टेलीविजन आदि अनेक साधनों से वह हमारा मनोरंजन करता है ।

चिकित्सा के क्षेत्र में – आज रोगी के शरीर का भीतरी हाल जानने के लिए एक्स-रे से भी अच्छी मशीनें हमें प्राप्त हैं । हर बीमारी की अच्छी-से-अच्छी दवा की खोज की जा रही है । आपरेशन द्वारा शरीर के अंगों को भी बदला जा सकता है । लेज़र किरणों से बिना चीर-फाड़ के भी ऑपरेशन होने लगे हैं ।

युद्ध के क्षेत्र में– आज हम राडार की सहायता से शत्रु के हवाई आक्रमण की जानकारी पहले से कर सकते हैं । ऐसे अस्त्र भी बन गये हैं जिनसे शत्रु के लडाकू-विमान को जमीन पर बैठे हुए भी गिरा सकते हैं । निकट भविष्य में सैनिकों के स्थान पर रोबोट द्वारा युद्ध लड़े जाने की संभावना को साकार करने में वैज्ञानिक लगे हुए हैं ।

अन्य क्षेत्रों में– कैलकुलेटर गणित के कठिन से कठिन प्रश्न को एक क्षण में हल कर देता है । कम्प्यूटर तो हमारे दिमाग के समान ही सोचने, समझने और निष्कर्ष निकालने का काम करते हैं ।

उपसंहार– विज्ञान एक सेवक के समान हमारे काम करता है और हमें आराम देता है । वह हमें किसी भी ऋतु में कष्ट नहीं होने देता। किन्तु कभी-कभी युद्ध के रूप में वह विनाश भी करता है । इसलिए हमें विज्ञान का प्रयोग सोच-समझकर ही करना चाहिए ।

6. रक्षा-बन्धन

प्रस्तावना– हिन्दू-त्योहारों में दो त्योहार ऐसे हैं जो भाई-बहिन के पवित्र प्रेम पर आध ारित हैं । ये हैं- भैया-दूज तथा रक्षा-बन्धन । रक्षा-बन्धन का त्योहार श्रावण-मास की पूर्णिमा को होता है । इसलिए इसे श्रावणी-पर्व भी कहते हैं ।

यह त्योहार वर्षा ऋतु में होता है । उस समय आकाश में काली घटाएँ छाई रहती हैं । ध रती हरियाली की चादर ओढ़ लेती है । सभी छोटे-बड़े नदी-तालाब पानी से भर जाते हैं ।

इतिहास– रक्षा-बन्धन का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है । कहते हैं कि एक बार देवताओं और दैत्यों के युद्ध में देवताओं की हार होने लगी । श्रावण की पूर्णिमा के दिन इन्द्राणी ने इन्द्र के पास एक ब्राह्मण के हाथ रक्षा-सूत्र भेजा । ब्राह्मण ने मन्त्र पढ़कर वह सूत्र (धागा) इन्द्र के दाहिने हाथ की कलाई में बाँध दिया । उस रक्षा-सूत्र (राखी) के प्रभाव से देवताओं की जीत हुई, तभी से प्रतिवर्ष बहिनें भाइयों को और ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बाँधने लगे ।

हमारे इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जबकि राखी की पवित्रता की रक्षा भाइयों ने अपने जीवन का मूल्य देकर की है । विधर्मी और विदेशी लोगों ने भी राखी के महत्त्व को स्वीकार किया है । एक बार बहादुरशाह ने रानी कर्मवती के राज्य पर आक्रमण कर दिया। कर्मवती ने मुगल सम्राट हुमायूँ को राखी भेजकर युद्ध में सहायता माँगी । हुमायूँ मुसलमान था । कर्मवती के पति से उसके पिता की शत्रुता रही थी । किन्तु राखी पाते ही वह सब कुछ भूलकर सहायता देने को तैयार हो गया । दुर्भाग्य से उसे आने में देर लगी । तब तक कर्मवती की सेना हार चुकी थी और कर्मवती अपनी सखियों के साथ चिता में भस्म हो चुकी थी ।

मनाने का ढंग– रक्षा-बन्धन मुख्य रूप से ब्राह्मणों का त्योहार है । इस दिन ब्राह्मण नया यज्ञोपवीत धारण करते हैं । वे अपने यजमानों को रक्षा-सूत्र बाँधते हैं । घरों पर सेवइयाँ और चावल बनाये जाते हैं । कहीं-कहीं पकवान भी बनते हैं।

बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और मिठाई खिलाती हैं, भाई इसके बदले उन्हें उपहार देते हैं ।

महत्त्व– रक्षा-बन्धन एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है। यह भाई-बहिन के पवित्र प्रेम पर आधारित है । राखी के चार कोमल धागे प्रेम का कठोर बन्धन बन जाते हैं । राखी में प्रेम का वह अमृत भरा हुआ है जो सारे बैर-विरोधों को भुला देता है । राखी के बहाने दूर-दूर रहने वाले भाई-बहन वर्ष में एक बार मिल लेते हैं ।

वर्तमान स्थिति– अब धीरे-धीरे रक्षा-बन्ध न का वास्तविक आनन्द कम होता जा रहा है । राखियों में चमक-दमक तो पहले से बढ़ गई है । अब तो चाँदी की राखियाँ भी मिलने लगी हैं । किन्तु उनके पीछे छिपी हुई भावना समाप्त होती जा रही है । आजकल ब्राह्मण केवल दक्षिणा के लिए रक्षा-सूत्र बाँधते हैं। बहिनें भी

अब केवल डाक से राखी भेजकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेती हैं ।

उपसंहार– राखी तो वास्तव में रक्षा-सूत्र है । इसके महत्त्व को रुपये से नापना उचित नहीं । यह त्योहार हमें अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करने की शिक्षा देता है । यह बहिन और भाई को सदा के लिए प्रेम के धागे में बाँधे रखता है।

बहिन-भाई के सुपावन प्यार की पहचान
राखी। देखने में चार धागे, है बहुत बलवान
राखी ।।

7. दहेज-समस्या

प्रस्तावना– दहेज की परम्परा हमारे समाज में प्राचीनकाल से ही चली आ रही है । कन्यादान के साथ दी जाने वाली दक्षिणा के समान यह दहेज हजारों वर्षों से विवाह का अनिवार्य अंग बना हुआ है । किन्तु प्राचीन और वर्तमान दहेज के स्वरूप और आकार में बहुत अधिक अन्तर आ चुका है ।

वर्तमान स्थिति– प्राचीन समाज में दहेज नव-दम्पति को नवजीवन आरम्भ करने के उपकरण देने का और सद्भावना का चिह्न था । राजा, महाराजा और धनवान लोग धूमधाम से दहेज देते थे, परन्तु सामान्य गृहस्थी का काम तो दो-चार बर्तन या गौदान से ही चल जाता था ।

आज दहेज अपने निकृष्टतम रूप को प्राप्त कर चुका है । काले धन से सम्पन्न समाज का धनी वर्ग, अपनी लाड़ली के विवाह में धन का जो अपव्यय और प्रदर्शन करता है वह औरों के लिए होड़ का कारण बनता है । अपने परिवार के भविष्य को दाँव पर लगाकर समाज के सामान्य व्यक्ति भी इस मूर्खतापूर्ण होड़ में सम्मिलित हो जाते हैं । इसी धन-प्रदर्शन के कारण वर-पक्ष भी कन्या पक्ष के पूरे शोषण पर उतारू रहता है ।

कन्या-पक्ष की हीनता– प्राचीनकाल में कन्या को वर चुनने की स्वतन्त्रता थी किन्तु जबसे माता-पिता ने उसको किसी के गले बाँध ने का कार्य अपने हाथों में लिया, तब से कन्या अकारण ही हीनता का पात्र बन गयी है । आज तो स्थिति यह है कि बेटी वाले को बेटे वाले की उचित-अनुचित सभी बातें सहन करनी पड़ती हैं ।

इस भावना का अनुचित लाभ वर-पक्ष पूरा-पूरा उठाता है । घर में चाहे साइकिल भी न हो, परन्तु वह स्कूटर पाये बिना तोरण स्पर्श न करेंगे । बेटी का बाप होना मानो पूर्वजन्म और वर्तमान का भीषण पाप हो ।

कुपरिणाम– दहेज के दानव ने भारतीयों की मनोवृत्ति को इस हद तक दूषित किया है कि एक साधारण परिवार की कन्या और कन्या के पिता का जीना कठिन हो गया है । इस प्रथा की बलिवेदी पर न जाने कितने कन्या-कुसुम बलिदान हो चुके हैं । लाखों परिवारों के जीवन की शान्ति को नष्ट करने का अपराध इस प्रथा ने किया है ।

मुक्ति के उपाय– इस कुरीति से मुक्ति का उपाय क्या है ? इसके दो पक्ष हैं- जनता और शासन । शासन कानून बनाकर इसे समाप्त कर सकता है और कर भी रहा है । किन्तु बिना जन-सहयोग के ये कानून फलदायी नहीं हो सकते। इसलिए महिला वर्ग को और कन्याओं को स्वयं संघर्षशील बनना होगा, स्वावलम्बी बनना होगा । ऐसे वरों का तिरस्कार करना होगा, जो उन्हें केवल धन-प्राप्ति का साधन मात्र समझते हैं ।

उपसंहार – हमारी सरकार ने दहेज-विरोधी कानून बनाकर इस कुरीति के उन्मूलन की चेष्टा की है, लेकिन वर्तमान दहेज-कानून में अनेक कमियाँ हैं । इसे कठोर से कठोर बनाया जाना चाहिए । परन्तु सामाजिक चेतना के बिना केवल कानून के बल पर इस समस्या से छुटकारा नहीं पाया जा सकता ।

8. मेरा प्रिय खेल (फुटबॉल)

प्रस्तावना– खेल दो प्रकार के होते हैं - (i) स्वदेशी, जैसे- गुल्ली-डण्डा, कबड्डी और (ii) विदेशी, जैसे- वॉलीबॉल, फुटबॉल, टेनिस, क्रिकेट आदि । इन खेलों में मुझे फुटबॉल विशेष पसन्द है । यह एक सीधा-सादा और सस्ता खेल है तथा इसमें शरीर का अच्छा व्यायाम हो जाता है ।

खेल का स्वरूप– फुटबॉल का खेल एक बड़े से चौरस मैदान में खेला जाता है। इसके खिलाड़ी दो दलों में बँट जाते हैं । आमतौर पर 11-11 खिलाड़ियों की दो टोलियाँ बना ली

जाती हैं । मैदान के बीचों-बीच एक रेखा खींचकर दो भाग कर लिए जाते हैं । प्रत्येक दल को अपने सामने वाले भाग पर गोल करना होता है । एक दल (टीम) गोल करने का प्रयत्न करता है और दूसरा दल उसे रोकता है । एक खिलाड़ी गोल के निकट रहता है । उसका कार्य केवल गोल की रक्षा करना होता है, इसे गोल-रक्षक या गोल-कीपर कहते हैं । गोल के अन्य खिलाड़ी अपने-अपने स्थान से गेंद को अन्दर आने से रोकते हैं और दूसरे उसे गोल में ले जाने का प्रयत्न करते हैं । इस खेल का निर्णायक रैफरी कहलाता है, वही खेल को आरम्भ करता है तथा वही गलती करने वाले खिलाड़ियों को टोकता व हार-जीत का निर्णय करता है । सारे कार्य उसकी सीटी के संकेत पर होते हैं ।

खेल का महत्त्व– स्वास्थ्य के लिए खेल बहुत आवश्यक है । खेलने से भोजन पचता है और भूख अच्छी लगती है । मेरी दृष्टि में फुटबॉल का खेल विशेष महत्त्वपूर्ण है । इस खेल में शरीर को अधिक चोट लगने का डर भी नहीं रहता । फुटबॉल से शरीर का अच्छा व्यायाम हो जाता है । खेल के दो दलों में से एक जीतता है और दूसरा हारता है, किन्तु इस हार-जीत से आपसी प्रेम घटने के बजाय बढ़ता है ।

उपसंहार– हम बच्चों के लिए खेलों का विशेष महत्त्व होता है । खेल हमारे बढ़ते शरीरों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं । हम लोग आपस में तथा दूसरे विद्यालयों की टीमों से मैच भी खेलते हैं । फुटबॉल के खेल में हमारा उत्साह दिन-दिन बढ़ता जा रहा है ।

9. पुस्तकालय

प्रस्तावना– पुस्तकालय (पुस्तक+आलय) शब्द का अर्थ है—पुस्तकों का घर । वह स्थान जहाँ पुस्तकों का संग्रह किया जाता है 'पुस्तकालय' कहलाता है । पुस्तकालय में अनेक विषयों की पुस्तकें विषयानुसार क्रम से लगी रहती हैं । इनमें से लोग अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार पुस्तकें पढ़कर अपना ज्ञान बढ़ाते हैं ।

पुस्तकालयों के प्रकार– पुस्तकालय मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं- (1) निजी पुस्तकालय, (2) सार्वजनिक पुस्तकालय । निजी पुस्तकालय वह होता है जो लोग अपने ही घर पर अपने लिए स्थापित करते हैं । ऐसे पुस्तकालय में केवल एक व्यक्ति या परिवार की रुचि की पुस्तकें होती हैं । सार्वजनिक पुस्तकालय आम जनता के लिए होता है । ऐसे पुस्तकालयों का संचालन तीन तरह से होता है- व्यक्तिगत स्तर पर, पंचायती स्तर पर और सरकारी स्तर पर। कुछ धनी लोग अपने ही पैसे से पुस्तकालय खुलवाकर जनता की सेवा करते हैं । ये व्यक्तिगत पुस्तकालय कहलाते हैं । मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा विद्यालयों द्वारा संचालित पुस्तकालय पंचायती होते हैं । इनके अतिरिक्त सरकार भी कुछ पुस्तकालय चलाती है ।

पुस्तकालय की उपयोगिता– पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार होते हैं, जिनके पास विद्यालय जाने के लिए समय नहीं है वे लोग पुस्तकालय की पुस्तकों से अपना ज्ञान बढ़ाते हैं ।

आज पुस्तकों के मूल्य बहुत बढ़ गए हैं । इसलिए सब लोग उन्हें नहीं खरीद सकते । किन्तु पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर तो सभी पढ़ सकते हैं । इस प्रकार निर्धन व्यक्तियों के लिए पुस्तकालय विशेष लाभदायक होते हैं।

पुस्तक पढ़ना खाली समय बिताने का एक अच्छा साधन है । जब हमारे पास कोई काम नहीं होता तो हमारा दिमाग बहुत-सी अनुचित बातें सोचने में लग जाता है । इस प्रकार पुस्तकालय हमें बुरी आदतों से बचाकर अच्छा नागरिक बनाते हैं ।

पुस्तकालय में वे ही लोग आते हैं जो ज्ञान बढ़ाना और अपने को सुधारना चाहते हैं । इस प्रकार पुस्तकालय में जाने से हमारी भले लोगों से भेंट होती है । इससे आपसी प्रेम भी बढ़ता है ।

उपसंहार– पुस्तकालय हमारे सच्चे मित्र होते हैं । वे हमें ऊबने नहीं देते । वे हमारा मनोरंजन करते तथा ज्ञान बढ़ाते हैं ।

10. यदि मैं सरपंच होता

प्रस्तावना – भारत सदा से कृषि प्रधान देश रहा है । यहाँ की 80% जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है । केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारें गाँवों के सुधार के लिए अनेक योजनाएँ बनाती हैं, पर उनकी योजनाओं का लाभ प्रत्येक गाँव में

पहुँचना कठिन होता है। गाँव-गाँव में समृद्धि लाने का कार्य ग्राम पंचायत के योग्य सरपंच द्वारा ही संभव हो पाता है ।

सरपंच बनने के बाद मेरे कार्य – यदि मुझे ग्राम पंचायत का सरपंच बनने का मौका मिलता तो गाँववालों से पूछकर व भली-भाँति समझकर उनकी हर समस्या को दूर कर गाँव को समृद्धिशाली बनाने का प्रयत्न करने के साथ-साथ मैं निम्नलिखित कार्य करता –

(i) नियमानुसार ग्राम पंचायत की मीटिंग बुलाता । ग्राम की समस्याओं पर विचार करके तथा वहाँ के स्थानीय लोगों के सहयोग से इन्हें सुलझाने की पूरी चेष्टा करता ।

पंचायत के मुख्य कार्य-गाँव की सफाई, प्रकाश व्यवस्था, शिक्षा, भूमि के मामूली झगड़े का निवारण, स्वास्थ्य की देखभाल, गाँवों के कच्चे रास्तों को पक्का करना, राहत कार्यों की देखभाल, बीज-खाद वितरण व्यवस्था, खेती के रोगों की रोकथाम, तालाबों, नलकूपों की समय-समय पर मरम्मत आदि को अपने सहयोगियों की मदद से अच्छी प्रकार करवाता ताकि गाँवों में शीघ्र परिवर्तन दिखाई देने लगता।

(ii) इन सब कार्यों को कराने हेतु पैसे की आवश्यकता होती । गाँव पंचायत की आय के साधन हैं- मवेशियों व घरों पर टैक्स, वाहनों पर टैक्स, आवासीय भूमि की बिक्री, मेला का टैक्स, चरागाह टैक्स, कृषि टैक्स, मवेशी पर लगे दण्ड द्वारा वसूला गया टैक्स । मैं इन सभी आय के साधनों को वसूल करवाने के लिए ईमानदार कर्मचारियों की नियुक्ति करता । समय-समय पर स्वयं निरीक्षण करता ताकि किसी भी स्तर पर टैक्सों की चोरी न हो । इसके लिए पंचायत की रोकड़ और रिकॉर्ड अनुभवी व शिक्षित व्यक्तियों से तैयार करवाता ।

(iii) मैं यह भी निगरानी करता कि आय से प्राप्त धन का दुरुपयोग न हो, इसको जनता की सुविधा के लिए खर्च करने दिया जाय ।

(iv) अपने प्यारे गाँववासियों को समय-समय पर यह भी बताता कि वे दहेज न लें, न दें । दहेज की बुराइयों को खूब विस्तार से समझाता। यह भी सलाह देता कि किसी मृत्यु पर व्यर्थ में पानी की तरह वे पैसा न बहाएँ बल्कि इसके धन से गाँव में अस्पताल व स्कूल खुलवाएँ ताकि कोई भी रोगी साधारण उपचार हेतु शहर की ओर न जाए तथा शिक्षा के लिए हमारे बच्चे कहीं अन्यत्र न जाएँ। कन्याओं के लिए भी कक्षा 10 तक स्कूल खुलवाने के लिए जनता का व सरकार का सहयोग लेने का भरसक प्रयत्न करता ।

उपसंहार – सरपंच गाँव का प्रमुख व्यक्ति होता है। उस पर अनेक उत्तरदायित्व होते हैं। अत: सरपंच के रूप में गाँवों का सम्पूर्ण विकास ही मेरा एकमात्र लक्ष्य रहता ।

11. मरुभूमि का जीवन-धन : जल

प्रस्तावना – जल मनुष्य के जीवन का प्रमुख साधन है, इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं हो सकती । सभी प्राकृतिक वस्तुओं में जल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । राजस्थान का अधिक भाग मरुस्थल है, जहाँ जल नाम-मात्र को भी नहीं है, इस कारण यहाँ कभी-कभी भीषण अकाल पड़ता है ।

जल-संकट के कारण – राजस्थान के पूर्वी भाग में चम्बल, दक्षिणी भाग में माही के अतिरिक्त कोई विशेष जल-स्रोत नहीं है, जो जल-आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके । पश्चिमी भाग तो पूरा रेतीले टीलों से भरा हुआ निर्जल प्रदेश है जहाँ केवल इन्दिरा गाँधी नहर ही एकमात्र आश्रय है। राजस्थान में जल-संकट के कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं–

(i) भूगर्भ के जल का तीव्र गति से दोहन हो रहा है । इससे जल-स्तर कम होता जा रहा है । (ii) पेयजल के स्रोतों का सिंचाई में उपयोग होने से जल संकट बढ़ता जा रहा है । (iii) उद्योगों में जलापूर्ति भी आम लोगों को संकट में डाल रही है । (iv) पंजाब, हरियाणा आदि पड़ोसी राज्यों का असहयोगात्मक रवैया भी जल-संकट का प्रमुख कारण है । (v) राजस्थान की प्राकृतिक संरचना ही ऐसी है कि वर्षा की कमी रहती है और यदि वर्षा हो भी जाए तो उसकी रेतीली जमीन में पानी का संग्रह नहीं हो पाता ।

निवारण हेतु उपाय – राजस्थान में जल-संकट के निवारण हेतु युद्ध स्तर पर प्रयास होने चाहिए अन्यथा यहाँ घोर संकट उपस्थित कर सकता है। कुछ प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं –

(i) भूगर्भ के जल का असीमित दोहन रोका जाना चाहिए । (ii) पेयजल के जो स्रोत हैं, उनका सिंचाई हेतु उपयोग न किया जाए । मानव की मूलभूत आवश्यकता का पहले ध्यान रखा जाए । (iii) वर्षा के जल को रोकने हेतु छोटे बाँधों का निर्माण किया जाए, ताकि वर्षा का जल जमीन में प्रवेश करे और जल-स्तर में वृद्धि हो । (iv) पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश की सरकारों से मित्रतापूर्वक व्यवहार रखकर आवश्यक मात्रा में जल प्राप्त किया जाए ।

उपसंहार – भारत में भूगर्भ जल का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है । देश के सर्वाधिक उपजाऊ प्रदेश इस संकट के शिकार हो रहे हैं, फिर राजस्थान जैसे मरुभूमि प्रधान प्रदेशों के भावी जल-संकट की कल्पना ही सिहरा देने वाली है । अत: जल प्रबन्धन हेतु शीघ्र सचेत और सक्रिय हो जाने में ही राजस्थान का कल्याण निहित है ।

12. मोबाइल और हम

मोबाइल संचार साधनों के आधुनिक सशक्त साधनों में से एक है। इसने मनुष्य के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया है। मोबाइल के द्वारा दिए गए संदेश ने क्षणभर में नोटबन्दी के संदेश को जनता के बीच प्रसारित कर दिया। इस मोबाइल नामक साधन से हमें लाभ और हानियाँ दोनों ही समान रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

मोबाइल का सदुपयोग तो सभी लोगों को समान रूप से ज्ञात है। यातायात के रूप में रेलगाड़ी कितनी देर से आ रही है, कहाँ से होकर किधर जा रही है, क्या किराया है, अपनी सीट को बुक कराना, रिजर्वेशन कराना आदि सुलभ प्रयोगों के बारे में हम सभी परिचित हैं। इसी प्रकार आज मोबाइल द्वारा अपने प्रार्थना पत्र, आवेदन, स्थानान्तरण, बिजली-पानी, गैस आदि का बिल जमा कराना सभी को ज्ञात है, परन्तु इसका जो दुरुपयोग हमारे द्वारा किया जाता है, उससे हम जानकर भी अनजान बने रहते हैं।

मोबाइल पर लोग घण्टे-घण्टे बातें करते रहते हैं, इस सबका उनके जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस दुरुपयोग को रोकने की जरूरत है। मोबाइल का लाभकारी कार्यों के लिए उपयोग होना चाहिए, न कि आचरण हीन-समाज के निर्माण की कड़ी के रूप में। हमारे समाज को, समाज के कर्णधारों को इस ओर ध्यान देने की महती आवश्यकता है।

आज मोबाइल का बहुत ही ज्यादा व्यापक प्रयोग दिखाई दे रहा है। इसके द्वारा हम इष्ट-मित्रों की फोटो खींच सकते हैं। किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी कलाओं का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों की कलाकारी का आनन्द उस समय तो लेते ही हैं परन्तु बाद में भी हम अपने साथियों को इसका आनन्द दिला सकते हैं। होली, दीपावली, दशहरा, गणतन्त्र दिवस आदि उत्सवों, त्योहारों की ज्यों-त्यों होने वाली गतिविधियों को मोबाइल में कैद किया जा सकता है तथा उसके बाद कभी भी हम स्वयं तथा अपने दूर स्थित साथियों को इसका आनन्द दिला सकते हैं। इतना ही नहीं विदेशों में रहने वाले अपने परिवारीजनों के यहाँ शादी समारोह, नृत्य, त्यौहार पर होने वाले कार्यक्रमों का ज्यों का त्यों आनन्द ले सकते हैं।

हमें ऐसा आभास ही नहीं होता कि हम यहाँ बैठे हैं या सुदूर स्थित जगह पर। परन्तु हमें मोबाइल के द्वारा होने वाले दुरुपयोग को रोकना होगा। यह तो ठीक है कि हम इष्ट मित्रों द्वारा गाए जाने वाले गीतों तथा अन्य कार्यक्रमों का आनन्द उठा लें परन्तु यह गलत है कि इसका उपयोग ब्लैकमेलिंग के लिए किया जाए।

चोरी किए जाने पर या बैंक में प्रवेश करते समय दूर गतिविधि का सम्पूर्ण दृश्य मोबाइल में कैद हो जाने से हमें चोर को ढूँढ़ने में सहायता मिल जाती है, परन्तु अश्लील फोटोग्राफी प्रेरित करती है कि हम इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगाएँ।

अत: आज के इस वैज्ञानिक युग में मोबाइल हमारे लिए वरदान है तो यह हमारे लिए अभिशाप भी हैं। हमें इस ओर ध्यान देना है कि किस-किस प्रकार से इसका दुरुपयोग हो रहा है। हमें इसे रोकना होगा।

13. क्रिकेट मैच का आँखों-देखा वर्णन

प्रस्तावना – मानव प्रारम्भ से ही खेलप्रिय रहा है । खेलों से दुहरा लाभ होता है, एक तो मनोरंजन हो जाता है और दूसरे शरीर भी स्वस्थ रहता है । खेल से आपस में प्रेम व सहयोग की भावना का विकास होता है।

मैच की तैयारी – हमारे विद्यालय की जूनियर एवं सीनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों की टीम का क्रिकेट मैच रविवार को रखा गया ताकि शिक्षण-कार्य में बाधा न पड़े । दोनों टीमें मैदान में उपस्थित हुईं । अवकाश का दिन होने पर भी मैदान के चारों ओर छात्रों की भीड़ थी । दर्शक अपनी-अपनी पसंद की टीमों का उत्साह बढ़ा रहे थे ।

मैच का प्रारम्भ और उसका परिणाम – मैदान में दोनों टीमें पंक्तिबद्ध खड़ी थीं । दो अम्पायरों ने मैदान में प्रवेश किया तथा दोनों टीमों के कप्तानों को बुलाकर सिक्का उछाला । जूनियर टीम के कप्तान ने टॉस जीता तथा सीनियर टीम से फील्डिंग करने को कहा । दर्शकों ने तालियों से खिलाड़ियों का स्वागत किया । सीनियर टीम की तेज बॉलिंग के सामने जूनियर टीम का पहला विकेट पच्चीस रन पर तथा दूसरा तीस रन पर गिर गया। इसके बाद तीसरे खिलाड़ी के रूप में खेलने आये जूनियर टीम के राहुल ने एक सौ पचास रन बनाए और वह अन्त तक आउट नहीं हुआ । इस प्रकार जूनियर टीम ने पाँच विकेट पर दो सौ सत्ताईस रन बनाए ।

सीनियर टीम दो सौ सत्ताईस रन का पीछा करते हुए एक सौ नवासी रन बनाकर ऑल आउट हो गए । जूनियर टीम के राहुल ने गेंदबाजी में भी कमाल दिखाया। राहुल ने मात्र चालीस रन देकर सीनियर टीम के छह विकेट चटका दिए ।

इस प्रकार जूनियर टीम ने मैच जीत लिया । सभी ने राहुल को बाँहों में उठा लिया । सीनियर टीम के खिलाड़ियों ने भी राहुल को बधाई दी और उससे हाथ मिलाया । दोनों टीमों के खिलाड़ियों की खेल-भावना देखते ही बनती थी ।

उपसंहार – "क्रिकेट भद्रजनों का खेल है"– यह कहावत खेल देखने पर ही मालूम होती है । खेलों से हम बहुत-कुछ सीखते हैं । सच्चा खिलाड़ी वही है जो सफलता के लिए जी-जान से कोशिश करे, परन्तु असफल होने पर निराश न हो ।

14. राजस्थान का प्रसिद्ध मेला : गणगौर

प्रस्तावना – राजस्थान लोकपरम्पराओं एवं लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखने में सदैव अग्रणी रहा है । यहाँ वर्ष-भर उत्सव व त्योहार मनाये जाते हैं । इसीलिए कहा जाता है – "म्हारो रंग रंगीलो राजस्थान" ।

राजस्थान में अनेक मेले लगते हैं । इन्हीं मेलों में 'गणगौर' के मेले का महत्त्वपूर्ण स्थान है । मेलों में दूर-दूर से लोग आते हैं, एक-दूसरे से परिचय बढ़ता है तथा आनन्द मिलता है ।

मेले की परम्परा – 'गणगौर' हमारी भारतीय संस्कृति से जुड़ी परम्परा का पर्व है । कुमारी कन्याएँ एवं विवाहिताएँ अपने सौभाग्य के लिए गौरी-पूजन करती हैं। गौरी (पार्वती) ने शिव को पति रूप में पाने के लिए व्रत रखा था । इस मेले का सूत्र इसी पौराणिक लोककथा से जुड़ता है । गौरी (पार्वती) को सौभाग्य की देवी माना जाता है । गौरी की मिट्टी की प्रतिमाएँ बनाकर घर में रखी जाती हैं तथा सोलह दिन तक उन प्रतिमाओं का पूजन किया जाता है । इन प्रतिमाओं का विसर्जन करना ही गणगौर मेले का उद्देश्य है।

मेले का स्थान और समय – गणगौर का प्रसिद्ध मेला जयपुर में लगता है । यह मेला राजस्थान का प्रसिद्ध मेला है । यह मेला प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला तीज और चौथ को जयपुर के मुख्य मार्ग त्रिपोलिया बाजार, गणगौरी बाजार और चौगान में धूमधाम से लगता है ।

मेले का दृश्य – जयपुर के गणगौर मेले को देखने के लिए देशी तथा विदेशी पर्यटक भी आते हैं । राजस्थान के विभिन्न गाँवों से आने वाले लोग रंग-बिरंगी पोशाकें पहने हुए मेले में सम्मिलित होते हैं। स्त्रियों की टोलियाँ लोकगीत गाते हुए चलती हैं । संध्या को निश्चित समय पर राजमहल के त्रिपोलिया दरवाजे से गणगौर की सवारी धूमधाम से निकलती है । सवारी में आगे-आगे हाथी, ऊँट, रथ होते हैं । इनके पीछे पुलिस एवं बैण्ड चलते हैं। गणगौर की सवारी सुन्दर ढंग से सजी पालकी में चलती है । यह जुलूस त्रिपोलिया बाजार से छोटी चौपड़ होता हुआ गणगौरी बाजार तक जाता है। यहाँ अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधन, खाने-पीने के सामान आदि रहते हैं।

मेले का समापन – हीरे-जवाहरात से

सजी-धजी गणगौर की प्रतिमा से युक्त सवारी जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है, वैसे ही मेला उखड़ता जाता है । सड़कों पर भीड़ की रेल-पेल शुरू हो जाती है । लोग अपने-अपने घरों को लौटना शुरू कर देते हैं ।

उपसंहार – मेलों के आयोजन से हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ जीवित रहती हैं । हमें अपनी संस्कृति एवं लोकपरम्पराओं की जानकारी होती है । उनके प्रति हमारे मन में आस्था जाग्रत होती है । यद्यपि आधुनिकता के प्रभाव से मेलों में कुछ बुराइयाँ भी देखने को मिलती हैं, फिर भी मेलों का आयोजन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यापारिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

पाठ-3 संवाद लेखन

1. दिल्ली में बढ़ते अपराधों के बारे में दो बुजुर्गों के बीच संवाद।

ओमप्रकाश – आपने आज खबर सुनी?
रामसिंह – हाँ, सुनी थी। पता नहीं, शहर को क्या होता जा रहा है।
ओमप्रकाश – पहला जमाना ठीक था, पर आज तो घर में भी आदमी सुरक्षित महसूस नहीं करता।
रामसिंह – ठीक कह रहे हो, भाई! परसों पड़ोस में दिन-दहाड़े ही चोरी हो गई।
ओमप्रकाश – आपके पड़ोस में तो चोरी ही हुई। हमारे यहाँ तो अपराधी चोरी करने के साथ पति-पत्नी को चाकू से घायल भी करके चले गए।
रामसिंह – कानून का कोई भय नहीं रहा।
ओमप्रकाश – आज बस में लूटमार की खबर से मैं सन्न रह गया।
रामसिंह – हाँ, इससे बुरा और क्या हो सकता है।
ओमप्रकाश – पुलिस भी लाचार होती जा रही है।
रामसिंह – सच तो यह है कि समाज में विचारों की गन्दगी बढ़ती जा रही है। इसे हम सब मिलकर ही ठीक कर सकते हैं।

2. बार-बार बिजली के जाने पर दो गृहिणियों के बीच संवाद–

रमा देवी – नमस्कार दीदी! क्या कर रही हो?
पूजा सिंह – नमस्ते! अभी-अभी कपड़े धोए हैं।
रमा देवी – शाम के पाँच बजे?
पूजा सिंह – हाँ, सुबह से बिजली ने परेशान कर रखा है।
रमा देवी – आप ठीक कह रही हैं। हमारे यहाँ भी बिजली बहुत जाती है। रात-रात भर बिजली नहीं आती है। ऊपर से इतनी गरमी उफ।
पूजा सिंह – पता नहीं सरकार क्या करती है? चुनावी वायदे कभी पूरे नहीं होते हैं।

3. पापा और बेटी के बीच संवाद–

बेटी – पापा, इस बार गरमी की छुट्टियों में हम कहाँ घूमने जाएँगे।
पापा – बेटी, इस बार हम मैसूर जाएँगे।
बेटी – वाह! खूब मजा आएगा। मैं तो वहाँ का दशहरा भी देखूँगी।
पापा – लेकिन दशहरे से पहले हम वापस आयेंगे।
बेटी – ओह! मैं तो भूल ही गई थी।
पापा – कोई बात नहीं। हम मैसूर में खूब घूमेंगे।

4. ग्राहक और दुकानदार के बीच संवाद–

ग्राहक – भाई साहब मुझे तीन किलो दाल, पाँच किलो छोले और पाँच किलो रिफाइण्ड दे दीजिए।
दुकानदार – जी ठीक है! मैं अभी पैक करवाता हूँ।

ग्राहक – भाई साहब कितना टाइम लगेगा।
दुकानदार – जी अभी पाँच मिनट में दे देता हूँ।
ग्राहक – (सामान लेते हुए) कुल कितने पैसे हुए।
दुकानदार – आपको मात्र 1240 रुपये देने हैं।
ग्राहक – यह लीजिए अपने रुपये।
दुकानदार – धन्यवाद! फिर आइयेगा।

पाठ-4 कहानी लेखन

1. शेर और चूहा

किसी वन प्रदेश में एक सिंह रहा करता था। एक दिन वह वृक्ष की छाया में सो रहा था। उस वृक्ष के नीचे ही एक चूहा बिल बनाकर रहता था। वह चूहा बिल से निकल कर सोते हुए शेर की पीठ पर चढ़कर उसके केशों को काटने लगा। जागे हुए सिंह ने चूहे को हाथ में पकड़कर कहा– ''कौन है? मेरे बालों को क्यों काट रहा है? मैं तुझे मार दूँगा।'' डरे हुए चूहे ने निवेदन किया– ''मैं तुच्छ चूहा होते हुए भी आपकी सहायता करने की प्रतिज्ञा करता हूँ।'' दयालु सिंह ने उसका उपहास करते हुए छोड़ दिया।

एक दिन सिंह वधिकों द्वारा फंदे में बाँध लिया गया। उसने जोर की गर्जना की। चूहा सिंह को आपत्ति में पड़ा हुआ जानकर वहीं आ पहुँचा। उसने उसके जाल को काट कर शेर को पाश से मुक्त कर दिया। जाल से छूटा हुआ शेर चूहे के साथ मित्रता करके स्वच्छन्द विचरण करने लगा।

2. देवता और दानव

प्राचीनकाल में देवता और दानव प्रजापति (ब्रह्मा) के पास गए और पूछा कि हम आपकी संतान हैं, हममें से बुद्धि में कौन अधिक बड़ा है?

प्रजापति ने सोचा कि दोनों में से जिसे बड़ा कहा जाएगा वह खुश तथा दूसरा नाराज हो जाएगा। बेहतर होगा कि दोनों को स्वयं अपनी बुद्धि की परीक्षा के आधार पर निर्णय करने का मौका दिया जाय।

दूसरे दिन उन्होंने देवताओं और दानवों को अपने यहाँ भोजन पर आमंत्रित किया तथा उनके भोजन के लिए लड्डू भिजवा दिए। भोजन के लिए यह शर्त रखी गई कि जो बिना कोहनी मोड़े भोजन कर लेंगे वही सबसे अधिक बुद्धिमान होंगे।

प्रजापति की बात सुनकर सभी परेशान थे। देवताओं ने एक उपाय निकाला, कमरे का दरवाजा बंद करके भोजन एक-दूसरे के मुँह में डालने लगे, सबने भोजन किया और सारा भोजन समाप्त कर लिया। दूसरी ओर दानव बहुत परेशान थे कि भोजन कैसे करें। वे लड्डुओं को हवा में उछाल-उछालकर मुँह में डालने लगे। कुछ लड्डू फूट गए, सारा कमरा गंदा हो गया। दानव चीखने-चिल्लाने लगे लेकिन भोजन नहीं कर सके।

अंत में प्रजापति ने कहा कि देवता ही दानवों से श्रेष्ठ हैं। देवताओं ने एक-दूसरे का सहयोग करके जीओ और जीने दो की भावना के साथ भोजन किया जबकि दानव झगड़ते रहे और भूखे रहे। उन्होंने सबको यह पाठ पढ़ाया कि जिसके पास बुद्धि है, बल उसी के पास होता है।

3. पन्ना धाय और बनवीर

चित्तौड़गढ़ में महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद 14-15 वर्ष के विक्रमसिंह का राजतिलक किया गया। 7-8 वर्ष के छोटे पुत्र उदयसिंह की देखभाल पन्नाधाय करती थी। उसका भी उसी उम्र का एक पुत्र था चंदन। दासीपुत्र बनवीर चित्तौड़ की गद्दी हथियाना चाहता था। उसने नवरात्र में नाच-रंग का आयोजन कराया और विशेष रूप से दोनों राजकुमारों को बुलाकर धोखे से हत्या की योजना बनाई। विक्रमसिंह धोखे में आ गया, परंतु उदयसिंह के लिए पन्ना ढाल बनी हुई थी। मगर वह उसे लेकर बाहर भी नहीं

जा सकती थी क्योंकि चारों ओर बनवीर के भेदिए मौजूद थे।

कीरत बारी नाम का व्यक्ति पन्नाधाय का भक्त था। वह महलों से जूठी पत्तलें एकत्र करता था। पन्ना ने उसे काम सौंपा कि वह अपने टोकरे में उदयसिंह को छिपाकर किले से बाहर पहुँचा दे। उधर चंदन तमाशा देखकर लौटा तो माँ ने उसे प्यार करते हुए, अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते हुए उदयसिंह के पलंग पर ही सुला दिया। थोड़ी देर बाद हत्यारा बनवीर विक्रमसिंह के खून से रंगी तलवार लेकर उदयसिंह के कक्ष में घुसा। पन्ना ने विरोध किया, परंतु उसने सोए बालक पर तलवार चला दी। पलंग पर से चीख तक नहीं उठी। माँ के दुलार में सोया हुआ चंदन फिर नहीं उठ सका। एक माँ ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बेटे का बलिदान दे दिया।

4. धनी व्यक्ति और उसका पुत्र

एक धनी व्यक्ति ने अपने आलसी, लापरवाह और कामचोर लड़के को कुछ कमाकर लाने के लिए कहा। लड़का काम करने के बजाय माँ के पास जाकर रोने लगा और माँ ने तरस खाकर उसे एक रुपया दे दिया। पिता के पूछने पर उसने एक रुपया अपनी कमाई का बताया। पिता अपने बेटे को अच्छी तरह जानता था। अपने बेटे को पाठ पढ़ाने के लिए उसने रुपया कुएँ में डालने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगली बार यही घटना दुबारा घटी। अबकी बार उसकी बहन ने तरस खाकर एक रुपया दे दिया। पिता ने रुपया कुएँ में फेंकने को कहा और लड़के ने रुपया कुएँ में डाल दिया। अगले दिन पिता ने माँ-बेटी को बाहर भेज दिया और पुत्र को कुछ कमाकर लाने को कहा। विवश होकर अंत में लड़का स्वयं परिश्रम करके एक सेठ का सामान पहुँचाकर चार आने पैसे कमाता है। इस बार पिता ने पैसे कुएँ में डालने को कहा तो लड़के ने इसका विरोध करते हुए कहा कि यह मेरी कमाई है, मैंने बड़ा कष्ट उठाकर ये पैसे कमाए हैं। जब अनुभवी पिता समझ गए कि बेटा मेहनती और समझदार हो गया है तो उन्होंने अपना सारा व्यापार लड़के को सौंप दिया।

5. गधा और गीदड़

रामू धोबी के पास एक गधा था। रामू उससे दिनभर काम करवाता और चरने के लिए रात को खुला छोड़ देता। वह मैदान में जाकर भर-पेट घास खाता और वापस घर आ जाता। गधा बहुत सीधा-सादा था। वह बहुत उदास रहता था, क्योंकि उसका कोई मित्र नहीं था। एक दिन जब वह मैदान में घास चर रहा था, तभी वहाँ एक गीदड़ आया और दोनों आपस में बातें करने लगे। गीदड़ का भी कोई मित्र नहीं था। दोनों में मित्रता हो गई। एक दिन गीदड़ बोला, ''मित्र तुम घास खाते-खाते ऊब गए होगे। चलो, तुम्हें खरबूजे खिलाता हूँ।'' गधा और गीदड़ दोनों खरबूजे के खेत में घुसकर खरबूजे खाने लगे। पेट भर जाने पर गधे ने प्रसन्न होकर ढेंचू-ढेंचू का राग अलापना शुरू कर दिया। गीदड़ ने कहा, ''अपना राग अलापना बंद करो, मालिक उठ गया, तो हम मुसीबत में पड़ जाएँगे।'' गधा न माना और रेंकता रहा। बेसुरा राग सुनकर खेत के मालिक की नींद टूट गई। वह डंडा लेकर खेत की ओर भागा। अपने खेत की दुर्दशा देखकर वह क्रोध से आग-बबूला हो उठा। उसने जमकर दोनों को पीटा। गधे के साथ मित्रता करने का फल गीदड़ को भी भोगना पड़ा।

6. सूर्य और वायु

एक दिन सूर्य और वायु में बहस हो गई। सूर्य कहने लगा कि मैं अधिक बलवान हूँ। वायु कहने लगी कि मैं अधिक बलवान हूँ। बहुत देर तक दोनों आपस में बहस करते रहे। अचानक सूर्य ने देखा कि रास्ते पर एक यात्री कंबल ओढ़े चला आ रहा है। सूर्य को एक उपाय सूझा। उसने वायु से कहा, ''जो इस यात्री के शरीर से कंबल उतरवा देगा, वही अधिक बलवान होगा।'' वायु ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली। वायु जोर-जोर से चलने लगी। यात्री ने कंबल कसकर ओढ़ लिया। वायु और जोर से चली। यात्री ने और कसकर कंबल लपेट लिया। अब वायु ने बवंडर का रूप ले लिया। यात्री एक गड्ढे में कंबल ओढ़कर छिप गया। वायु ने थककर सूर्य से कहा, ''अब तुम्हारी बारी है।'' सूर्य ने अपनी धूप तेज कर दी। यात्री ने चलना जारी रखा। सूर्य ने अपना ताप और

बढ़ाया। यात्री को पसीने आने लगे। सूर्य खूब जोर से चमका। अब यात्री गरमी सहन नहीं कर पाया। उसने कंबल उतार दिया और पेड़ की छाया में बैठ गया। सूर्य ने वायु से पूछा, ''अब बताओ, कौन अधिक बलवान है?'' वायु ने हार स्वीकार कर ली।

7. सिंह और सियार की गुफा

किसी वन में खरनखर नामक सिंह रहता था। वह दिनभर भोजन की तलाश में इधर-उधर घूमता रहा परंतु उसे थोड़ा-सा भी भोजन प्राप्त न हुआ। भूख से व्याकुल उस शेर को एक बड़ी गुफा दिखाई दी। उसने सोचा अवश्य रात को कोई जानवर यहाँ आएगा। यह सोचकर वह उस गुफा में घुस गया। इस बीच उस गुफा का स्वामी दधिपुच्छ नामक सियार आया तो उसने गुफा में घुसते हुए शेर के पैरों के निशान देखे, परंतु बाहर निकलते पैरों के निशान नहीं दिखे। सियार ने सोचा अगर शेर अंदर हुआ तो मैं अवश्य मारा जाऊँगा। अत: उसने सोचकर गुफा से दूर खड़े होकर आवाज देना शुरू किया– हे गुफा! तुम्हें याद नहीं कि मेरे तुम्हारे बीच में एक समझौता हुआ था कि शाम को मेरे लौटने पर तुम मुझे आवाज देकर बुलाओगी। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं दूसरी जगह चला जाऊँगा। शेर ने मन में सोचा कि अवश्य ही यह गुफा अपने मालिक के आने पर आवाज देती होगी, परंतु मेरे भय से इसकी आवाज रुँध गई होगी। अत: मैं ही आवाज लगा देता हूँ। ऐसा विचार करके शेर ने गर्जना की। शेर की गर्जना सुनकर जंगलवासी पक्षी-जानवर भयभीत हो गए। दधिपुच्छ सियार भी यह कहता हुआ वहाँ से भाग चला जो व्यक्ति न आए हुए दु:ख का प्रतिकार करता है वह शोभा पाता है। जो न आए हुए दु:ख का प्रतिकार नहीं करता, वह चिंताग्रस्त होता है। वहाँ वन में रहते हुए मैं बूढ़ा हो गया हूँ, परंतु कभी भी मैंने गुफा की आवाज नहीं सुनी।

पाठ-5 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बधित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरक्षित हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।

2. (i) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
(ii) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।

3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।

4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियों को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।

5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।

6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।

7. (i) 101 पर। (ii) 108 पर। (iii) 100 पर। (iv) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।

8. (i) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
(ii) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।

9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।

10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रुकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।

11. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसे जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।

12. (1) सड़क संकेतक लगाए जाएँ जिनमें गति सीमा दर्शायी गयी हो। (2) स्कूल, कालेज, अस्पताल, राजकीय कार्यालयों के पास स्पीड ब्रेकर लगे हों। (3) ट्रैफिक पुलिस द्वारा निगरानी रखी जाए। (4) नागरिकों को सड़क सुरक्षा के विषय में पूर्ण जानकारी हो। (5) राजमार्गों और एक्सप्रेस वे पर गति सीमा के लिए विशेष निर्देश हों। हाँ, सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए ऐसा करना आवश्यक है।

13. (i) बच्चों को सड़क को खेल के मैदान के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिए। (ii) बच्चों को न तो सड़क पर दौड़ना चाहिए और न ही दौड़ने की होड़ करनी चाहिए। (iii) आवश्यकता होने पर यदि सड़क पर मुड़ना हो तो मुड़ने की दिशा में अपने हाथ द्वारा संकेत करना चाहिए। (iv) साइकिल नंगे पैर अथवा चप्पल पहनकर नहीं चलानी चाहिए बल्कि अच्छे किस्म के जूते पहनकर ही साइकिल चलानी चाहिए।

14. मेरी दृष्टि में घर से विद्यालय एवं विद्यालय से घर पहुँचने के सुरक्षित रास्ते की योजना बिन्दुवार निम्नलिखित हो सकती है–
(क) सड़क पर सदैव बायीं ओर चलना चाहिए। (ख) वाहनों से सदैव एक निश्चित दूरी बनाए रखनी चाहिए। (ग) यदि पीछे से कोई वाहन आ रहा हो तो फुटपाथ पर होकर चलना चाहिए। (घ) सड़क के संकेत चिह्नों एवं संकेतों के बारे में जानकारी रखकर उनका सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए। (ङ) पैदल होने पर सड़क को जेब्रा क्रासिंग से ही पार करना चाहिए।

15. विद्यालय जाते समय और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं–
(i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू-टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।

16. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए–

1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। वाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।

17. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ-बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।

18. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना

चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।

2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।
4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

19.
- यातायात के नियम हमारी सुरक्षा के लिये हैं, इसलिये हमें हमेशा उनका पालन करना चाहिये।
- हमें यातायात बत्ती/संकेतों का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये।
- हमें हमेशा सीट बैल्ट का प्रयोग करना चाहिये।
- दो पहिया वाहन चालकों को हमेशा हैलमेट पहनना चाहिये।
- हमें हमेशा निर्धारित गति सीमा के अन्दर ही वाहन चलाने चाहिये।
- हमें लेन ड्राइविंग अपनानी चाहिये।
- सड़क पार करने के लिये पैदल चलने वाले यात्रियों को हमेशा जेब्रा क्रॉसिंग का उपयोग करना चाहिये।
- वाहन चालकों को पैदल चलने वालों को पर्याप्त स्थान देना चाहिये।
- सड़क पार करते समय हमें आने वाले वाहनों की दूरी और गति का सही-सही अनुमान करना चाहिये।
- हमें अपने वाहन पार्किंग स्थलों पर ही खड़े करने चाहिये या फिर अन्य उचित स्थान पर खड़े करने चाहिए।

20.

त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अत: गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अत: वाहन की गति नियंत्रित करें।

21. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

22. कॉलोनी के कुछ लोग जगह-जगह कचरा एवं गंदगी फैलाते रहते हैं। इससे न केवल पूरी कॉलोनी गंदी नजर आती है बल्कि अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी फैलती हैं। स्वच्छ भारत अभियान इस समय पूरे देश में चलाया जा रहा है। हम अपनी कॉलोनी के लोगों को समझायेंगे कि सभी लोग अपने घरों से निकलने वाले कूड़े-कचरे को इधर-उधर न डालकर कूड़ेदान में व एक नियत स्थान पर ही डालें जिससे पूरी कॉलोनी साफ-सुथरी नजर आये और हम स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे सकें।

23. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है। जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ

में फैलाना नहीं चाहिए, क्योंकि कल पानी नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

24. हमारा घर साफ-सुथरा रहे इस हेतु हम प्रतिदिन अपने घर की सफाई करेंगे। गंदगी का एक निश्चित स्थान पर निस्तारण करेंगे। कूड़ा-कचरा जहाँ-तहाँ कदापि विखरने नहीं देंगे। गंदगी के निदान हेतु पड़ोसियों के साथ सामंजस्य बनाकर सामुदायिक योजना बनाएँगे ताकि इसका दीर्घकालिक एवं ठोस समाधान हो सके।

25. घर में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ प्रयोग की जाती हैं। इनसे उपयोगी चीजों के प्राप्त होने के साथ-साथ कूड़ा-कचरा भी निकलता है। इस कूड़े-कचरे से सर्वप्रथम हम दैनिक जीवन हेतु उपयोगी हस्तनिर्मित वस्तुएँ बनाने का प्रयास करेंगे; जैसे—गत्ते से डस्टबीन बनाना, सब्जी के छिलकों से जैविक खाद बनाना आदि। इसके बाद बिलकुल निष्प्रयोज्य कूड़े-कचरे का समुचित निस्तारण करेंगे।

26. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जायगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।
2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

27. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।

28. जो पानी हम पीने हेतु प्रयोग करते हैं, उसके प्रयोग में निम्नलिखित सावधानी बरतनी चाहिए –

(क) यह पानी सदैव ढककर रखना चाहिए ताकि यह प्रदूषित न हो।

(ख) पानी जिस स्रोत से प्राप्त हो रहा है, उसकी नियमित साफ-सफाई और औषधीय (रासायनिक) उपचार होना चाहिए।

(ग) पानी पीने हेतु, हैण्डल वाले लोटे का इस्तेमाल करना चाहिए।

(घ) जल पात्र को छोटे बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिए।

●●